श्री श्रुतज्ञानअमीधारा सीरीभ्क । न १ ।

निश्वहित रोपिग्यायर श्री अर्माविनय गुरुभ्या नम ।



पडित उद्योतसागरजी क्त

समकितमुल

बारह व्रत की टीप.

स्पादक

पन्यासजी माहाराज श्री श्री १००८ श्री

क्षमा विजयजीगणी



प्रकाशक

शा रतनचद वरदीचदजी ने अपने

धी जैन रतन प्रिन्टींग प्रेम में छापके प्रसिद्ध किया है ।

वीर स २४६१ विक्रम स १९९२

मुल्य १।) सवा रुपैया

संपादक का निवेदन

लगभग दश वर्ष पूर्व श्री उद्योत सागरजी कृत समकित मूल बारह व्रत की टीप का गुजराती भाषांतर शा भीमसी माणेक का छपवाया हुआ वाचने में आया, उसी दिन से अगर मूल ग्रंथ हिन्दी भाषा का मिल सके तो मारवाडी श्रावकादिकके उपकारार्थ प्रकाशित करवाने की इच्छाथी, इतने में गए साल संवत १९९१ के पोष महीने में कोटके श्री संघ की विनती से वहा के उपाश्रय में उतरने का संयोग बना, वहा जो लिखित पुस्तकोंका भंडार है उसमें से दो ग्रंथ रत्नों की अकस्मात् प्राप्ति हुई, एक महा महोपाध्याय श्री विनय विजयजी कृत श्री शांतसुधारसकी शुद्ध प्रति की कि जो ग्रंथ श्री श्रुत ज्ञान अमीधारा रूप संग्रह के प्रारंभ में छपवाया गया है। और दूसरा यही ग्रंथ रत्न कि जो जैन रतन प्रिंटींग प्रेस की तरफ से प्रकाशित होता है, आशा है कि भव्य आत्मा इस ग्रंथ का पठन मनन करके अपने आत्मा को कृतार्थ करने के लिए समकितमूल बारह व्रत के धारक बनेंगे। ग्रंथ बनाने का कारण और ग्रंथ कर्ता का परिचय ग्रंथ के अंत में दी हुई प्रशस्ति पढने से ही मालूम हो जायगा।

गुरु महाराज श्री अमी विजयजी महाराज का

चरण सेवक

पन्यास क्षमाविजय गणी

मागशिर शुदि १५
संवत १९९२

भायखला
जैन उपाश्रय } बम्बई

यह पुस्तक मिलने का पता —
श्री जैन रतन प्रिन्टिंग प्रेस
नल बजार गोल देवल के नजदिक, कुभारवाडा २ गल्ली मुंबई नं ४

मुद्रक के दो शब्द

एक समय था कि, ज्ञानि पुरुष अपनी वाणी (वचनों) द्वारा शुद्ध धर्मका प्रचार कर जन कल्याण कर रहे थे। फिर अपना शुद्ध धर्मके हेतु ग्रंथो कि लिखावट की जरूरत देख कर अपने कमळोंस जनकल्यानार्थ अनेक लिख दीये, हजारो ग्रंथ आज भी ताडपत्रोंपर और अच्छे कागजोंपर लिखे हुवे जैन भंडारों में मोजुदा है,

इनमेंसे केयीक अमुल्य ग्रंथ अपने धर्मप्रेमि महात्माओं की प्रेणामे छप चुके है, और प्रेसोमें छाप रहे है, क्यों कि पुराने ग्रंथ हाथोंसे लिखे हुवे अब केयीक जगह तो संपुर्ण जीर्ण शीर्ण अवस्थामें मीलते है, ऐसे अमुल्य ग्रंथोंको छपवाने कि हाल पूर्ण जरूरत भी है, क्योंकि ज्ञानी ओंने रचे हुवे महान उपकारी उत्तम ग्रंथोंको ऐसीही हालतमें रखेंगे, तो अपने उपयागी ग्रंथके अक्षर मिलना भी भारी हो जायगा,

य अमुल्य ग्रंथ भी अपने परमपुज्य विश्वहित बोधिदायक श्री अमीविजयजी महाराजके पंडित शिष्यरत्न व्याख्याननिशारद पूज्य पन्यास प्रवर श्रीमद् क्षमाविजयजी गणिवर्य को श्री मुम्बईके कोटके उपाश्रयमें 'श्रीमद्रुपाटित उद्योत सागरजी कृत समकितमूल बारह व्रत की टीप, नामक उत्तम ग्रंथ हाथसे लिखा हुवा अचानक मिल गया तो महाराज श्रीको भी इस ग्रंथरत्नको छपवाकर प्रसिद्ध करनेकी जरूरत मालुम हुई क्यों कि हिन्दी भाषामें यह अमुल्य ग्रंथ हाल तक कहा भी छपा हुवा नही है, इसी हेतु महाराज श्री इनको अपने हाथोंसे शुद्ध अक्षरोंमें लिख अपने गुरु श्रीमद् अमीविजयजी महाराज के शुद्ध भक्ति भावसे इस ग्रंथको भी " श्री श्रुतज्ञान अमीधारा सीरीझ नम्बर ? की श्रेणिमें रख, हमारे प्रेसमें छापनेको कहा ! साथमें इस ग्रंथरत्न की हिन्दीमें आवश्यकता भी मालुम कराई तो हमने महाराज श्रीके उप देशसे यह ग्रंथ छापना प्रारंभ कर दीया, इनका प्रूफ सुधारना भी महाराज श्री अपने हाथोंसे कर जनकल्यानार्थ यह ग्रंथ, मूल हिन्दी भाषामें था वैसाही प्रसिद्ध कीया सो यह महाराज श्रीका हमारेपर कीया

हुआ उपकार का आभारी हूं महाराज श्री की प्रशंसा करना मेरे जैसे अनाथ बालककी शक्ति के बाहिर है। ——

और इन ग्रंथक प्रत २ की नकल २५० ता शा० कपुरचंदजी भीमाजी वेडावालाने अपने तर्फसे खरीद कर जो बम्बई श्री भायखलामें महाराज श्री (पुज्य पन्यासजी माहाराज श्री क्षमा विजयजी गणी) के सदुपदेशसे शा० पुनमचंद गोमाजी वेडावाला कितर्फसे कराया हुआ महा मंगलकारी उपधान तपकी आराधना की पूर्णा हुती तथा मालारोपण के शुभ महुर्त स० १९९२ गुजराती मीती मार्ग वद २ के अमालिक प्रसंगपर भेट देने को लीया है ये धर्मप्रेमि भाई भी धन्यवाद केपात्र है, किसकी प्रशंसापात्र क्या नहीं? एक कवीने कहा है कि—

अन्न दान पर दान विद्यादानमतः परम्।
अन्नेन क्षणिका तृप्ति र्यावज्जीवन्तु विद्यया॥

अन्न का दान भी उत्तम दान है परन्तु? विद्यादान उनसे भी ज्यादा उत्तम है, कारण अन्नसे क्षणिक तृप्ति होति है, तो विद्यासे जीवन पर्यन्त सतुष्टि होती है, इसी लीये ज्ञानकी जीतनी प्रशंसा करें इतनी ही थोडी है, इस वास्ते हरेक भाईको चाहिये कि यह उत्तम ग्रंथको खरीद कर अपने पास रखे, शुद्ध ज्ञानकी प्राप्ति करें।—

क्षमा याचना ग्रंथ माल के अवसर शीघ्र तैयार करने के कारण और अज्ञान या दृष्टि दोष के कारण जो अशुद्धिया रह गयी हों उनकी वाचकों से क्षमा प्रार्थना करता हूं अगर वाचक महानुभाव मेरे को रही हुइ अशुद्धियों की सूचना देंगे तो दूसरी आवृति में उनका सुधार किया जायगा।

ली० श्री संघ का आज्ञाकिंत्
शा० रत्नचंद वृद्धिचंद्रजी (वेडावाला)
संचालक—
श्री जैन रत्न प्रिन्टिंग प्रेस
ठि० कुंभारवाडा २ गली मुम्बई नं ४

धी जैन रतन प्रिन्टींग प्रेस की

बढिया छपाई.

आप को यह जानकर बड़ी खुशी होगी कि हमने अपने जैन व पोरवाल ओसवाल आदि हमारे मारवाडी भाईयों की सुविधा के लिये एक छापाखाना हाल ही में कुम्भारवाडा २ री गलीके नाके पर खोला है जिस में मशीन बिलकुल नई है नया छोटा मझला बडा सब प्रकारका अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, मराठी टाईप व सुन्दर बॉर्डर मौजुद है। हमारे यहां काम वख्त पर और सुन्दरता से छापकर दिया जाता है आपको कुछ भी छपाना हो इस प्रेसमें पधारकर ऑर्डर दीजिये।

छपाई पुस्तकका श्रृंगार है।

भाषा और भाव कितने ही सुन्दर क्यों न हों यदि पुस्तककी छपाई अच्छी न हो तो भाषा भाव बेकार हो जाता है—पढ़ना तो दूर रहा कोई उसमें नजर देखना भी पसंद नहीं करता।

जैन रतन प्रि० प्रेस—

यहांके सौम्य छापकाम [illegible] और सुन्दर कारीगरी [illegible] के लिये सुप्रसिद्ध है। [illegible] और शुद्धता देखकर सुख [illegible] है। [illegible]—

क्योंकि हमें प्राप्त है—

यह किसी दूसरे प्रेसको प्राप्त होना असंभव है। हिंदी, अंग्रेजी गुजराती और मराठी भाषाओंकी सब प्रकारकी छपाई का काम इस प्रेसमें होता है। पत्र, पुस्तक, पॅम्फलेट्, जॉब, सादा रंगीन और बहुरंग सचित्र सब प्रकारकी छपाईके लिये, यदि काम अच्छा, सस्ता और समयपर चाहते हैं तो नीचेके पतेपर पधार कर ऑर्डर दीजिये।

धी जैन रतन प्रिन्टींग प्रेस,

नळबजार, कुम्भारवाडा २ री, गल्ली मुंबई नं ४

न्यायाम्भोनिधि श्रीमद् [illegible]

श्रमणी श्रीविजय [illegible]

महाराज शिष्य [illegible]

श्रीमद् समाचिजयजी [illegible]



गणीपद वि स १९५० [illegible]

पन्यासपद वि स १९५० [illegible]

जन्म वि स १९५८

[जंबु] पंजाब

[illegible] वि स १९७२

[illegible]

न्यायविशारद शासनोद्धारक श्री अमीविजय गुरुभ्यो नमः ।

पंडित उद्योतसागरजी कृत

समकितमूल बारह व्रत की टीप.

श्रीमदर्हद्देवेभ्यो नमः ।

सदा सिद्धभगवान के चरण नमु चित्त लाय
श्रुतदेवी पुनि समरिए पूजु ताके पाय ॥ १ ॥
कहुं सुगम भाषासही बारह व्रत विस्तार
भिन्न भिन्न भेद जु करी भव्य जीव उपगार ॥ २ ॥
पंच अणुव्रत जिन मते तीन गुण व्रत जाण
शिक्षाव्रत च्यारु मिली बारह व्रत जु वखाण ॥ ३ ॥
पाय सुगुरु उपदेश सुनि धारे व्रत शुभ चाल
ज्या धीरे सुख जस संपदा होवे मंगलमाल ॥ ४ ॥
बुध उद्योत सागर गणी अपनी मति अनुसार
विधि श्रावक के व्रत तणी, टीप लिखु निरधार ॥ ५ ॥


प्रथम अत्र सम्यक्त्व स्वरूप कहे है तिहां प्रथम समकितके दोय भेद है एक व्यवहार समकित, दूजा निश्चय समकित, तिहां प्रथम सम्यक्त्व शब्दका अर्थ लिखे है "तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यक्त्वम्" तत्त्व जो यथार्थ स्वरूप विज्ञान पूर्वक श्रद्धा सो सम्यक्त्व कहीये, वे तत्त्व तीन प्रकार के है–एक देवतत्त्व, दूसरा गुरु तत्त्व, तीजा धर्म तत्त्व, ए तीनु तत्त्व की सद्दहणा जो साची प्रतीति, उस सद्दहणा के भी दोय भेद जाणणे, एक व्यवहार, दूजे निश्चय सेती । तिहां प्रथम व्यवहारे तीनु तत्त्वकी सद्दहणा लिखें है। उन में देव तो श्री अरिहंतजी, तीनु के अढारह दोष क्षय गये थके ति कुन कुन दोष सो कहे। प्रथम अज्ञानदोष, द्वितीय क्रोध दोष, तीजा मान दोष, चौथा माया दोष, पांचमा लोभ दोष छठा अविरति दोष, सातमा हास्य दोष, आठमा रति

गाय नवमा अरति दोष, दशमो भय दोष, इग्यारमो सोक दोष, बार मा दुगछा दोष तेरमा निन्दा दोष, चौदमा काम दोष, पनरमा अतराय दोष सोलमा मोह दोष, सतरमो मिथ्यात्व दोष, अढारमो निद्रा दोष, ए अढार दोष जिणकी मिटे, अरु अढार गुण प्रगटे, जिनको रत्नत्रयी ज्ञान दर्शन चारित्र क्षायिक भावे भई, जिनको अनत चतुष्टयी संपूर्ण प्रगटी, जिनमे सब प्राणी मात्र की सत्ता विघटी, जो तिन न्यारु निकायके देवताकों और चो सठ इन्द्र नरेन्द्र को पूजनीक है, अरु वे चोत्रीश अतिशय करी युक्त है पांत्रीश वाणी गुण युक्त देशना दे है, जिणके अष्ट महा प्रातीहार्य शोभा युक्त गगन विराजे है, तिणकी असी सब जगत्रयातिशय रूप, बल द्रव्य रिद्धि बुद्धि, सिद्धि, जाति कुलादि माने उत्कृष्ट है, ये सब दोष कर- ते नहि, त्यू अभिलाष पणे यथार्थ निर्दोष सकल जगत जीवको उपगारी देशना देवे, तिहा श्री अरिहतजी विचरे तिहां सवासो योजनमें ईति उ पद्रव नियत । ईति किसको कहते है ? अति वृष्टि वर्षा की होय १ अथवा वर्षाकी वृष्टि न होवे, तीसरी उदर प्रमुख जीवादिक की बहुत उत्पत्ति होय, और चौथी पतग, पखी, तोता, तीडी, प्रमुख बहुत होय । तथा प चमी ईति मरी की तिम मेनी वमनादिक विकारे करि बहुत मनुष्यादिक मरण पामे । और छठी ईति अपणे देश सबधी चक्र फोजा प्रमुख विग्रह करे, सातमा परचक्र कहीये—और देशका आया कटक, युद्ध हेतु परस्पर विग्रह उपद्रव करें, सो सातोइ ईति कहीयें । यह भगवतजीका अतिशय है । जो कृत कृत्य भए । कोई साधन की न्यूनता न रही । जाकी निर्विकारी शात मुद्रा देखते काम क्रोध लोभ मोहादिक अनादि की मिथ्या भ्रम भू लि मिटे । जो च्यारु निक्षेप सकलजीव कु हितकारी है सो च्यार निक्षेपा रोन सो कहे है; तिहा प्रथम नाम निक्षेपा श्री अरिहतजी का नाम जाण- णा, नमो अरिहताण इतना नाम मात्र अराधनमें अनतजीव मुक्ति पाए, दूसरा स्थापना निक्षेप सो जो अरिहतजी सकल दोष चिह्न रहित, निरुप म महन सुभग समचतुरस्र सस्थानीय पद्मासन वा काउसग्ग मुद्राये शो- भित जिन बिंब है, सो अरिहतजी का स्थापना निक्षेपा कहावे, वे नि कामी लोकोत्तर स्थापना रूप जिनमुद्रा देख के सेवा अर्चा करि के अन

त जीव मुक्ति पाये। तीसरा द्रव्य निक्षेपा सो जिन्हे जिनपद निकाचित किया, ते पाया नहि है, फिर आगे जिनेश्वर होयगा, ऐसा जो जीव है तिन कु द्रव्य अरिहंत कहे हैं, उन के भावि गुण कु भूत उपचार करि के वंदन नमन स्मरण पूजन स्तवन करने से भी अनेक जीव मुक्ति पाये। चौथा भाव निक्षेप सो आप जगत उद्धरण समर्थ, च्यवन जन्मादिक कल्याणक महोत्सव पूर्वक, उत्तम कुलें अवतार पाय के भोगकर्म सीम उदय अध्यापक रीते ते भोगविघन मिटाइके, लोकांतिक देव कृत सकेत अवसरे वरसी दान, सवा प्रहर लगि सदा दे करिके, संयमग्रहिके सम्यग ज्ञानक्रिया सेती त्यागे घनघातीकर्म क्षय करिके केवल ज्ञान पावे, उसि वखत चलितासन चौसठ इंद्र सपरिवार युत आय करिके अष्ट महाप्रातिहार्य युक्त समवसरण बनावे, उहा रत्नमय सिंहासन ऊपर बैठ करि, निरवद्य देशना सेती भव्य जीव कु प्रतिबोध करि, चतुर्विध संघ की थापना कर तीर्थप्रवर्तावे, सकलजीव कु देशना सेती अनुग्रह करे, ऐसे जो समोसरण में विराजमान श्री सीमंधरादि विहरमान परमेश्वर सो भाव अरिहंत, उनके चरणारविंद की सेवा सेती अनंत जीव मुक्ति पाये, ऐसे जो अरिहंत देवाधिदेव महागोप महामाहण महानिर्यामक महासार्थवाह महावैद्य इत्यादि विरुद धारी, सकल समकिती जीवके प्राणाधार, सकल मुनि मन मोहन, ऐसे जो जिनेश्वर परमेश्वर अरिहंतदेव ताकु देव करी सरदहु, उनकी सेवा करु, उनकी आज्ञा सिर पर धरु इति व्यवहार शुद्ध देव तत्त्व ॥ १ ॥ दूसरा निश्चय शुद्ध देव तत्त्व सो शुद्धात्मा स्वरूप वस्तु गते वस्तु रूप प्रतीति तत्त्व श्रद्धा प्रगटे, सो निश्चय देव तत्त्व है, एटले वरण गंध रस स्पर्श शब्द रूप क्रियादि रहित, शरीर सु भिन्न, योग सु भिन्न अतीन्द्रिय अविनाशी अनुपाधी अमधी अरोगी, अमूर्ति शुद्ध चैतन्य ज्ञान दर्शन चारित्रादि अनंतगुण भाजन सच्चिदानन्द स्वरूप ऐसा मेरा आत्मतत्त्व है इति देव तत्त्व। *अथ गुरुतत्त्व दूसरा कहे है, जो पंच सुमते सुमता, तीन गुप्ते करी गुप्ता, ममतात्मरमणे रमता पंचेन्द्रिय दमता, अनेक दुष्कर परिसह उपसर्ग सर्व क्षमा सेती खमता, अनेक स्तुति निंदा श्रवणे न त्यजे समता, ...
सेती कर्म रूपी ... अनादि परचित विभाव ...

दोष, नवमा अरति दोष, दशमो भय दोष, इग्यारमो सोक दोष, बारमा [illegible] दोष, चौदमा काम दोष, पनरमा अतराय दोष [illegible], सत्तरमो मिथ्यात्व दोष, अढारमो निद्रा दोष, ए अगार ह [illegible] प्रकार गुण प्रगटे, जिनको रत्नत्रयी ज्ञान दर्शन चारित्र, [illegible] निसको अनत चतुष्टयी सपूर्ण प्रगटी, जिनसे [illegible] विघटी, जो निन च्यारु निकायके देवताको ओर चो [illegible] पूजनीक है अरु वे चोत्रीश अतिशय करी युक्त है [illegible] पत्रीश [illegible] गुण युक्त देशना दे है, जिणके अष्ट महा प्रातीहार्य [illegible] विराजे है, जिणकी जैमी सब जगत्रयातिशय रूप, बल [illegible], रिद्धि, वृद्धि, सिद्धि, जाति कुलादि भावै उत्कृष्ट है, वें मद दोष कर में नहि, त्यू [illegible] पणे यथार्थ निर्दोष सकल जगत जीवको उपगारी देशना दे, जिहां श्री अरिहतजी विचरे तिहां सवासो योजनमें ईति उपद्रव निरंत। ईति किसको कहते है? अति वृष्टि वर्षा की होय १ अथवा वर्षाकी दृष्टि न होवे, तीसरी उदर प्रमुख जीवादिक की बहुत उत्पत्ति होय, और चौथी पतग, पखी, तोता, तीडी, प्रमुख बहुत होय। तथा पचमी ईति मरी की जिम सेती वमनादिक विकारे करि बहुत मनुष्यादिक मरण पामे। आर छठी ईति अपणे देश सबधी चक्र फोजा प्रमुख विग्रह करे, सातमा परचक्र कहीये–और देशका आया कटक, युद्ध हेतु परस्पर विग्रह उपद्रव करे, सो सातोई ईति कहीये। यह भगवतजीका अतिशय है। जो कृत कृत्य भए। कोई साधन की न्यूनता न रही। जाकी निर्विकारी शात मुद्रा देखते काम क्रोध लोभ मोहादिक अनादि की मिथ्या भ्रम भूलि मिटे। जो च्यारु निक्षेपे सकलजीव कुं हितकारी है सो चार निक्षेपा जैन सो कहे है, तिहां प्रथम नाम निक्षेपा श्री अरिहतजी का नाम जाणणा, नमो अरिहताण इतना नाम मात्र अराधनमें अनतजीव मुक्ति पाए, दूसरा स्थापना निक्षेप सो जो अरिहंतजी सकल दोष चिह्न रहित, निरुपम सहज सुभग समचतुरस्र संस्थानीय पद्मासन वा काउसग्ग मुद्राये शोभित जिन बिंब है, सो अरिहतजी का स्थापना निक्षेपा कहावै, वे निकामी लोकोत्तर स्थापना रूप जिनमुद्रा देख कै सेवा अर्चा करि कै अन

त जीव मुक्ति पाये । तीसरा द्रव्य निक्षेपा सो जिन्हे जिनपद निकाचित किया, वे पाया नहि है, किंतु आगे जिनेश्वर होयगा, ऐसा जो जीव है तिन कु द्रव्य अरिहंत कहे है उन के भावि गुण कु भूत उपचार करि के वंदन नमन स्मरण पूजन स्तवन करन से भी अनेक जीव मुक्ति पाये । चौथा भाव निक्षेप सो आप जगत उद्धरण समर्थ, च्यवन जन्मादिक कल्याणक महोत्सव पूर्वक, उत्तम कुलें अवतार पाय के सागरमें सीम उदय अन्यापक गीत ने भोगविचन खिपाइ के, लोकांतिक देव कृत संकेत अवसर वर्षी दान, गया प्रहर लगि सन्त ढ करिके, संयमग्रहिके सम्यग ज्ञानाक्रिया सेती त्यागे घनघातीकर्म क्षय करिके केवल ज्ञान पावे, उसि वखत चलितासन चौसठ इंद्र सपरिवार युत आय करिके अष्ट महाप्रातिहार्य युक्त समवसरण बनावे, उहां रत्नमय सिंहासन उपर बैठ करि, निरवद्य देशना सेती भव्य जीव कु प्रतिबोध करि, चतुर्विध संघ की थापना कर तीर्थप्रवर्तावे, सकलजीव कु देशना सेती अनुग्रह करे, ऐसे जो समोसरण में विराजमान श्री सीमंधरादि विहरमान परमेश्वर सो भाव अरिहंत, उनके चरणारविंद की सेवा सेती अनंत जीव मुक्ति पाये, एसे जो अरिहंत देवाधिदेव महागोप महामाहण महानिर्यामक महासार्थवाह महावैद्य इत्यादि विरुद धारी सकल समकिती जीवके प्राणाधार, सकल मुनि मन मोहन ऐसें जो जिनवर परमेश्वर अरिहंतदेव तीन जग का साहब, उनकी सेवा करु, उनकी आज्ञा सिर पर धरु इति व्यवहार शुद्ध देव तत्त्व ॥ १ ॥ दूसरा निश्चय शुद्ध देव तत्त्व सो शुद्धातमा स्वरूप वस्तु गते वस्तु रूप प्रतीति तत्त्व श्रद्धा धारे सो निश्चय देव तत्त्व है सकल वर्ण गंध रस स्पर्श शब्द रूप क्रियादि रहित, शरीर सु भिन्न, राग सु भिन्न अतीन्द्रिय अविनाशी अनुपाधी स्वरूपी अकेलो अमूर्ति शुद्ध चैतन्य ज्ञान दर्शन चारित्रादि अनंत गुण भाजन सच्चिदानंद स्वरूप ऐसा मेरा आत्मतत्त्व है इति देव तत्त्व ।

* अथ गुरुतत्त्व स्मरण करु हु, जो पंच सुमत सुमता, तीन गुप्ते करी गुप्ता, समतारसमग्न स्वता पंचेंद्रिय दमता, अनेक दुष्कर परिसह उपसर्ग सर्व क्षमा सेती सहता अनेक लब्धि सिद्धि प्रगटे न त्यजे समता, शुभ ध्यानाग्नि सेती कर्म रूपी काष्ट न बालता अनादि परचित विभाव परिणति वमता

बैठि कर बारह पर्षदा के बीच, श्री गणधरपन्धागी कु त्रिपदी दान पूर्वक, द्वादशागी की रचना कीनी, तिहां जथार्थ अर्थ के कर्ता श्री अरिहंत छे, अर्थानुयायी सूत्र के करता श्री गणधर, तिन कु आगम कहीये, ते आगम में गरुव्या, सकल जीव कु हितकारी, दुर्गति पडता जीवने राखे, सो धर्म, तिहां धर्म स्वरूप के दोय भेद है, एक शुद्ध व्यवहार धर्म, दूजा निश्चय धर्म, तिहा प्रथम *व्यवहारधर्म सो जिनागमोक्त शुद्ध दयास्वरूप विज्ञान पूर्वक, धर्मप्रवृत्ति करण, तिहा दयास्वरूप लिखे हे—१ द्रव्यदया, २ भावदया, ३ स्वदया, ४ परदया, ५ स्वरूपदया, ६ अनुबंधदया, ७ व्यवहार दया, ८ निश्चयदया। तिहा द्रव्यदया सो जयणापूर्वक प्रवृत्ति जीवरक्षा करणी, सो जेनमार्ग का कुलधर्म १ दूजी भवदया सो और जीव कु गुणप्रापण बुद्धि तथा दुर्गति नो पतनोद्धारण अतर अनुकंपा बुद्धि सहितोपदेशादिक सो भावदया २ तथा स्वदया सो अपना आत्मा अनादि काल मिथ्या अशुद्ध उपदेश सेती, अशुद्ध श्रद्धानपूर्वक, अशुद्ध प्रवृत्ति करि के, कषायादिक भावशस्त्र से प्रति समये, ज्ञानादिक गुणघात रूप भाव प्राण हणाइ है, ऐसा श्री जिनवचन उपयोग से बूझी करि, स्वसत्ता जो परसत्ता परिहार रूप, शुद्धोपयोगधारी, विषय कषाय से दूर रहै, शुभाशुभ उदये अव्यापक रहे, चेतना स्वरूप सन्मुख है, या कसुख दुख की प्राप्ति सो कर्मोदयक है, मन म हर्ष विषाद न वहे, प्रतिदिन कर्मबंध की चिंता रहे सा स्वदया. इहा स्वदया रुचि जीव अपनी चेतना समारणे कु जिनपूजा तीर्थयात्रा रथयात्रा प्रमुख शुभाश्रव प्रवृत्ति करि के, जिन गुण ज्ञान बहुमान पूर्वक, अपनी चेतना तत्त्वावलंबी करे, पुद्गलावलंबी मिटाव, इहा शुभाश्रव देखन में हिंसा है, पिण इण निमित्त सेती अनादि चाल मिटे, गुणी बहुमान स आत्मा गुणग्राही हुवे, अरु जब गुणग्राही भया, सो ज्ञानी होवे, त कारण सब साधक कु ए स्वरूपदया परम साधन है, साधु भि नवकल्पी विहार करे उपदेश देवे, चर्चा करे, पूजनप्रमार्जन करे, सो स्वदया की पुष्टि क वास्ते, इहा योग चपलता करते आश्रव हुए, पिण चेतना स्वरूपानुयायी रहे, जिनाज्ञा पले, कषायस्थान मन्द पडे, उन्मुकता मिटे, अज्ञानी पणा मिट, धर्मप्रवृत्ति वधे, उन के स्वदया क

नाह नहि माया नहीं ममता प्रतिदिन गुरु चरणारविंदे नमता, प्रति नरा नर तर मनमस्थान चढता, प्रतिसरो पाननगंनादि गुणपर्याय रचना, अपणी शक्ति प्रमाण नर नर तप क्रिया करता, प्रतिदिन आत्मवीर्यालाराणा ज्ञानक्रियाभ्याम मेती लब्धिप्रमुख गुण वरता, स्याद्वादप्रमाण शुद्धस्याद्वाद मती अनुसरता, सकल आमना दोष त्याग, ... विध श्री जिनाज्ञा प्रतिपालक द्विविध धर्म प्रकाशक, त्रिविध रत्नत्रयीके धारक, चतुर्विध ... पंचविध शुभभावनायुक्त, पंच महाव्रत धुरंधर धोरी, ... परम रक्षक, सप्तविध भयठाराम रहित, अष्टविध मदस्थान परि... नवविध ब्रह्मगुप्तिधारक, दशविध यतिधर्म प्रतिपालन सावधान, इग्यारे अंग बार उपांग अर्थ निरन्तर पाठ रसिक इत्यादिक उत्तरोत्तर अगणित गुण गणालंकृत गात्र परम पात्र परम उपकारी अष्टादशसहस्र शीलांगरथ धोरी नव कोटी विशुद्ध प्रत्याख्यान धारी अनियत नव कल्प विहारी, बैतालिश दोष रहित शुद्ध आहार आहारी, जा पर्यन्त कमाटी कस्या, आत्यन्त स्वर्ण की परे अधिक अधिक गुण गुणी, शत्रुमित्र समचित्त, पृथ्वीपरय सबल मती नहि अधिर चित्त, परमगुणी, परम दयाल, जगबंधव जगहित-कारी, भारंडपक्षि की परे अप्रमत्त चारी, पृथ्वी की परे सर्व सहे, मधुकरी वृत्ति में सुथानीसी, आकाश की परे निराधारी, गत प्रतिबंधी, तथा अंतर में और बाह्य में, सूते में और जागते में, तथा दिवस में वा रात्रि में, तथा एकाकी में अथवा बडी परषदा में, जिसकू एक प्रवृत्ति है, ऐसे मुनिगण भविक जीव कु संसार समुद्र तरण कु जहाज चरण जडमफरी जहाज, स्वपरोपकारी, आज के काल में भी पनरह कर्मभूमि में सब मिलि कर दोय हजार कोडि साधु रहते हैं, वा कु गुरुतत्त्व करी सरदहु, उसकी आज्ञा मानू, उसकु परम पात्र बुद्धि सु पडिलाभु, उसकी क्रिया की अनुमोदन करू, ऐसे शुद्ध साधु हमारे गुरु तत्त्व है—इति व्यवहार शुद्ध गुरु तत्त्व जाणवा, †निश्चय गुरु तत्त्व सो शुद्धात्मा विचार पूर्वक हेयोपादेय उपयोग युक्त, परिहार प्रवृत्तिवान सो निश्चय गुरु तत्त्व कहीये, तीसरो ‡धर्मतत्त्व सो कहीये अरीहंत देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरण में

ठि कर बारह पर्षदा के बीच, श्री गणधरपदधारी कु त्रिपदी दान पूर्वक, द्वा–दशांगी की रचना कीनी, तिहां जथार्थ अर्थ के कर्त्ता श्री अरिहंत छे, अर्थानुयायी सूत्र के करता श्री गणधर, तिन कु आगम कहीये, ते आगम में प्ररूप्या, सरल जीव कु हितकारी, दुर्गति पडता जीवने राखे, सो धर्म, तिहां धर्म स्वरूप के दोय भेद है, एक शुद्ध व्यवहार धर्म, दूजा निश्चय धर्म, तिहां प्रथम *व्यवहारधर्म सो जिनागमोक्त शुद्ध दयास्वरूप जिनाज्ञा पूर्वक धर्मप्रवृत्ति करण, तिहां दयास्वरूप लिखे हैं–१ द्रव्यदया, २ भावदया, ३ स्वदया, ४ परदया, ५ स्वरूपदया, ६ अनुबंधदया, ७ व्यवहार दया, ८ निश्चयदया। तिहां द्रव्यदया सो जयणापूर्वक प्रवृत्ति जीवरक्षा करणी, सो जैनमार्ग का कुलधर्म १ दूजी भावदया सो और जीव कु गुणप्रापण बुद्धि तथा दुर्गति नो पतनोद्धारण अंतर अनुकंपा बुद्धि सहितोपदेशादिक सो भावदया २ तथा स्वदया सो अपना आत्मा अनादि काल मिथ्या अशुद्ध उपदेश सती, अशुद्ध श्रद्धानपूर्वक, अशुद्ध प्रवृत्ति करि के, कषायादिक भावशस्त्र से प्रति समये, ज्ञानादिक गुणघात रूप भाव प्राण हणाइ है, ऐसा श्री जिनवचन उपगार से बूझी करि, स्वसत्ता जो परसत्ता परिहार रूप, शुद्धोपयोगधारी, विषय कषाय से दूर रहै, शुभाशुभ उदये अव्यापक रहै, चेतना स्वरूप सन्मुख है, या के सुख दुख की प्राप्ति सो कर्मोदयक है, मन में हर्ष विषाद न धरै, प्रतिदिन कर्मबंध की चिंता रहै सो स्वदया, इहां स्वदया रुचि जीव अपनी चेतना समारणे कु जिनपूजा तीर्थयात्रा रथयात्रा प्रमुख शुभाश्रव प्रवृत्ति करि है, जिन गुण ज्ञान ... प्रधर, अपनी चेतना तत्वावलंबी करै, पुद्गलावलंबी मिटावै, इहां ... थम देशना में लिख्या है, जिण इण निमित्त मेती अनादि काल मिटै, ...मान म आत्मा गुणग्राही हुवे, परू जव गुणग्राही भया, सो होत, त कारण सर साधक कु ए स्वरूपदया परम साधन है, साधु नवकल्पी विहार करै उपदेश देव, चर्चा करै, पूजनप्रमार्जन करे, सो ... दया नी पुष्टि के वास्ते, इहां योग चपलता करते आश्रव हुए, पिण चेतना स्वरूपानुयायी रहै, जिनाज्ञा पलै, कषायस्थान मंद पडै, ... मिटै, अज्ञानदशा पणा मिटै, धर्मप्रवृत्ति बधै, उन के स्वदया के निमित्त शु

भा व मावनी अपनी दशा माफक आदरे ३। तथा परदया सो छहु काय के जीवांकी रक्षा करणी, जे कारणे सब जीव जीव्या चाहे हैं, उसके श्रीमन ने अपणा जीव दुख सो डरे त्यु सर्व जीव दुख सो भय करे, एम, जाणी करी वा जीव की दया करे, सो पर दया कहिये, इहा जिहा स्वदया है तिहा परदया नियमा है, अरु जिहा परदया तिहा स्वदया की भजना है ४। तथा स्वरूपदया सो इहलोक परलोक के पुद्गल के सुख की आशा स, तथा देखादेखी करि के जीवरक्षा करे, सो स्वरूपदया कहिये, इण दया सेती तुरत पुद्गलीक फल पावे, पिण पीछे मेंडक चूर्ण पेरे ससार वधे, ऐसे इहा देखने में दया है, पिण सार सो हिंसा है ५। तथा अनुबंध दया सो आमर बहुत आडंबर करि के, मुनिवंदन कु जावे, तथा उपगार बुद्धि सेती और जीव कु आक्रोश ताडनादिक करके शिक्षा देवे मार्ग में ल्यावे, इहा देखने में हिंसा है। पिण आगे स्व पर जीव कु लाभ होय, तिन सेती अनुबंध जो फल, दया कु पावे, आचार्य प्रमुख साधु भी अपने शिष्यशिष्यणी कु सारणा वारणा चोयणा पडिचोयणादिक करे, शासन के प्रत्यनीक कु अपनी लब्धि सु शिक्षा देवे, पचेन्द्रि जीवकी भि विनाश करे, शासन थिर करे, सो अनुबंध दया कहिये ६॥ तथा व्यवहारदया सो विधिमार्गानुयायी जयणा पाले, कमवेश न करे, भूले नही, सो व्यवहार दया ७॥ निश्चयदया सो शुद्धसाध्य उपयोग में एकीक भाव, अभेदोपयोग सो स्वभाव में एकता ज्ञान सो निश्चयदया, ए दया गुणठाण चउदह, निगई उत्कृष्ट है ८। इत्यादिक अनेक प्रकार दयास्वरूप विज्ञानपूर्वक, सूत्र १ नियुक्ति २ भाष्य ३ चूर्णि ४ वृत्ति ५, ए पचागी सम्मत, प्रत्यक्षादि प्रमाण पूर्वक, नैगमादिक नय शैली पूर्वक, नामादि निक्षेप रचना पूर्वक, स्यादस्ति, नास्ति प्रमुख सप्तभगी स्वरूप यथार्थ विज्ञान पूर्वक, ज्ञान क्रिया, तथा निश्चय व्यवहार तथा द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक इत्यादि उभय भावमें यथा अवसरे अर्पितानर्पित नय निपुणता सेती मुख्य गौण भावे, उभय नय सम्मत ऐसी शुद्ध स्याद्वाद शैली विज्ञान पूर्वक श्रीसिद्धान्तोक्त दान १ शील २ तप ३ भावना ४, रूप शुभ प्रवृत्ति प्रवर्त्तन सो शुद्ध व्यवहार धर्म कहिये, दूसरा निश्चय धर्म सो आत्मा

की आतमता लखै, वस्तुस्वभाव पहिचानीये, जो आत्मा द्रव्य है, सो शुद्ध चैतन्यतारूप, असंख्यातप्रदेशी, अमूर्त्त, लोकप्रमाण, सब पुद्गल से भिन्न, अखंड अलिप्त अनंत दर्शन चारित्र सुख वीर्य अव्याबाधादि अनंतगुणमयी स्वगुणभोगी अविनाशी अनुपाधि अविकारी, ऐसा मेरा आत्म द्रव्य स्वभाव सो उपादेय है, इन से जो विलक्षण परपुद्गलादिक, सो मेरा नहि मैं उसका नहिं। पुद्गलस्वरूप यथा पुद्गल जो वर्ण गंध रस फरस रूप, तिन के पांच विकार शब्द १ रूप २ रस ३ गंध ४ स्पर्श ५। ए पांच के उत्तरभेद अनेक है, ए शब्दादि एक एक भेद वर्णादि चार भेदे रह हैं, इन लोकाकाश में जो उजाला है, तथा अंधेरा है, तथा शब्द जो उठे है, तथा सर्वरूपी वस्तु की पडछांहि है, धूप पडे है, तथा रत्नादिक की कांति पडे है, शीत पडे है, धूप पडे है, नाना प्रकार के रूप रंग संस्थान घाट नमूनो देखे जाय है। नाना प्रकार के रूप रंग संस्थान की, कुरुपाई तथा बदबोई आव है, नाना प्रकार के रसकी मजा है, तथा सर्व संसारी जीव की देह भाषा मनकी कल्पना, तथा प्राण भेद दश जो है, तथा पर्याप्ति छह भेद है, तथा हास्य रति अरति भय शोक दुगंछा, सुसनखती तथा उदासी कदाग्रह हठ लडाई कषाय क्रोधादिक चार, तथा शाता अशाता, ऊंच नीचपणो, तथा निद्रा विकथा, तथा सब पुण्य प्रकृति, सब पापप्रकृति, रींझ मोन खीज खेद तथा लेश्याछह तथा लाभ अलाभ यश अपजश, सुरखपणो चतुरता स्त्री पुरुष नपुंसक वेद काम चेष्टा गति जाति इत्यादिक आठो कर्म के विपाक है, सर्व जीव कू अनुभव सिद्ध है, और भी सूक्ष्म पुद्गल इन्द्रिय से अगोचर परमाणु आदि वे के अनेक भेद अग्रहीत छूटे पुद्गल है, ए पुद्गल के संयोग सेती च्यारु गति में भटके है, इन पुद्गल को सग मोह ससार है, इन के संयोग से जीव के अनंत ज्ञानदर्शन चारित्रादि अनंत गुण बिगडे, ऐसी जो पुद्गल द्रव्य की रचना है, सो मेरा स्वभाव नहीं पुद्गल मेरी जाति नहीं, पुद्गल से मेरो संबंध नहीं, पुद्गल मेरे हेय है, ये उपादेय नहिं, तथा धर्मास्ति काय द्रव्य भी जीव कू तथा पुद्गल कू गति सहाई है, तथा अधर्मास्तिकाय जीव कुं पुद्गल कू स्थिति सहाई है, तथा . द्रव्य सब का भाजन अवगाहनादार

काउ नय पुगलर काग चतना उन्उन है ए च्यार द्रव्य सेयरूप
इन से भि मग स्वरूप न्यारा है, तथा और भी ममारी जीव द्रव्य
सो भा आपनी आपनी स्वभावसत्ता वर्त्ते है, ए भी मेरे ज्ञेय हैं, ए
सत्ता में न्यारे ए मेरे नहीं, मैं उन को सगी नहीं, मेरी स्वभावसत्ता
धनी म , मेरा स्वभाव सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्रादि रूप, ए अ
स्वगा अमर अदाग्र, नेयरा गुणे, अनत, अव्याबाध, अनत दान ल
भोग उपभोग, अनतवीर्यादिक अनतगुणस्वभाव है, तिन की श्रद्धा
सन पुरुष, गुणास्वादन रूप, चिदानंदघन मेरा स्वभाव है, ऐसा मेरा
शुद्ध स्वभाव प्रगट करणे व व्यवहार नयें सत्र शुद्ध, ए व्यवहार निर्वि
भाव है, भन्य तो मेरे स्वभाव में रमणा सोई शुद्ध स्वभाव है। क्यो
तिह श्रीउत्तराध्ययन सूत्र के विषे, 'वत्थुसहावो धम्मो' इत्यादि वि
पुन रतनत्रयादि 'सो निश्चय धर्म कहिए इति धर्म तत्त्वम्।* ए तो
तत्त्वका श्रद्धान सो निश्चल परिणति रूप प्रतीत सो सम्यक्त्व कहि
युक्त सिद्धान्ते-' निम्मल पावयण ज जिणेहि पवेइय। त तहामेव
उमसद्दे मेमे अम्हे' इत्यादि, ते कारणे तत्त्वार्थ सरदहण सेती सम्य
कहिये, उन सेती विपरीत वासना, एतले तत्त्वार्थ अश्रद्धान, अप्रतीत,
तत्त्वार्थ श्रद्धान, सो मिथ्यात कहिये, उस* मिथ्यातका मूल भेद च्यार
तिहां प्रथम प्ररूपणा मिथ्यात्व, सो जिनवाणी से विपरीत प्ररूपे १। दू
प्रवचन मिथ्यात्व सो मिथ्यात्व की करणी करे २, तीजा परिणाम
स्वभाव सो मनमा में परिणाम म विपरीत कदाग्रह रहे, श्रद्धार्थ सरदह
हीं ३। चौथा प्रदेशमिथ्यात्व सो सत्तागत मिथ्यात्वमोहिनी के जो क
दल हैं, उनकु प्रदेशमिथ्यात्व कहिये, ४। वे दल विपाक में आवे, त
परिणाम मिथ्यात्व हुय, अर जबताई सत्ता में पडे रहे, तब समकित
होवे, इहा ए च्यार मिथ्यात्व के उत्तरभेद इक्वीस हैं, सो लिखे हैं-ति
प्रथम धर्म जो श्री जिणप्रणीत शुद्ध निरवद्य उनको अधर्म कहे, १
अर जो हिंसा प्रवृत्ति प्रवृत्त आश्रवमयी, अशुद्ध, अधर्म कु धर्म कहे २
तीजा मार्ग सो मवर मार्ग रूप उनकु उन्मार्ग कहे ३। चौथा उन्मार्ग
मिथ्यादि सेवन कु मार्ग कहे, ४। साधु जो सत्तावीश गुणे विराजमा

तरण तारण समर्थ, काष्ठनाव समान, उनकु असाधु कहे, सो पांचमा मिथ्यात्व। छठा जो असाधु आरंभ परिग्रह विषय कषाय भरे, लोभ मगन कुनामनादायी, लोह अथवा पाषाण नाव समान, ऐसे जो अन्यलिंगी तथा कुलिंगी उन कु सुसाधु कहे, पें यूं न विचारें, जो आप दोष भरे हैं, सो औरं कु निर्दोष करेंगे कैसे, जैसे आप दालिद्रि और कु धनपति काहासु करेंगे, ए छट्टा मिथ्यात्व। तथा जीव कु एकेंद्रियादिक कु अजीव करी मानें सो सातमा मिथ्यात्व, । आठमा अजीव सु जो काष्ट सुवर्णादि उन कु जीव करि के माने सो आठमा मिथ्यात्व। तथा नवमा मूर्त्त जो रूपी पदार्थ उन कु अरूपी कहे, जेंमे अरूपी स्पर्शवान वायु कहे, जो अरूपी है तब फरस क्यु है, ऐसा विचारे नही सो नवमा मिथ्यात्व, । दशमा अरूपी पदार्थ कु रूपी कहे, जैंमे मुक्ति में तेज का गाला मानें, वें यु विचारे, जो अरूपी चिज तो तेज क्यु निजरमें आया, यह विचार न करे, सो दशमा मिथ्यात्व। एव दश भेद है, तथा* पांच मूल भेद हैं, सो लिखें हैं, तिहां प्रथम आभिग्रहिक मिथ्यात्व, सो अपनी मति में आया सो साचा, और झूठा। ते परीक्षाकरण की चाह न धरे। शुद्ध अशुद्ध का खोजी नहीं ॥ १ ॥ दूसरा अनभिग्रहिक मिथ्यात्व सो सब ही धर्म अच्छे है सब दर्शन भले हैं। सबही कु सदोष किसि कु निर्दोष नहीं। इन्हें अमृत अर विष एक समान गिण्या ॥ २ ॥ तीजा अभिनिवेश मिथ्यात्व सो जाण करि जूठा बोलें, पहिलें आपणे अज्ञान सेती पीछे भूल पडी, विपरीत प्ररूपणा करी। तब मार्गी जीव कहे। ए तुम सिद्धान्त विरुद्ध थापो हो। तुम भूलो हो। तब उसकु हठ आवे। उन सेती कुमति कदाग्रह कुयुक्ति कर अपना वचन रखणे की अपेक्षा करे। जूठा पर्टे तो भी न मानें। ए जीव विराधक बहु भव भमें ॥ ३ ॥ तथा चोथा सशयिक मिथ्यात्व, सो जिनवाणि में संसय राखें। इन कू अपनें अज्ञान दोष में सिद्धांत के गहनार्थ में खबर न पडे। तब डगमगिता रहे ए क्यू होयगा ॥ ४ ॥ पांचमा अनाभोग मिथ्यात्व, सो अजाणपणें कछु समजे नही, अथवा एकेंद्रियादीक जीवा कू अनादि काल क्या है सो अनाभोगिक [illegible] होय ॥ १५ ॥ एव पनरे भेद। अब और

रु, अन सिवाय । लौकिक, लोकोत्तर, देव गुरु पर्व ए तीनूं प्रत्येके होय च्यार भेद ॥ १ ॥ तिहा लौकिकदेवगत सो जे देव रागद्वेषसु भरे है। स्त्रीका सन्निधान होय, मकर चिनावे । तथा क्रियादिक विलासमें मगन है । अरु जाके हथियार हाथ में धरे हैं। अपनी प्रभुतामें रूमी नाही हैं। हाथ में माला धरी है, मानदभोग पंचेंद्रियकथादिक चाहे हैं । ऐसे देव मानें पूजा, उनका कथा मार्ग यज्ञयाग अनेकजत हिंसामयी करे सो लौकिक देवगत मिथ्यात्व । इनके अनेक भेद है। सो मिथ्यात्व म ... प्रसंग ग्रंथमें देखना ॥ १ ॥ तथा लौकिकगुरुगत मिथ्यात्व, सो भी अठारह पापस्थानक में भरे है। नवविधि परिग्रहधारी गृहस्थाश्रमी, अरु गुरुनाम धरावें। सो ओर कल्पी नव नव भेष के भेष बनायें बाह्य परिग्रहत्याग करें। पै अभ्यंतर ग्रंथि छोडी नही हैं। अ ... भलि मिली नही। शुद्धसाधु की पहिचान नही । उनकू गुरुकर मानें। बहुमान करें। उनकूं अशुद्ध दान देय। उन में परमपात्र बुद्धि करे। सो गुरुगत मिथ्यात्व ॥ २ ॥ तथा लौकिक पर्वगतमिथ्यात्व, सो तीना सो इह लौकिक पुद्गलिक सुखकी चाह सेती अनेक मिथ्याज्ञान कल्पित लौकिक पर्वदिन, जो होरासो, रूयाबंधन, गणगणचौथ, नागपंचमी, सोमप्रदोष, मासव्रती, जुधाष्टमी, होली, दशराहा प्रमुख व्रतपर्व लाभदायी श्रद्धा सेती आराधे। द्रव्यव्यय करे। कुपात्रदान देय। सो लौकिक पर्वगत मिथ्यात्व ॥ ३ ॥ तथा लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व। सो जैन श्री अरिहंत धर्म ना आगार निर्दोषपरागसागर परमेश्वर परमपूज्य सकल दोषरहित, शुद्धनिरंजन ता की स्थापनामूर्ति सातिशायक प्रतिमा तिनकू इह लौकिक पुद्गलीक सुखकी चाह धरि मानें। मेरा काम होयगा तो बड़ी पूजा करूंगा, छत्रादिक चढावुंगा, टीका करूंगा, रात्रि जगावेंगा । अ ... रातजगा क मानें। सो लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व, इहां चिंतामणी के ठा ... नामें कच पाचखंड मागणा सा अयुक्त, जिसके कमाल्य की प्रतीत नही। सो भूला भटके है, पुण्योदय विना कोइ पात्रग करे नही, फोकट निरजन देव क पुद्गल काम धर मानें सा लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व ॥ ४ ॥ तथा लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व, सो जो साधुक वेषधारी निर्गुणी निन

वचन उथापक, अपनी मतिकल्पना करिकै अर्थदेशना प्ररूपे। सूत्रार्थ छिपाकै ऐसै लिंगी उत्सूत्र भाखी। तिन कूं गुरुबुद्धि करिकै बहुमान करै, तथा जो सुसाधक गुणी तपस्वी आचारी कियावत बहुत तिनकूं इहलोक की चाह धरी बहुमान करे। ऐसे गुणीकी बहुत सेवा करैंगे। तो इनकी महिरबानी सेती धन रिद्धि पावैगे। ऐसे इंद्रियसुखकी इच्छा धरि मानै सो लोकोत्तरगुरुगत मिथ्यात्व ॥ ५ ॥ तथा लोकोत्तरपर्वगत मिथ्यात्व। सो कल्याणकादि पर्वदिन पुत्रादिककी कामना करिकै आराधै। सो लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व कहीयै। एव सर्व मिथ्यात्व भेद इकवीश परिहरू। "उनमें एतला आगार। जो कुलकी परपरा चली आई हूवै, गोत्रकुलदेवतादिक की पूजा अरु दीपपूजाप्रमुख विवाहादिककरणीविषै जो करणा पडै उनकी जयणा। पै उनकु शुभकरणी न जाणु। तथा गुरुतत्त्व मै कुगुरु अन्यलिंगी ब्राह्मणादिक को लौकिक व्यवहारकै वास्तै जो विवाहादिक जोडावै परणावै उनकै अधिकारी है। परंपराकी अपनी वृत्ति लगी है। यू जाणकर आशीर्वाद देवै। तब प्रणाम करणा पडै। कछू उचित देणा पडै। तथा किसीक मिथ्यात्वी राजवर्गीया वर गये। उनकै गुर आवै तब वह उनका बहुमान प्रणाम करै तब उसकै मूलायजै सु मुजरा प्रमुख बहुमान करणा पडै। तथा जिणै नामालेखादि अक्षविद्याप्रमुख आजीवका हूनर सिखाया हूवै। वै उस्ताद ब्राह्मणादिक हूवै। उनकु बहुमान करणा पडै। भगति करणी पडै। अक्षतादि देणा पडै। उनका आगार है। उचित व्यवहार जाणी ए सर्व करू पै धर्मबुद्धि न करू। तथा मिथ्यात्वी का कोई लौकिक वार तिहिवार आवै, तब उसकै उच्छवादिकारणे कछु द्रव्यादि मांगणै आवै। मिथ्यात्वी कूप सरोवरादिक लौकिक धर्मबुद्धि माने है। सो मागणे कू आवै, तब शासनकी निंदा मिटावणे की बुद्धि धरी आपु, पै सुकृतकी बुद्धि न धरू। ओर भी कछू कुलिंगी कू कोई लज्जा दाक्षिण्य भय प्रमुख कारणे बहूमान अथवा दान करणा पडै, सो केवल लोकव्यवहार। तथा शासनहीलणा के खातर, तथा द्वेष मिटावणे की खातर लोकचाल करू। उनमें धर्मबुद्धि न धरू। वे सर्व ससार खातै। लिखू। तथा स्वलिंगी हीनाचारी केवल वेषधारी उनकू शासननिंदा

तथा उनकु सब मिटावण अणमाहि बहुमान करू । कुलपरंपरागतवृत्ति नाहिं यमत्रग्रादिक म्यु । जैनमार्ग के लिनी अन्यदर्शन में याचना न करै धर्म। एह गुण है । ए आगे गुणकर दणा । तथा हीनाचार में भी जो शुद्ध प्ररूपक है तिनके श्रावक पउणा सुगणाका उपगार है । जिनमें आप कछु सुबुद्धि आइ, भूलि मिटी, उनकु उपगारबुद्धि धरिकें वंदण नमण सन्मान मन हर्षधरि कें करू। अपनी शक्तिप्रमाणे सेवा करू । घडे उपगारी ते उपगारबुद्धि करी मानू। पे सुमारकु शुद्धगुरुतत्त्व करी सरदहु नहीं, उपगारी मानू। इसी तरै मिथ्यात्व परिहरूं समकित शुद्ध धरू, इति व्यवहार सम्यक्त्व अब निश्चय समकित लिखै है, सो जो पूर्वे निश्चै देव गुरु धर्म तत्त्व म लिखे है, ये तत्त्वकी विचारणा करते नि ष्पन्न स्वरूप संग्रह सत्ताग्राही नय देखता निश्चयदेव ए अपना आत्मा जो है । तथा निश्चय गुरु भी अपना आत्मा है। जे कारणें स्व रूपोपयोगी आत्मा शुद्ध मार्गी करै। भाव आश्रवता जावे । इस वास्ते आत्माज गुरुतत्त्व है । तथा निश्चय धर्मतत्त्व भी अपना आत्मा है। जे कारणे धर्म जो वस्तुस्वभाव मैं उनकु जोया । ए धर्मा एतलें धर्म जो तत्त्वरमणता अपणे स्वरूपमें लीनता। नयमाग जो जत्ती वस्तत तिनमें अभेदोपयोगी उनकु एती वस्तत, जैसे पुष्प कु सौकी आसक्त लीनता उपयोगी स्त्रीका हूवै उनकु शुद्धनय स्त्री ज कहे है । वास्ते स्वधर्म अभेदोपयोगी आत्माज धर्मरूप कहीये। अरु वस्तु वस्तुगतें शुद्धस्वरूप रमणता ते स्वगुण है, अरु स्वगुण सो धर्म है ते भणी धर्म भी आत्माज है एतलें शुद्ध सम्यक्त्व श्रद्धा ते देव दर्शन निश्चय मती, तथा सम्यग्शुद्धात्मविज्ञान सो निश्चयगुरु तथा तत्त्वरमणता आत्मास्वरूपे समता ते निश्चय धर्म है। जे कारणे देवदर्शन सेती अशुभ मिटै । मंगलिक हूवै । ग्रहपीडामिटै । मनोकामना सिद्ध हूवै। त्युं समकित पावे मिथ्यात्व अरु अनंतानुबंधीरूप परम अशुभ मिटै। अपुनर्बंधकरूप श्रद्धानप्राप्तिरूप मंगलिक हूवे । कुमति कदाग्रहरूप ग्रहपीडा टलै । अरु सकाम निर्जरा रूप मनकामना सिद्ध हूवै । वा कै दर्शनप्राप्ति सो देव है। तथा गुरु मिलणेमें भूलि मिटै। हित बतावै, रहस्य पावै, त्युं आत्मविज्ञान से विविध परभाव भ्रमण भूलि मिटै । तत्त्वरमणरूप परमहित

पावे। ममता सहज उदासीनता रहस्य जाणवा वास्ते ज्ञानी गुरु है। तथा धर्मके सगमेती दुरगति में पडे नहि। दिन दिन अधिक अधिक सोभाग्यवृद्धि हुवे। त्यु तत्त्वरमण धर्म सती परभावधमणरूप दुरगति में पडे नहीं। दिन दिन असंख्यगुणी निर्जरा हुवे। ते अनेकगुण प्रगटरूप सोभाग्य पावे। इसवास्ते स्वरूपोपयोग सो धर्म इति निश्चय सम्यक्त्व सपूर्णम्। ‡ हिवे समकीतकी करणी है जो सो लिखे है। नित्यप्रत्ये छती योगवाई अर छती शक्ते वाटघाट विना श्रीजिनप्रतिमा जुहार। न मिले तो पूर्वदिसि सन्मुख श्री विहरमान प्रभुरे सन्मुख उपयोग राखे चैत्यवंदन करू। रोगादिकारणे न थाय उसरा आगार है। रहसरी दश आशातना बडी है। सो न करूं। तंबोल पान फल प्रमुख नही खाउ ॥ १ ॥ पाणी नही पीवू ॥ २ ॥ सो जनन करू ॥ ३ ॥ जती प्रमुख चैत्य अदर न लनारू ॥ ४ ॥ मैथून नही सेवू ॥ ५ ॥ चैत्यमें सावु नहीं ॥ ६ ॥ थूकुं नही ॥ ७ ॥ लघुनीती न करू ॥ ८ ॥ बडी नीति न करू ॥ ९ ॥ जूवो खेलू नही ॥ १० ॥ ए दश आशातना श्री जिनमंदीरमें न करू। और भी चोरासी ८४ आशातना जो है। उसके टालनेकी जीव में चाह राखु। सो मेती चैत्यकी आशातना न लागे। मास प्रत्ये सेवप्रमुख फूल चढावू। मास प्रत्ये फलादिक जिननाके चढावू। मास प्रत्ये घृतादिक मेरसमुख चढावू। वर्षप्रत्ये अंगलूहणा पाच अथवा दश चढावू। वर्षमध्ये केशर चन्दन बरास भीमसनी प्रमुख पूजानिमित्त सभूर्नमे द्रव्यलागे जेतो खरचूं। देहरे निमित्त वर्षप्रत्ये धूप अगरबत्ती कपूर चढावू। वर्षप्रत्ये अष्टप्रकारी सत्तर प्रकारी पूजा करू करावू। वर्षप्रत्ये साधारणद्रव्य खरचू। इतनो, वर्षप्रत्ये ज्ञानहेतु द्रव्य इतनो खरचू। ज्ञानसामग्रीमें खरचू। दिनप्रत्ये नवकार वाली आत्मारे हेतु वाधी गुणवी, नगुणाय तो आगे पीछे करि गुणके पहुचावू। रोगादिकारणे न गुणाय तो तेहनी जयणा, दिणप्रत्ये छती समर्थाइये प्रभाते नवकारसी, संध्याकाले दुविहारपच्चखाण करू। वाटघाट रोगादिक कारणे न थाये उसका आगार, वर्षप्रत्ये साहमीवच्छल साधर्मी जीमावू। इण रीति सेती समकित पावू। उसके पाच अतिचार जो है सो टालू। सो लिखे है—पहिलो सका अतिचार, सो जिनवचनके गभीर गहन भाव सुणिके दिलमें शंका सन्देह धरे, ए वय होय मन म आवता नहि। मन में डिगमिगाट रहे

नियम निर्मल करी शके तो और दिन कर पहुचावू । मास नियम और मास में कर पहुचावू । वर्षना नियम और वर्ष में कर पहुचावू । ए छ छिंडी च्यार आगार दिन मास वर्षने नियमकी तरै आगे भी च्यार व्रतमें रहै, रीति एआगारगेलो माफक छिंडी आगार समजी लेणा ॥ एकही तरै है। इम पाम्र किरि नही निरवेगे । इहा सो धारणा करणी । इहा सर्वे प्रतिमा [illegible] । इम गाथा तीन सम्यक्त्वमार्गका कथन है सो जाणणा । गाथा [illegible] मह इत्या भावजीव गुणाहुणो गुरुणो । जिनपन्नत्तं तत्त इय सम्मत्त मए गहिय ॥ १ ॥

इति स्याद्वादशैलीपूर्वसम्यक्त्वपीठिका इणरीते आदरवी ।

अथ बारहव्रत लिखे है ।

प्रथम प्राणातिपातविरमण व्रत ॥१॥ द्वितीय मृषावादविरमण व्रत ॥ २ ॥ तृतीय अदत्तादानविरमण व्रत ॥ ३ ॥ चतुर्थ ब्रह्मचर्य व्रत ॥ ४ ॥ पांचमा परिग्रहविरमण व्रत ॥ ५ ॥ षष्ठ दिग्परिमाण व्रत ॥ ६ ॥ सातमा भोगोप भोगविरमण व्रत ॥ ७ ॥ अष्टम अनर्थदंडविरमण व्रत ॥८॥ नवम सामायिक व्रत ॥९॥ दशम देशावगासिक व्रत ॥१०॥ इग्यारमा पौषधोपवास रूप व्रत ॥११॥ बारमा अतिथिसंविभाग व्रत ॥ १२ ॥ ए बारहव्रतना नाम जाणवा । हवे थूलप्राणातिपात व्रतकी व्यवस्था लिखे है ।

हिव प्रथमव्रत थूलप्राणातिपात व्रत, तिसके दोय भेद है। एक द्रव्य प्राणातिपातव्रत । दुजा भावप्राणातिपात व्रत । तिहा द्रव्यप्राणातिपात सो पर जीवह आपसरीसा जाणिके जयणापाले। उनके दश द्रव्यप्राण कि रक्षा करे, उगारे। सा द्रव्यप्राणातिपात व्रत कहीये, व्यवहार दया है। तथा भावप्राणातिपात सो जो अपना जीव कर्मके वसि पड्या हुवा ऊं भव धारे है। अपना भाव प्राण जो ज्ञान दर्शनादिक उसका मिथ्यात्वकषायादिक अशुद्धप्रवर्त्तन सेती प्रतिक्षण घात हुये है, प्रतिक्षणे हणाये है। सो अपने जीव कु कर्मरिपु सेती छोडावणे की फीकर करिके तिनका उपाय जो आत्मगुणरमणता धर्म । परभावरमणता नही शुद्धोपयोग रक्त । उदये अव्यापक रहै । एकत्वभाव मगनता सो समस्त कर्मरिपु उच्छेदवा अमोघशस्त्र है । एतले सकल पर

भाव इष्टता निवारी स्वरूप सन्मुख उपयोग सो भाव प्राणातिपातव्रत कहिये। निश्चय दया पण एहिज है। इहां थूलप्राणातिपात, सो थूल कहिये, मोटा निजर आवै फिरै धिरै। ऐतलै त्रसजीव उनकू सकल्प करिकै न हणू। इहां हननक्रिया चार प्रकारकी है। एक आकुट्टीकर हणणा ॥ १ ॥ दूजी दर्पकर हणणा ॥ २ ॥ तीजी प्रमादकर हणणा ॥३॥ चौथी सकल्पकर हणणा ॥ ४ ॥ ए च्यारूका अर्थ, आकुट्टी सो जो निषेधी वस्तू उसकू उत्साह सेती करै। ज्यु आम्वा जो माराई फलका भुडथान करणा, जो हरी मोकली हुवै भी उसका भडथा कर खाणा नही। उसकी चाह धरिकै करै सो आकुट्टी दोष ॥ १ ॥ दर्प आकुट्टी उच्छुक पणा सेती उन्मत्तपणै मानगर्व धरीकै दोडकरै सो हिंसा सो दर्प्प हिंसा ज्यु गाडीघुडबहिलघोडाप्रमुख एकएकसा अभिमान धरि दोडावे, यहभी आकुट्टीदर्पहनन क्रिया दुजी ॥२ ॥ तीजी आकुट्टी प्रमाद, सो काम मार्गकै विषै तीव्र अभिलाषसे जो हिंसा करै। ज्यु कदर्प वद्धार्थकु त्रसादि जीवकी हिंसा करिकै पट्टी गोली माजुम प्रमुख बनावे, सो आकुट्टी-प्रमाद हनन क्रिया ॥ ३ ॥ चोथी कल्पहिंसा सो आपनै घर कारणै रधनादिक करै सो जाणवी। इहा श्रावककू प्रथमहिंसा तो न करणी ज, जो रत्ति करै तो भी जयणामें करै। ते माटे इहा सकल्प करी आकुट्टी तथा दर्पकरी त्रसजीव न हणू, ए चीटी जाती है इनकू मारू ऐसा सकल्प करिकै हणे उसकु कुट्टी सकल्प कहीये। ऐसा सकल्प करिकै निरपराध नि कारण न हणाउ। कारणै आरंभे रधनादि ग्रहस्थकरणीय करता तथा कारणै पुत्रादिककै शरीर जीवोत्पत्तिका औषधादिकारणै जयणा। घोडा बैल प्रमुखकु चाबकादिक मारणेका आगार, और पेटकै किरम गडोल वा पगमें नारू देश भाषाये बाला, इरम चम्मजु प्रमुख आपणै शरीरमें उपजै, तथा मित्रादिक रै और स्वजनादिक रै, शरीर-विषे उपजै, तिनकै उपचार करणै की जयणा। जे कारणै साधू कू तो सूक्ष्म बादर दोनु जीवको त्रस स्थावर दोनु भेदकै जीवनी नवकोटि विशुद्ध पचखाण सेती हिंसाका त्याग है। इस हेतु साधु कू वीशाविश्वा की दया है, अरु गृहस्थ कू सवाविश्वा री दया है। सो किम तरैसे तिसका

लिख लिये हैं। गाथा। जीवा सहुमा थूला संकल्पारंभओ तथा दुविहा, सावराह निरवराहा सापिक्खा चेव निरवेक्खा ॥ १ ॥

अथ, जगतमें जीव के दोय भेद कहे, एक थावर, दूजा त्रस, तिहां थावरमें सूक्ष्म बादर दोय भेद हैं। ते सूक्ष्मकी हिंसा नहीं है। जे माटे गांठ दुरानीत शरीरको बाह्यशस्त्र का घात लगता नहीं है। तिनकू आयुष्य पूरी करनि जीवसू घातपावे हैं। इस वास्ते इहां सूक्ष्मशब्द ग्रहण नहीं करतु भी पाणी अग्नि वायु वनस्पतिरूप बादर पांच थावर तिनकू त्रस लेणा। अरु स्थूल सो बेइंद्रि तेइन्द्री चौरिंद्री पचेंद्रीरूप ए जीवके भेद जाणो। तिनमें सर्व जीव आये। तिन सर्वकी त्रिकरण शुद्ध साधु रक्षा करे हैं। तिस वास्ते वीश विश्वाकी दया मुनिकू हैं, अरु श्रावक मती तो पांचथावरकी दया पल शके नहीं। सचित्त आहारादिकारणें अवश्य हिंसा होवे हैं। तिस वास्ते दश विश्वा गया। अरु दशविश्वा रहा। एतले दश त्रस जीवकी दया रही। सोभी दोय भेद हैं, एक संकल्प, दूजा आरंभ। तिहां आरंभ करिते त्रसजीवकी हिंसा होय जाय। सो छोडी नहीं जाय। इस वास्ते दोय हिंसामें सें एक संकल्प हिंसाका त्याग, अरू आरंभ हिंसाकी तो जयणा है। ते कारणें फिर दशमांहे सु आध गये। पांच विश्वा रहे। एतले संकल्पी त्रसजीव न हणु। उनमेंभी दोय भेद जीव हैं। एक सापराधी जीव है, दूजा निरापराधी जीव है। तिहां जो निरापराधी जो जीव है तिसकू नहीं हणुं, अरू सापराधी जीव हणनेकी तो जयणा है। जे कारणे सापराधी दया श्रावक सेती सदा सर्वथा पले नहीं। जे कारणे घरमें चोर पैठा है। आपनी चीज लेता है। सो बिना मारे कूटे छोडे नहीं, तथा और अपनी स्त्रीसें अन्यपुरूष अनाचार सेवता देखे तो उनकू तस्दी दिया बिना न छोडे। यह सापराधी कहीये। आरंभी कनही राजाके आदेशमें युद्धमें गये थके संग्राम करणा पडता। तब आगेंसे शस्त्रादिक चलाने नहीं। आगला शत्रु शस्त्र डाले, तब पीछे डालें यह वास्ते सापराधीकी संकल्पहिंसा न छूटे। तब और पांच विश्वामेंसें आधरहित भये। चारी अढाई रहे। संकल्पीने निरअपराधी जीवकू न मारू। इतना रहा, उसमें भी दोय भेद है। संकल्पीने

निरपराधी जीवकूं न मारू। एक सापेक्षी दूजा निरपेक्षी, तिहां सापेक्ष निरपराधी जीवकी दया श्रावकमें न पलै। सो क्यूं सो कहे है। श्रावक आप घोडे घुडबहिल रथगाडी प्रमुखकी असवारी करे है। तब घोडा प्रमुखकूं बलदके चाबका आर लगावता है। इहां घोडे बलदने क्या अपराध कीया है। उसकी पीठ उपरे तो चढी बैठे है। उस जीवके शरीरकी सामर्थाइ की तो कछु खबर नही। बलवान है, के दुर्बल है, उपर चढी बैठे है, फिर उसकू मारी प्रमुख देके मारे है। ए भी निरपराधी तथा अपने अंगमें तथा अपने पुत्रपुत्री न्यातिगोती निमित्ते मस्तकमें वा कानमें कीडे पडे है। तथा अपनेह मुखमें दाढमें दातामें कीडा है। तब उसके इलाजके वास्ते कीडेकी जगा औषध लगावणा पडे। तब उण जीवने क्या अपराध कीया है तो अपनी योनी उत्पत्ति ठोड पायके कर्मके आधीन आय उपजे है। कछु दुसटाइ सेती नाहि उपजे है। तो ये अपराधी नही है। तिस कारणे निरपराधी जीवकी भी हिंसा कारणे श्रावक सेती तजी न जावे। और बागबगीचामें गये थके फुल फल पान गोच्छ प्रमुखके चाट प्रमुख देणी अथवा फल फूल तोड लीया इस वास्ते अढाई विश्वा रहिआधा गया तब सवा विश्वा रह्या, *इतनी दया शुद्धश्रावक के है। एतले त्रसजीव सकल्पीने निरपराध कारण विना हणु नही। ऐसी प्रतिज्ञा भई। ये प्रतिज्ञा शुद्ध जब रहे, जिहां ताहि अपनी शक्ति पहूचे। तिहां तलक ठगाइ न करे। निरध्वंसपणा न रहे। क्यूंकि कोई जीवकी विराधना हूवे ऐसा उपयोग न छाडे। तथा घरमें आरम्भकारणे लकडी गोते प्रमुख ल्यावे सो आछी लकडी होय। सडी सूली न होय। तिसमें आगे जीव न पडे, ऐसी पकी सूकी होय तो भी रसोईका काम पडे। तब पुंजी करिके झाटक झटक करके जलावे। तथा घी तेल मग प्रमुख रसभरी चीजके भाजन जतना से रखे। मुख बन्ध कर रखे। खुले रखे नहीं। तथा चूल्हाके उपर पाणीके ठिकाणे उपर चंदुआ बांधे। तथा अनाज खाणेकू ल्यावे सो नवो ल्यावे। अथवा वरसमें उपरला धान ल्यावे सो सल्या मूल्या न हूवे, कोई जीव त्रस जनरमें नावे ऐसा ल्यावे। तथा पाणी छाणणेका अतिरस्व सपीठसो रावे। पहर आठ पाणी उपरांत तथा वर्षामें बहुत

[illegible] उ राति हाथ [illegible] न माटी [illegible] अपराधी न कर । तिहा [illegible] [illegible] । [illegible] तथा हर्गिराय बहुबीज प्रमकाय [illegible] नही । स्वादप्रमुखमें जीर वे । तिम [illegible] सूर्यमे न राखे जटकीयानी नान मम [illegible] । दूध मठा मेलि विदल खावें नही । फागुण [illegible] प्रमुख खावे नही । काल पहुंचे पीछे मि [illegible] नही । घरमें बुहारणी मीमीण [illegible] कठोर मेती नीच हणावे । टोप [illegible] न करें । स्नानादिक बहुल पानीसे न करे । प [illegible] । उपरेमें वा मेदानमें वा मोगी नंग चौकी उपर बैठके न्हावे । न्हानका पाणी मानमें रखके छुटा छुटा गेर देवे । तिहा [illegible] तिहा [illegible] कठार इत्यादिक बहु आरंभ व्यापार न करे । [illegible] भी गाने नहा । घरमें जुठा अन्न का घोरण होय, यदी उपरखे नहीं । बिना पूजन प्रमार्जन कछु किया करे नही । यदी मोरीया पाणी चलावे नहा । दीवाबत्ती प्रमुख चलावे, मो जतनामें जीवरक्षा राखे । निम आबखोरप्रमुख पात्र मेती पानी पीया हुवे, मुखकी लाल गिरी लगी होय मा पात्र पाणीमें डबाय कर फेर भरे नही । पाणी भरणेका मटका, [illegible] वे, तिणमेती आबखोरा लोटीया भरे । इत्यादि व्यवहार शुद्ध उपयोगे प्रवर्ते । उन [illegible] मा दिशाकी दया पूरि कही है । इसी तरेमें प्रथम व्रत शुद्ध है । +उसके पांच अतिचार है । सो लिखते है । तिहा प्रथम वह अतीचार, सो गुस्सा करिके अपने जोर बलसेती निर्दयपणे गायघोडे प्रमुखकु मारे चलावे सो पहिलो अतीचार ॥ १ ॥ दुजा बध अतिचार, सो गाय बेल बछा बाछडीप्रमुख जीवकू गाढे बंधनसेती बांधे, वे जीव आकरे बन्धनमें अति दुःख पावे । नीची मुंडी रहे, वे विचारे अबोले ज्यु मनमें तरफे, तथा गाढेबंधन बांध्या हुवे । ज्यु वे जीव आकरे बधनमें है इतनेमें अगनि भय हुआ । तब मितावमें छुटे नही । तब वह जीवकी विराधना होवे । वास्ते गाढे बधन भी अतीचार । तिम वास्ते जानवरकु ढीले बधन बांधे । गुनहगार कोई मनुष्यकु भी निर्दय निपट गाढे

बांधे तिहाभी अतीचार बधका दूजा लागे ॥२॥ तीजा छविच्छेद अतिचार कहे है। बेल प्रमुख शुतर्के कान छेदावे, नाथ घाले, पुरुषत्वपणो मिटावे, आरभी छेदन करे करावे। सो तीजा अतीचार छविच्छेद जाणणा ॥३॥ चोथा अतीचार अतिभारारोपण कहे है। जो बेल मुतर उपरे जितना दाना उनमान प्रमाणा भरणकी रीत हुवे, उनमे ज्यादा भरे, सो अती भारारोपण अतीचार लागे। श्रावकता छकडा बेल प्रमुख जो भारके भरे, मर्यादा तिम सेती पाच शेर दश शेर कम भार भरावे, तो व्रत शुद्ध रहे। उसमें भी जानवरकी चलणेकी समर्थाई उतनी नही है तो विवेक सेती डलावे। जानवर निर्बल कमजोर है तो उसका खाणा धाम दाणा की खबर लेवरावे, पे एसा न विचारे, जो लोक सब डालते है बोझा, तितना हम भी डाले। मुज व्यवहार शुद्ध है, एसा न विचारे। व्रती होय सो दूजा बैल करे ए व्यवहार है। चोथा अतीचार अतीभारारोपण ॥४॥ पाचमा अतीचार भात पाणी का विछेद करे सो लिखे है। जो बैल घोडेकी मर्यादा माफक खाणा बंध करे, कम करे, अथवा अबेर कोरक देवे। चखन टालके देवे। तब अतीचार लागे। अथवा किसीकी वृत्ति आजीविका बध करणी सो भी इन मे आवे। अब श्रावकका तो दास दासी चाकर टाबर प्रमुख जा अपने पीछे जिसकी आजीविका लगी हुवे उसकी खबर लेकर पीछे भोजनादिक पाते करे तो व्रत शुद्ध रहे। ए पाचमा भात पाणीका अतीचार ॥ ५ ॥ ए पाच अतीचार श्रावकके जाणणा पिण आदरणा नही।

इति श्रीद्वादशव्रतविवरण प्रथमप्राणातिपातविरमणव्रत उद्योतसागर गणिना कृत भाषा संपूर्ण ॥ १ ॥

अथ दूहा।

श्री अरिहतादिक समरके त्रिकरण चित्तशुद्ध लाय।
द्वितीयव्रत विवरण लघु मृषावाद जिम थाय ॥ १ ॥

अब थूलमृषावादविरमणव्रत कहा कहीये। थूल कहीये मोटा, मृषावाद कहीये झूठका बोलणा, तिसका विरमण कहते छोडणा, तिहा थूलशब्द पूर्वपरे, मृषावाद जुठ बोलणेमे अप्रीति बंधे, अपजस हुवे, धर्मरो

इन सज्ञ कहैं काहे जीवन घना पहुच ऐसा झूठ न बोलै। अथवा सुत लक्ष्मी घात सनेहादि तनावरु कहे। अनेकगुणी नघती कहै, गैरसुतलक्ष्मी घात अनेकगुणा करै पिण तिसो हुवै तिसो न कहै, उनका वो त्याग सो गुरुगात निरमराव्रत उसके भेद है। एक द्रव्य मृषावाद दूजो भाव मृषावाद। तिहां द्रव्य मृषावाद सो जाणतै अजाणतै विपरीत कहै। झूठ कहै काहु द्रव्य मृषावाद। दूजा भाव मृषावाद, सो स्वरूपभाव पुद्गलादिक स्वरूप बुद्धि अपना जाणै, अपना कहै। रागद्वेषयुक्त कष्णादिक अशुद्ध लेश्या मनो आगमविरुद्ध भाख, आगमार्थ छिपावे, उन्मत प्ररूपै, कुयुक्ति लगावै। सो भाव मृषावाद कहीये। ए जाणतै भी जु हुवै। ए व्रत सबसे बडा है। पालनेमें अतिशुद्धि उपयोगी हुवै। जब तो शुद्ध रहे सब व्रतपाल, जे कारण आगे व्रत द्रव्यदेशविषयी ते दिखावै है। एक जीवकी शुद्ध पहिचानसेती जीवरक्षापालै तथा परनिष्ठागत पुद्गल पर्याय, एतलै अनादि रिद्धादिकी चीजसेती नाम कोई विद्यमान प्रमुख सो परनिष्ठा कहावै उसकू विन दीधी नहीं लेवै। एतलै अदत्तव्रत पलै। तथा एक स्त्री का संयोगत्याग मन वच कायासेती करै एतलै ब्रह्मव्रत पलै। तथा धनधान्यादिक नवविधि परिग्रह त्याग करै। मूर्छा न धरै। एतलै परिग्रहविरमणव्रत पलै। एक एक द्रव्यदेश थकी पहिचानसेती च्यारू व्रत पलै। अरु जो अरु जो मृषावाद विरमणव्रत तो जब स्वद्रव्य गुणपर्यायकी द्रव्य क्षेत्रकाल सेती पहिचान हुवै। तीन कहीये जोरावर उपयोगी हुवै। जब शुद्ध पलै। एक पर्यायमात्र विरुद्ध भाषणसेती व्रत भाजै। या वास्तै साधु प्रायिक बहुलभाषा बोले है। तथा साधुभी प्राणातिपातविरमणव्रतादिक च्यार महाव्रतमें अन्यतर भाजै, तव एक चारित्रगुण भाजी, ज्ञानदर्शनकी भजना। अरु आगली गति बिगडै। अरु जब मृषावादविरमणव्रत भाजै तब रत्नत्रयी समूली जाय। दुर्गति माही रूलै, अरु अनतससारी हुवै, दुर्लभबोधी होय। इस वास्तै इन व्रतको शुद्ध करै, तो छहू द्रव्यकी पहिचान चाहिये। सावधानी राखै। तथा इहां जगतमें द्रव्य असत्यके त्यागी तो बहुत दरसनमें पाईये पै भाव असत्यके त्यागी तो एक श्रीजैनागमरुचि शुद्ध श्रद्धावतज होवै, औरकु नहीं। तहां मृषावादत्यागव्रतके पाच बडा जठ है।

सो श्रावकव्रतीकू अवश्य छोडणें, कोण कोण, प्रथम कन्यालीक सो अपनें मिलापकी कन्या है, उनकी सगाइ हुती हुवे। तव कन्याके ग्राहक पूछें, कन्या कैसीक है। तब रागसेती उसमें दोष वें सा छीपावें, गुण वें मे न हुवें ता भी जुठे थापें। ए कन्या निर्दोष है। ऐसी सुकुलिनी सुलछिनी मिलनी मुश्केल है। साक्षात पारवती है। ऐसा राग सेती कहे। अरु जा वस्तु परस्पर द्वेषभाव होय तो कन्या निर्दोष है सो सुलछनवत है, तो भी कहे ए कन्या कुलछनी है नेसक्टम की है। स्वभाव नवून है। इस लडकी के पासें रहेत हैं पाडोसी लोक कहे हैं। तब हम भी सुन्या है, इससे कोइ सम्बंध करेगा, सो पछितावेगा ऐसा अछता दोष कहे, श्रावकव्रतधारी है, सो तिसकू सगाई साटी निच आरम झुठकामें बोलना युक्त नहीं है। ज कारणें स्त्री भरतारका संबध जोडावणा है सो संसार भ्रमण बीज बावणा है। यु करते अपना मनथी हैं, घरकी वात है। दाक्षिण्यताई सु छुटता नहीं है तो अतिजुठ अशुद्ध न बोलें। ओर गुण थे सो कहे, अरु कहे भाई अपनी तिसा कर लीजीये। जन्मका संबध है, ऐ व्यवहार है। यथा कोई चाकर राखता हुवे, तथा जो कोई भागपाती व्यापार के खातानामा जोडि मिलाया चाहे सोभी पूछे, एकक ए कैसा है, भला हैं के बुरा है तब व्रती श्रावक होय सो रागद्वेषकी बात न राखे। तिम ते कन्यालीककी तरे कम वेश न बोले। गुण होवें सा कहे अरु कहे भाई मनुष्य के मनोगत भाव सो कोण महिरम है। तुम्ह स्यानें हो, अपनी तजवीज कर लीजीये। ए कन्यालीक जुठ जाणणा ॥ १ ॥ अथ दूजा झूठ बडा गवालीक। सो लिखे छे। कैसी तरे किसीक सम्बंधी थार आमनाय की गौ विकती होवें, तब राग बसे बोलें। इस गौकू जोप सेती लयो, बडे दुध की दाता है। सुलछणी है, लातप्रमुख भुजंते चलावती नहीं है। इस गौसी मा भी हमजाणें है। वह भी बहुत दुध देती। ऐसी वाता कहि के गौ विकावें। गाय महा अपलच्छणी थी, कम दूधकी देवाल है, लातप्रमुख चलावें, इत्यादिक दोष सु भरी है। जो तो व्रती श्रावक हुवे सो एतलें रागद्वेष सेती सदोषकू निर्दोष कहे नही, यथार्थ भाषा बोलें। मन चौपद हाथी घोडा सुतर बेल गौ भेंस सबका तिसरा ऐसें

हाउ जिय करावणा युक्त नही, कदापि सबंध स्नेहका हुवे तो बोलणा पडे, तब अपना तक दोष न लागे ऐसा वचन बोले ए गवालिक त्याग करणा ॥ २ ॥ अब तीसरा मृषावाद भूम्यालीक, सो जमीनका झूठ बोलणा, सो कैसे, फलाँ जमीन किसीकी है, अरु आप आपमें कहे मेरी है। ऐसे बुद्धि प्रपञ्च करिके अपनी ठहरावे। अथवा और कोई जमीनकी खातर लडते हुवे, तिहा रागद्वेष परिणतिसेती जुक्ति कुयुक्तिकर रागी को साचा ठहरावे, द्वेषीकू जूठा ठहरावे, हुवे किसीकी दिवरावे किसीकू, जगा किसही औरकी तो एसी बडा मृषावाद है पहिले तो श्रावकमतीकू जमीनका कनि एसी बातम पडणा नहीं। जमीनका कजीया मोटा आरमकी खानि है। कदाची अपना उनस सबध है तो उनमें न छुटे तो यथार्थ कहीये वे जूठ न कहे, आगेमें एकान्त सबधीकू समजावे। ए बातमे हम नही बोलेंगे। इस वास्ते हमारा मत चलावो, यु करते भी कोई पच मीलिके उसी पर कनीये बात ठाठहरावे आनि के पडे तो अपनी चतुराईसू पहिलातो न बोले। ऐसे कहे, हमसेती तो बडे बडे पच है जो ठहरावे सो खरा और स्याणे बहुत है, ऐसा कहीके, चूपकरी रेम। अपना व्रतका भय राखे, अरु कदाचित् बहुत प्रेर तनकहे मुजब बेर बेर क्या कहो मै तो इस जमीकी बातमे पूरा मालमहिरम नही हु। वे भूमिका जूठा न बोले इनमे सब बात जमी सबधी, घर हवेली बागबगीच्या री ऐसी जाणणी, माइ खरीन्ता होय तब भली बुरी न कहे। धनधान्यादिपरिग्रहका झूठभी इसमें आया। ए तीना झूठ भूम्यालीक त्यागे करे व्रती श्रावक है सो ॥ ३ ॥ चाथा थापणमोसा व्रतधारीकू न करना, जो कोई अनामत द्रव्यभूषणादिकचीन धर गया हुवे बिनगुहाई अच्छा गृहस्थ भला जाणीके, तब कितनेक दिन वीते धणी मागणेकू आवेगा तब हम नहीं देंगे, एसी बुद्धिप्रपच करिके झूठा पचोमे बोलैगा किसितरे सेती, जब मागे, तब यही कहेंगे, काई हमारी लीखी दस्ताएवज है, अथवा किसीकी गुवाई भी है। जा कोई मालीयत रख्ये है, सो लिखाय परायके रख्ये है। अब थापणकी मूर्छा जागी, हम नगरमें मातबर है। यह परदेशी आयागया इसकी कोण हर रखावेगी। इसमें स्व छोडके उसकी

तरफ कोन बोलेगा। तो ऐसी चीज इयको क्यू छोटीये । अरु मे अपनी अकल सेती मन कू जवाव दया। किस ही के पेच मे नही आवूगा, ऐसे कुविचारमे पडे इतनेमे पहिला आखिके मागेगा, धणी मेरी चीज द्यो, तब गुस्माकर बोलग, कमा माल अरु किसका मुप्या, मो कह ठीक भी है, हम तुमकू चिन्हते भी नही, तुम कोन हो। क्या किसीके मालमे धरी होय, तिससेती तकरीक करो हम तो बिना पखे किसीकी रखते भी नही, तिसते तुम फिर परदशी इतनी बात सुणिके धरणेवाला कहणे लागा, अरे साहिव मे ऐसा वाला साहिब लेनेवाले, दोनू जीवे ह। कोई बहुत वरसभी न हूवा, मास च्यार पाच की धरी मेल्ही सो तुम ऐसे शाहूकार होय के ऐसे जीवती मरती वातें हो। ए बात भली नही। झूठा नगाडेमे भला नही ह। तब दोनु झगड म लग । शाहूकार अपने भाईबन्धकू कहे। इस दगाखोर कू कोई समझावो काहिसी कह्या नही, नहीतर बहुत दिन याद करेगा, तमती पावेगा। पछि समझेगा आज पीछे किसीसेती झूठा झगडा न करे, तिस वास्ते इसकू समझावो। नहीतर फोजदारीमे कहीके भेज द्या, ज्यु सब हमारे पाससेती द्रव्यचीज गिणगिणीके ल्येगा तिसस समझी जाय अपने घरकु, इससेती झूठा कजीया करु मती ऐसे वचन भगी कह सुणावे। वह धरण वाला विचारे, क्या म कह, सब लोक इसकी रव बोले। मे इकला परदेशी इन सती वसि नाकूगा। तब वह अबोल्यो हुय रहे। ऐसी कुबुद्धि करे सो आप सचा हूवे। आगलेकू झूठा करे, अरु विराणा माल हजम करे। वह थापण लोकभाषा धरोकड गेकड रावे सो महापाप ● । इहलोक मे कदापि पापके उदयमे कबही जाहर हुवे। वे चता धरता, तो महा राजदण्डादिक पडे, लोकमे अपजस हुवे, अप्रतीति रवे, परभव कुडा कलक चढे, दुर्गति मे पडे दारिद्र भार कबहू न मिटे। जिनेश्वर भापित धर्म उदयनाव। इसवास्ते श्रावक व्रती हुवे, सो सर्वथा न करे। शास्त्रमे कोई इनामत रखणी न कही, कदाचित मूल भागे, दाक्षिण्यमधर्मी रखणी पडे भाईबन्धकी गुहाई घलायके तोल मोल कराय के ... के रखणा । ... बहुत दिन गये घटती बधती न करणी । पनी चेतना ... रहे, कदाचित अपने मरणमे ...

चेतना प्रगट नहीं, तिस वास्ते गुरुआदिक हितार्थिक स्वत रहे इसमता उर रहे। उपा आगें उन सुखी होय उन। इनमें सब बातका विरग नाम लेणा। इत्यादि ति आसथान ए सब उर्जीज थापणमोसा न करणा। [illegible] २। [illegible] उठीसाख ग्री श्रावक हूवे, सा न कहे। ति[illegible] [illegible] कुटी सारसा [illegible] जणा झगडे करणेंत्र प्राणी [illegible] [illegible] साचा हैंन थठा, तिनमें जो साचा है तिसपर एक [illegible] [illegible] उस है। निम पुरुपनें अपनें दिलमें धार रख्या है। [illegible] [illegible] पाग उमर ताई जन्म करेंगे। यह बातका अवसर है [illegible] [illegible] उल बधाया डेपपोपणें की खातर आप स्वा सर भाव सातनर सब। लोका में कहनें लगे, इस बातमें हम सहिरम हैं, इगकी गाग हस मर, राजद्वारमें भी कोई काम पडेगा अर पूछेंगे तो कहे इसकी [illegible] साग [illegible] म हम म लीज, ऐसी रीतें गठरा पक्ष्य करें ऐसी भांत करिके कुटी साख भरे, कुटी साखका बडा पाप है। यह भवमें पठा पडे तो आनन नाय, राजप्रमुखमें खबर पडे यह झूठा शहरमें जिसतिसमें झगडा करे है, तब उनसान्य सब लुख्वा जाय, मार खाय। परभवमें इस दुरूह मेती बहुत दुख भागवें, दुर्गतिका साथी होय, पग पग जणन्धीती आपदा आ-सिरें रहू होय, इस वास्तें श्रावकक सर्व आ कूडीसाख भरणी योग्य नहीं। ए पाच तो बड़े जठ है। श्रावक नाम धरावे तिसक त्याग करणा, तथा और भी जिस बालणें सेती राजभय उपनें दंड भरणा पडे, जिह्वा नाक कान हाथ अग छेद्या जाय ऐसी भाषा बाल्णी नहीं ऐसी तरें दूजा मृषावाद विरमणव्रत लीया है, उसका आजीविका निमित्त अपनें परिणामकी रक्षार्थमती कैसेही जूठ बोलणा पडे उसका आगार है। इहा क्रोधमान माया लोभ राग द्वेष रति अरति क्रीडा लज्जा विकथा भय हास्य इत्यादि झठ बोलनका कारण है। इहा हास्यादि बात विनोदमें तथा कोई निमित्त कषायादिकें परिणाम्यां आत्मा मूढ चेतनाभें मृष्यो, आल-पपाल बोलायें उसकी जयणा। तथा कोई चुगल प्रमुख दुष्ट नि कारण बहुत दु ख देवे। कैसे तरें रहे नहीं। तब वैसा अपराधीक शिक्षा दिवा-वणेंक समस्य बाल्णा पडे उसका आगार एतलें सकल्प करिकें विना

प्रयोजन निरापराध, हास्यादि कारण विना निरपेच झूठ न बोलु। पाच बडे झूठ मैंभी स्वमर्यादीं कन्यालीक गवालीक भूम्यालीक ना चाले बालकों का आगार है। उसके पांच अतीचार है, सो जाणणा। तिहा प्रथम सहसा स्कार अतीचार, सो किसीकु एकाएक अणविचार्या कहे, अयुक्त तोहमत देवे, जो तू चोर है तथा जार है झूठा है इत्यादि विना तहकीक किया विना कहे। सो पहिलो अतीचार है ॥ १ ॥ श्रावककू तो साक्षात् रूठ विरुद्ध बात देखी है तो भी प्राणिं कहते आदर न करे। ने कहे तो झुठेका स्रोप लगे, तन बडा पाप लागे, कहे थके विरुद्ध बातका प्राणिके कोई कष्ट दोषादिक उपने, तब श्रावककू अतीचार लागे, विरुद्ध बात है तो आपमें आदरमें आवेगी। दूजा रहस्य भाषण अतीचार। जो कोई दोनुं अपने घरकी सुखदु खकी बात करते दिखके, उसकू कहे, खबरदार रहोगे, तुम्ह दोनु मिलिके राजद्वारकी विरुद्ध बात करो हो, पे बडे तमासा देखोगे, आगे म विचारेंगे आज पीछे ऐसी बात न करे, ऐसा कही के दोऊ ने तांई दु ख उपनावे, और भी स्त्रीजन मित्रकी अपना मिलापि की और भी किसीकी छानी बात अथवा काई अर्थतकी बात आपने जाणी, सा बात लोक समीपे प्रकाशे, उनकी चर्चा रावत चले, जाती जाती बात बनताइ पहुंचे, तब राजदंड भय उपजे, कष्टका कष्ट होय सो जाय, सो रहस्य भाषण अतीचार दूजा ॥ २ ॥ तीजा दारमत्रभेद अतीचार कहे, जो अपनी स्त्री तथा भावज प्रमुख घरके लोर तथा मित्र अपना हितू ताकी कोई जानी भूलचूकसेती विरुद्ध बात होगई, पीछे पछिताया करि के वह दोष छोट दीया, सो बहूत दीन पीछे कोई अवसर वह बात गई रा फिर प्रकाश करे, तब ने लाजकी मारी अपघात जीवकू करे। तब आपकू बडी अपच लागी, आपकूभी बहूत वेदना दु ख बडे, लोकीक में अपजस बढे, इसवास्ते दारमत्र भेद तीजा अतीचार जाणणा ॥ ३ ॥ चौथा मृषा उपदेश अतीचार कहे। जो आप स्याणापणे होयणेकू पापा पदेश जो मत्र जत्र जडीबुट्टी बतावे, जो फलाणी बुट्टीका मूल निकालो, फलाणी बुटीका रसमे मिलायके इतनी चीन चाटी, गोली कर खाओ बडी भोग शक्ति हुवेगी। ओर यह मत्र का जाप जपो, मद्यमांसकी आहूत

थी, त्यू ज्यादा पसन्द हुवे, जो चाहा सो खावो। और कहे सुनी, असुर नगरमें ...मारसु फजरसी आपस रुक्क पानपर मंत्र लिखावें। उन्लके ... ... मास आवे, ता मरे, अक कहे, जिनावरके अहंर ... मता पासमस्व स्वग करें, पाछे हम कहें, जैसे देवताजिको बलि ... पछि ... रहेंगे, मोहे प्रहरकी व्यक्तिमती पासामिद्धि होयगा, ऐसे उपजाकें ... कहे हम काम आसमें निपुण हैं, आमन ८४ योगासनकी विधि ... तुम जीवो तिसमें विविध प्रकारके सुरति विलास किया ... ... वृद्धि रहेगी। काम जागेगा, कामस्वेका वामाका ... ... जीव सुख रहेगा, अथवा पगवाडे उजुवाले पन्न ... ... है, लिखि लिखिका विरत है, मा तुम्हक ममान। ... ... उपदेश ... । ओरभी औषधादिक शास्त्र ... । ... किसीकू दुःखमें डालनेका उपाय बतावें उनके प्रतिपादक ... ... तथा विपय जागे विसी बात नहीं उठावे सो पाप उपदेश वचन बाधा अतीचार जांणणा ॥ ४ ॥ ... ... ना पत्री ना लिखे हैं। मो किसीकू जूठा लेखा लिखे, नामा ... ... लिखे ... अक्षर लिखे पूर्वलिखित अक्षर दूरी प्रमुख गयाणे करी और डारे। जूठी महोर परवाना उपर करे, ... बनावे। ... मरतनाईका भेद सब आया, ए पांचमा कूटलेखना अतीचार इहां आजीविका निमित्त कादाचित्त अहस्तार्थे योगसेती आडत प्रमुख व्यापारमें अधिक लाभ वस्तु धारण प्रमाण समवेश लिखणेका आगार, पै ... मूलमें टाटा आवे, सो न करे, आरभी आजीविका-हेते समवेश मर्यादिक धारणा प्रमाण लिखनेका आगार ए पांचू अतीचार मृषावाद उपदेशरूप हैं। यह पांचू अतीचार महादुर्गतिके सहाई है। तिससेती इनके ... जाणणा, पिण आदरवा नहीं।

इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे द्वितीयथूलमृषावादविरमणव्रत प
उत्तमसागरगणिनाकृत भाषा संपूर्ण ॥ २ ॥

दूहा

सद्गुरु पदपकजनमी। कहिस्यु विवरण शुद्ध।
तृतीय अदत्तादानव्रत। न कहू शास्त्रविरुद्ध ॥ १ ॥

अथ थूल अदत्तादान विरमण व्रत लिखीयै छै। तिहां प्रथम थूल जो चोरी मोटी संकल्प करिकै, दिवाल फोडी खात देकै, अथवा मार्गादिक द्रव्यत्र लेणकी मनसा विकल्पकी भई, यह एकाची है। अवर कोऊ है नही, तब जाणे तुझकरीके, कोइ नवा प्रपंच करि लीया चाहीजे, अथवा बलात्कारे करिके पराई चीज लेणी अथवा विनय बचाइके किसीकी चीज उठाय लेणी। तथा अपने घर अनामत चीज धरि आया, फिर मांगे है। तब नामुकर जाय। तथा रत्न जवाहर प्रमुख लेई धरमें धरे। खोटा ले धरे। और किसीने हीरा मोती बेचलेकू दीया। तिसमें नगका फेर सारा करिके ले लेवे। कम मोलका धरि देवे। ए सब अदत्तादानका दोष कहीये। जे कारणे कबही प्रगट हुवे तो राजदंड देणा, अपजस होय, अप्रतीति उपजे। इस वास्ते थूल अदत्तादानकू जो त्यागे, सो अदत्तव्रत है। तिस अदत्तव्रत में दोय भेद है। एक द्रव्य अदत्तव्रत ॥१॥ दुजा भाव अदत्तव्रत ॥ २ ॥ तिहां द्रव्य अदत्तजो पराई चीज पूर्वोक्त प्रकारे गई पडी किसकी लेवे नही सो द्रव्य अदत्तव्रत। तथा जो पराय पुद्गलद्रव्य उनकी चीज वर्णगंध रसादिक रचना रूप तेवीसो विषय तथा आठ कर्मकी वर्गणा व पराई चीज है। व वस्तुगते जीवकू अग्राह्य है। उसकी जो वाछा उदयीक भावमें धसणस्रं अदत्तग्रहण भावसेती तिणकू श्री जिनागमोक्त तत्त्व सुणिके पुद्गल आनंदी पणो मिटावे। शुद्ध उपयोग वलसेती उदयें अव्यापक रहे, निर्जराबहुल परिणाम सा भाव अदत्त विरमण व्रत। जिती जिती प्रकृतिको बंध मिटेगे एतलो अव्रत मतका होय। तिहा सामान्ये अदत्तके च्यार भेद है। प्रथम स्वामी अदत्त ॥१॥ दुजा जीव अदत्त ॥ २ ॥ तीजा तीर्थंकर अदत्त ॥ ३ ॥ चोथा गुरु अदत्त ॥ ४ ॥ तिहा किसीकी चीज विना दीधी लेवे, सा स्वामी अदत्त कहीये ॥१॥ तथा जो सचित्त बीज फलादिक वाळ प्रमुखमे तोडे। अथवा छेदे भेदे सो जीव अदत्त कहीये। जे कारणे फलके जीवने एसी कछु आज्ञा दई नही है। जो हमकू तुम्ह छेदन भेदन करो तिस हेतू दुजा भेद जीव अदत्त जाणणा ॥ २ ॥ तीजा सो तीर्थंकर देवने जो निषेधी चजि तिन कू ग्रहे। जैसे साधकू आधाकर्मी आहार निषेध है। श्रावक देनाई अभक्ष

[illegible] है, जो आचरै तब तीर्थंकर अदत्त है। तीजा भेद तीर्थंकर [illegible] ॥ ३ ॥ चौथा गुरु अदत्त, सो कोई साध आगमोक्त शुद्ध [illegible] निर्दोष आहार ल्याया। सो आहार विना गुरुकी [illegible] खाँवे। तब गुरु अदत्त कहीयें ॥ ४ ॥ ए च्यारी अदत्तसपूर्ण॥ [illegible] साधु में लग्या जाय, गृहस्थ तो कोई अंश तजी शकै। इहां श्रा[illegible] स्वामी अदत्तका त्यागकी मुख्यता है। इस वास्ते पराई [illegible] उपाय करिकैं न लेवु, जो चीज लेतैं चोर नाम धरया जाय। [illegible] । [illegible] लागै। ऐसी चीज न लेवु। और सूक्ष्म तृण [illegible] जिनकी कोई बहुत मनाई न करै, वे चीज लेणकी जयणा है। [illegible] चीज पडी पाउ तो जो परिणाम टिकै तिहातक लेऊ नही, कदापि [illegible] चीज देख परिणाम शिथल भये तब वे चीज लेवु। लेकरके [illegible] पास राखु। पीछे में जो धणी मालम हुआ तो उनकु [illegible], [illegible] धणी मालम न हुआ तो धर्मस्थानकें खरचू। यु भी परिणाम न रहै तो अर्द्ध धर्मस्थानकें खरचु, अर्ध आप रखू। तथा अपनी जमी में खणतें निधान निकसै, उनकू लेणेका आगार। उसमें से आधा अथवा चोथा भाग धर्म करू ऐसी धारणा, तथा पराई जमी मैंस निधान नीकलै। तब जो परिणाम टिकै तिहातक लेवु नहीं। अरु जो सिथिल होय तो आधा आप रखु, आधा धर्ममें लगावू। तथा कोई नेवारम अनामत धर गया है, वे कोई देशान्तर गया, उहां मृत्यु भया तब उनकी चीज पंचमें भले स्वचिनस जीवुकै आगे जाहरि करिके [illegible] पंच कहै सो करू। कदापि देशकालकी विषमता सू जाहरि करें उलटा लफरा लागै। दुष्ट राजादिक लोभ लगायकें कहै। तेरे घरे बहुत द्रव्य धरया है। तु तो अपनी साहूकारी जाहिर करणेकु थोडा दिखाता है ऐसी उपाधि उठै। तिस वास्तै किसकू न कहू। एवे द्रव्य धर्मस्थानकें खरचु। ते खरचतै धन अपणा कहणा पडै उसकी जयणा। तथा घ[illegible] जो घरमें सब चीजका मालीक तो पिताजी है। अथवा माता [illegible] उनकू पूछ्या विना वस्त्रद्रव्यादि लेवु उनकी जयणा। अरु जिस सेती मह[illegible] [illegible] हुवै। सरधी होवै, जिनकै घर जाणे का आवणे का खावणे का खिल[illegible]

वर्षां रा व्यवहार होवे । उनके घर गये, कुछ विन पूछे फल पानप्रमुख लेवे का आगार । उसका जीव आजुरदा होवे तो न लडु । तथा निर्मावि चाकरी करते व्यापारमें कठू कमर कारिने द्रव्य मिलावणेकी जयणा । तीना व्रत पाले सो व्यवहारशुद्ध अदत्तादानव्रत । निश्चयसेती तो जेता अनधर परिणाम भया, गुणस्थानवृद्धि बधविच्छेद हुआ सो निश्चय अन्तव्रत कहीये । इनके पाच अतिचार लिखे है । तिहा प्रथम तेनाहड अतीचार लिखे हे । तेनाहड क्या कहीये, तेने कहीये चोर, आहत कहीये ल्यां लीया । चोरीकी कोई चीज उनकी ल्यावे तिसकू तेनाहट कहीये । मतलब चोराई चीजका लेणा । जिस कारण चोरीकी चीज सहधी मिल, तब आपा लाभमें पडया तब विचारे मेरे तो परगट चीज हाथ लेणी नही । ए आप चोर ल्याया है । मुझे क्या दोप है । ऐसी पठ विचारणा मनी लवे । पिण यू न विचारे, इस अशुद्ध द्रव्यसेती मेरी चेतना बिगडे और कदाचित् किसही बखत जाहरमें आया तो पकडेगा जब सनबाल पूछे । सहरमें जिसजिसकी चीज गई है सो सरव शाक चत्रुत बतावे । तब चोर कु तनती दवे । तब जिस तिसका नाम पता बतावे, उहा रखी है, उहा वेची ह, सब अग्यास चीज जाहरम आवे । साहूकार भी सहगी टेगले लेईथी, सा सब पकडे आवे । इड उलटा लगे । जो चीन चोरपासमें लीधी सा भी जाय खरच होय सोवरीर बात करे । यही लाक चोरु के ताई पटमा देते है । चोरी करावे है । ऐसी बात भले गृहस्थकू सुणणी पडे, सा बधु कीनीये । और ला कीरसु अपजस बचे । सो तो इस भवका दु ख परभवका दखीये ता दुर्गतिरे भोगवणवाले वेहीज सो प्रथम, इहा अजाणपणे लेणेका आगार । परपराये आया, उसका आगार । बिना परख बहुमोलकी थोडेकू चीज विके, उनके ल्येणेका आगार । ए उनकू जठ माच कल्पना दिग्वलावणे न लेनू, ए पहिला अतीचार ॥ १ ॥ दुजा प्रयोग अतीचार लिखे है । जो चोरकू प्रेरणा करे । तुम्ह आज कल यूही निकम्मे बैठि रहे है । विना किये उद्यम क्या खावोगे । इस दोनस कू तो राज भन्या जोईये, तिस सेती घर बीच बैठा पेट न होयगा । हम तुम्हारे महक्नती है । तिम

सरदकर लपेटकै वेचै । लोकमही अछी देखे वधतामी दाम लेवै । तोभी न विचारै मैं खोटा वणिज करू हू । पाणिमें दुध एकठा करि वेचै, गहू प्रमुख चुन रींच और का चुन रलायकै वेचै । ऐसी तरह करै, सो सब प्रतिरूप कहीये । इहा अपनी चीज व्यापार की होवै, उनकू परिक्रम करि वेचणेका आगार । यह तीजा अतीचार ॥३॥ चोथा विरुद्ध गमन अतीचार लिखे है । सो अपने गामके राजाने फुरमाया, जो फलाणे गाम मत जावो, उनकी चीज लेणी नही । उनमें व्यापार खत व्यवहार देणा लेणा सो कछु भी मत करो, यह सिरकारका हुकम है । ए सिरकारकी मुदी है । उहा जाय किसीका सगणा लेवै रहा है । तिसते कनही पकड मगावते और सिरकार की चीज वेचणे आवै सो ल्यो मत, ऐसा राजाने हुकम करदीया, अब यह लोभके वसि पडया उन गाममें सुहगी चीज जाणीकै छाना सा जाय, वस्तु लवै । अपनी गाममें छानीसी ल्याय वेचै ऐसै मै कोई चुगल जाणै अरु राजाकु जाहर करै, अमुक उस गाउमै चीज वेचै है, उहासेती ल्यावै है, सो इहा वेचै और राजसबंधी बात निगत वैसो करै, तब कष्टमै पडे, दाण चोरी भी इस मै आवै इसवास्ते विरुद्ध गमन अतीचार होवै, इहा दाणचोरी सर्वथा छाडवी, लोभवसि पड्यो न रही सकै तो वर्ष प्रते प्रमाण करि राखै, तथा श्रावक हूवै सो चोथा विरुद्ध गमन व्रतका आगार राखै ॥ ४ ॥ हिवै पाचमा कूड तुला मापा करण अतीचार कहै । सो लेणका ताला जुदा राखै, देणका ताला जुदा राखै, ऐसै मापका गज लेणका जुदा राखै देणेका वस्त ओर रखै । किसही देशविषै अन्नका भी माप है पायली प्रमुख माणा इत्यादिक लेणके न्यारे, देणेके तोल कम रखै । तथा लाकी डाडीमें अन्तर काण रखसै । मापे मे भी ऐसी दगाबाजी करै भरती वेर पायली कु डिगाय कर देवै, लेवैकी वर सिरताई भरके लेवै । आर वस्त्र आप लेवै, जब गज अथवा हाथ सिरकाय करिकै लेवै सो अतीचार लागै, ए पाच अतीचार जानकरिकरी नै सो जाणे, पिण ए अतीचार लगै सो आदरै नही, ओर आजीविकाहेतु वर्तमान लोकव्यवहार रीति कम अधिक देणे लेणकी मुझे जयणा, [illegible]

मिला, जो उस दिन तो मालि का भर्तार है। मेरा दिन तो नहीं है। एक उवा गरिके सेवे तब दूसरा अतीचार लागे ॥ २ ॥ तथा तीजा अनंग कहीये। काम भोग क्रीडा अतीचार, सो अनंग कहीये ते स्व-रूप उन कु जायति करणा, आलिंगन, चुंबन नखप्रमुख देणा, नेत्रों के हाव भाव कटाक्ष आदिक हास्य ठठा मजाख प्रमुख परस्त्री सेती करै। दिलमे सोचे, मे तो सुई डोरा पोवणका सोगनत्याग कीया है। परस्पर एकमिल्याको सोग करणो मो त्याग में है। और या तो मैने नहीं कर्यो, पिण यह कामांध हुआ थका एह न विचारे, चेतना तो दोनूंहीमें बिगडे है। इन सेती भी व्रत मिलान भागे है, मन डिग जावे। तथा स्वस्त्री सेती चौरासी आसन करिके विलास करे। विधि प्रमाणे कामरे निवासकी जागा हाथका स्पर्श करे। अंग मर्दनादि करिके काम जगावे। अथवा परम अभिलाषा भये अरु स्त्रीका जोग अणमिलते कार्य हस्तकर्म करे, वा भी कामव्याप भये तब अपने अंगुष्ठमें मुलरासीयाप्रमुख अथवा स्वस्त्री मिलीकरी अधिकरणमें गुह्यमें मचारख करे, अपनी इच्छा सतुष्ट है तब भी अतीचार लागे। तिम वास्ते श्रावक कू ज्यू त्यू कामसंज्ञा घटावणी की चाह चाहीये। जैसे लोभी अपणे व्यापारके धंदेमें मग्न हुवे रहेमे मे भूख लगी तो भी केतीक बेर खमे। धंदे बीच भूख खातर ॥ न ज्यावे। यू करते जब भूख सै रहणी नावे तब उठीकरी सिताब रसो-ईकी जगा बीच जा कीया सो खाय लीया। पर स्वाद बेस्वादकी कछु तपतीस पण न करे, फिर उठिके धंदमें लगे, वैसे समकिती देशव्रतधारी इहपरलोक मापच धर्ममें मग्न रहे है। जब मे कामसंज्ञा उदय हुआ, तब भावना लाजमर्यादा दुगछादिक अनुसरता काम कू न गिणे। ज्यात-ज्यागमें य करते अति वेदोदय हुवे तब व्याकुल हुतो मिलाय कदर्प रोग निवारकरि फिर अपने स्वकार्य में प्रवर्त्ते। वे व्रती कामसंज्ञा घटावणीकी इच्छा बहु रखे। शुद्धश्रद्धावंत श्रावक तो मैथुन सेवा जैसे जाजरुखाना तैसे जाणणा। यह [illegible] चाह विना बडनीत तैसे न रहे। तसे मैथुन भी [illegible] यह तीजा अतीचार लगे। चौथा [illegible] परजाति-

का तथा अपनी जाति न्यातिमें अपनी बुजरगी जाणावणें कु आगे हो-यकर व्याह कर देवें, वस्तूराना तथा द्रव्यादिकका सहाज्य करें अथवा प्रेरणादिक करिके किसी सेती दिलाव देवें। तिससेती विषयी प्राणी कु खीलाभ हूया। तब वे पुरुष अच्छा कहें। इनके ताई फलानिजीने हमारा घर वसाया। जो ऐसे होय तो यह व्याह हूया, नहीं तर हमारा क्या हवाल हूता, ऐसा जस अपना सुणिके बहूत खुस वखत होय। तब ओर भी व्याह के अर्थी होय सो आयिके इणकी खुशामद करें, स्तुती भी करें, साहिबमे पर उपगारी थोडे निजर आवें हैं। ऐसा सुणिके कहे, कोई कार्य हुवे तो मुझसे तुम्ह कहीयो, मनम मत कीजीयो। हमारा तुम्हारा एकवास्ता है ऐसा सम्बध ससारमें जगा करावणा यह अनर्थ बीज वावणा है, तिससे मतशुद्ध न रहे, अरु काम अधिकरण वधावतै ससार वधे, श्रावक कू तो अपने घरमें कोई इस वातका कार्यकारी हूय तो उस कु भलावे, आप न्यारा रहे तो ववाह करिके पराया विवाह जो डावे सती होयके तिस कु चोथा अतीचार लागे ॥ ४ ॥ इहा अपना घरमवधी अरु कुटसवधी व्याह करणेकी जयणा सो भी परिणाम रख लेवे। स्त्री भी पर व्याहमें मोढप्रमुख वाधे आगे होयकर कुलधर्म जगावे, तब अतीचार लागे ॥ ४ ॥ तथा पाचमा तीव्रानुराग अतीचार कहे, जो स्त्री उपर तीव्र अभिलाषा धारे, पराई स्त्रीकू देखिके मन नीच बहुत अभिलाषा चाहना करे। उस विना खिणमात्र रहि शके नही। फिरते धिरते जीव उसमेंहीं रहे। अथवा देहमें काम वधावणे कू भोग समर्थाई करणे कु अफीम माजम भाग ओर भी धातुहरताल पाराप्रमुख पट्टी वधेजकी गोली ढूढे इत्यादि तीव्र काम राग मनी कर तब पाचमा अतीचार। ओर स्त्री भी योनिसकोचवानो औषध माइया फल चर्मीम त्रिफलालोद इत्यादिक अगमें गोलीकर मचगावे। अत्यत अधिक उल्लट वेष रचे बहु हावभाव विषयलालसा करे तब पाचमो अतीचार लागे ॥ ५ ॥ ए पाच अतीचार जाणू पे आदरू नही। इहा स्वदारा सतोष व्रतवाले कू छेहडेके तीनू अतीचार है। आगले दोय अतीचार अनाचार है। तथा परदारागिरमणव्रतवाले कु तो ए पाच अतीचार है। स्त्री कू

भी रेमेहैं। अतिचार लागै ॥ ५ ॥

इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे थूलब्रह्मचर्यव्रतातिचारे प उद्योतसागर-
गणिनाकृतभाषा सम्पूर्णम् ।

दूहा

सुमतिदाइ श्री शारदा ताऊ पदपकज ।
पचम परिग्रहव्रततणी भाषा करु सुमेन ॥ १ ॥

अथ पञ्चमथुलपरिग्रहव्रतपरिमाण निगतचारि करिकै लिखै हैं। सो जाणणा, परिग्रह सो कहियै, समस्तपर्णे ओर द्रव्य नानाप्रकारका ग्रहण करणा सो परिग्रह । उस परिग्रहके दोय भेद है । एक बाह्य द्रव्य परिग्रह अधिकरणरूप सो नवविधि परिग्रह है। दूसरा भावपरिग्रह सो चवदह अभितर गांठिरूप जो परभावका ग्रहण समस्तप्रदेश सेती सरवाईपणे बध सा भावपरिग्रह । शास्त्रमें मूर्छावृत्ति मूर्छा सो भाव परिग्रह कहै है। तिहा चवदह ग्रथि सो कहै है । तिनकै नाम । प्रथम हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ भय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ दुगछा ॥ ६ ॥ क्रोध ॥ ७ ॥ मान ॥ ८ ॥ माया ॥ ९ ॥ लोभ ॥ १० ॥ स्त्रीवेद ॥ ११ ॥ पुरुषवेद ॥ १२ ॥ नपुसकवेद ॥ १३ ॥ मिथ्यात्व ॥ १४ ॥ एव १४ अभ्यन्तरग्रथि है । इहा ससारी जीव कू अविरतीक चलमती इच्छा आकाश समान अनत अपरिमित है। यही अविरतीकै उदयै इच्छा अरु इच्छासू कर्मबधमें पडयो चारुगतिमें भटकै है । इसमें बाद अविराधक पुन्यकर्तीके उदयै मनुष्यभवादिक सकलसामग्रीयोग पाया, अरु सदगुरु सगति पाइ, तब श्रीजिनवाणी सुणी, तब चेतना जागृति भइ, चेतना ससरी तब विचारै । अहो हु समस्त पर भावसेती न्यारा अरुपी अछेद्य अभेद्य, अदाह्य, धर्मी सो इच्छारासि पडयो । समस्त जन्म मरण परिभ्रमणादि दु ख भागी परधर्मी भयो तो अबध समस्त परभावका मूल इच्छा कू दूर करू, ऐसी चेतना भई । तब समस्त परभाव त्यागरूप चरित्र आदरै, अरु जिस कू वहुलकर्मी अविरती चलमेती समस्त परिग्रह मूर्छा एकारी छूट नहीं अरु त्यागमे भी रहै, तब व लघुमार्ग देशविरति आदि इच्छा परिमाणव्रत धरै, यह इच्छा

परिमाण नवविधि सो लिखे है। तिहा प्रथम धन इच्छा परिमाण, तिहा धन च्यार प्रकारका जाणणा। सो प्रथम धन गणिम कहीये। सो जो गिणती वस्तु वेचाये श्रीफलप्रमुख ॥ १ ॥ दूसरा धरिमधन, सो जो तोलसे विकावे गुलचीणी कीरीयाणा प्रमुख ॥ २ ॥ त्रीजा मेयि धन, सो जो मापसेती विकाये। दुग्ध घृतादिक ॥ ३ ॥ चोथा परिछेद्य धन, सो जो परिक्षासे विकाये सोना रूपा जवहर वस्त्रादिक नाणा प्रमुख ॥ ४ ॥ ए च्यारु धन कहीये। उसका सो परिमाण सो धनपरिमाणव्रत। दुजा धान्य परिग्रह चोवीस जातिका लिखे है। शालिजाति ॥ १ ॥ गोहू जाति ॥ २ ॥ ज्यारि जाति ॥ ३ ॥ बाजरी ॥ ४ ॥ जव ॥ ५ ॥ मुग ॥ ६ ॥ मौठ ॥ ७ ॥ उडद ॥ ८ ॥ चूट ॥ ९ ॥ चोडा ॥ १० ॥ मटर ॥ ११ ॥ अरहड ॥ १२ ॥ किमारी ॥ १३ ॥ कोद्र ॥ १४ ॥ कागनी ॥ १५ ॥ चीणा ॥ १६ ॥ वाल ॥ १७ ॥ मेथी ॥ १८ ॥ कुलथ ॥ १९ ॥ मसूर ॥ २० ॥ तिल ॥ २१ ॥ मडवे ॥२२॥ तुरी ॥ २३ ॥ वरगी ॥ २४ ॥ ए चोवीस धान्यजाति व्यवहारे सदा खाणे लायक लेणा। ओर भी धाणा ॥ १ ॥ भींडी ॥ २ ॥ सोत्रा ॥ ३ ॥ अजमा ॥ ४ ॥ जीरा ॥ ५ ॥ ए भी धान्य की जातिमे है, ओप धादिके कोई प्रकारे काममे आवे ॥ १ ॥ ओर भी धान सामा ॥ १ ॥ मणकी ॥ २ ॥ भुरट ॥ ३ ॥ वेकरीया ॥ ४ ॥ मारवाड देश प्रसिद्ध ओर भी चिरीया मोठ अडक धान, खडधान जो वावे विना उगे। काल दुकाल खाइवा योग सर्वजातिके नाज उनका जो परिमाण सो धान्य परिमाणव्रत कहीये ॥ २ ॥ त्रीजा क्षेत्रपरिग्रहव्रत कहे, सो क्षेत्र कहीये खुली भूमी वाणे की वगीचा करणेकी। उनके तीन भेद है। एक जमीन ऐसी जो वरसात मधी पाणीसे धान नीपजे ॥ १ ॥ अरु एक जमीन ऐसी जो कुवेका पानीसे धान नीपजे ॥ २ ॥ तथा एक जमीन ऐसी जो दोनूसु नीपजे, वरसातका पाणीसु नीपजे अरु कुवेका पाणीसु भी नीपजे ॥ ३ ॥ उनका परिमाण सो क्षेत्रप्रमाणव्रत ॥ ४ ॥ चोथा वास्तु परिमाणव्रत कहे है, जो घर हवेली दुकान प्रमुख तीनूके तीन भेद है। एक [illegible]

या मुहरा नदमाना विना उची हवेली एक मालकी दो मालकी तीन मालकी यावत सात मालकी भूमी, उनका जो परिमाण रखे। तीना मानादिकका वास्तुक, सो मुहरा नदमाना रुपा टाका हवेली बीच होय सो खातादिकृत कहीये। उनका जो परिमाण सो वास्तुकपरिमाणव्रत तीजमा रुप्यपरिग्रह परिमाणव्रत लिखे है। जो विना सिके का रूपा रक्खा उसका तोल परिमाण रखे। सो रूप्यपरिमाणव्रत जाणणा॥ चउथा सुवर्ण परिग्रहपरिमाणव्रत लिखे है। जो रूपाकी तरै अघड सोना उसका तोल रक्खे। सो सुवर्ण परिमाणव्रत जाणणा पांचमा कुपद परिग्रहपरिमाणव्रत कहै है। सो कुपद कहीये तांबा पीतल रांग कांसी सीसा भरत लोहा सब धातुका वासणका परिमाण तोलकर रखे। सो कुपद परिमाणव्रत जाणणा छठमा दुपद परिमाण व्रत कहै है। जो दासदासी जो मोलमें विकातलीया सो दुपद कहीये। और गुमास्ता चाकरप्रमुख गिणतीमें नही, उसका परिमाण रक्खे। सो दुपदपरिमाणव्रत जाणणा चौपदपरिमाणव्रत कहै है, सो गाय भैस घोडा बेल सुअर ऊंट बकरी गाडरी प्रमुख चोपगा जीव, उसका परिमाण गिनती बीच राख लेखा, सो चोपदपरिमाणव्रत नवमा व्रत अपनी इच्छामती राखलेणी, तिसका विवरा लिखे। प्रथम धन अणघड्या अथवा घडयो, पछे सेकडा रूपीया असरफीप्रमुख इतनेकी ना जयणा रखे। परिमाण उपरांत पुन्याईसू वधे तो धर्मप्रीति धर्मस्था नकमें खरचू। धान्य परिमाण, वरस बीच इतना मण धानकी जयणा, तिसका विवरा लिखे। इतना मण घर आश्रित रख, इतना मण ओर नहिंर प्रमुखकी जयणा। अब व्यापारकी निगति तो सातमा गुणव्रतमें लिखेंगे। क्षेत्रपरिमाणमें क्षेत्र इतना बीघाकी भूमें जमीकी जयणा। उपरांत नहा बगीचा भी इनमें आया। वास्तुपरिमाणमें घर खिडकी बंध इतनाकी जयणा। तथा दुकान छुटा तथा नवेला इतना गांगाना तथा रुक्सार तथा लिछमी वधै पुण्यकी उदयें हाथीप्रमुखकी जयणा। और परदेश सबंधी कोठी इतने राखणेकी जयणा। इतना किरायै घर-दुगैरी जयणा। भाडेका घर समरावणेकी जयणा। कुटुंब सम्बधीके

घरका आदेश उपदेशकी जयणा। सगधी देश परदेश गये उनका घर समरावणेंकी जयणा। कोई गुमास्ता चाकर परदेश गया हूवे, तव उसके घरका सहाज्य करणेकी जयणा। किसीकी आजीविका हेतु चाकरी करणी पड़े, तव वोह घर हवेली करावणेंका देणा सूपे तव उनका करावणेंका आगार है। रूप्यपरिमाण इतना सेर अथवा मणपर्यन्तकी जयणा, जवहर तो धनपरिमाणमें गिणिन है। ए सव अपनी निष्ठाके घरमें घरकी अजनास है ओर सोनारूपा जवहर प्रमुखका व्यापार आश्रित सातमें व्रतमें लिखेंगे। कूपदपरिमाणमें ताना पितल रांगा लोहा कासा भरत सब मिलीके इतना सेर, अथवा ओर तोलप्रमाण रखणेकी जयणा। उपरात निषेध। दुपद परिमाणमें दासदासी जो निका सेती लेणा तिसका राखे व्रत माफक उपरात निषेध। गुमास्ता चाकरकी जयणा। चौपदपरिमिणामें इतनी गौ इतनी वछासमेत, साडसमेत भैंस इतनी राखणी। औलाद समेतकी जयणा। घोडा घोडी औलाद समेत इतनाकी जयणा। वकरीकी गिणतीकी ओलादसमेतकी जयणा। सुतरी राखणेंकी जयणा। हाथी एक च्यार दश ए चौपद अपने भोगनिमित्ते घरमें राखणा है। कोई लहरेंमें अथवा किसी ओर रीति कोई सिरपाव निनराणा प्रमुखमें आया उनका आगार, ओरका निषध। ऐसे ओरसी घरवरकी सो घरवखरी सो घरका खरच कागज पीछे छोटा सब अधिकरण सब मिलीके इतना सईकडे रूपीयाका अथवा हजारू रुपीयेका तिसको रखणेकी जयणा उपरात निषेध। वर्षप्रतें तेल मण इतना घी इतनेकी जयणा। वर्षप्रतें किरीयाणा इतने मणकी में व्यापार करणा घरमें रखणा मानप्रमाण तिसकी जयणा, उपरात निषेध। वर्षप्रतें इतना मण लूण सिगति राखणेकी जयणा उपरात निषेध। वर्षप्रत्यें इतना गुड मिसरी खांड चीणी मुसली इतना मण घर खरच कू तिसकी जयणा उपरात निषेध। इसी तरें ओर भी चीज घरसबधी रखणेंकी जयणा। ए सब ऐसी तरें पाचमें व्रतमें इच्छा घर सबधी है। अरु व्यापारसबधी तो सातमेंमें कहना है। इछा परिमाणव्रतके पांच अतीचार लिखे है। तिहा प्रथम धनपरिमाणातिक्रम अतीचार, सो जव धन ईछा

नाग द्रव्य नव नाममनामती डिल्मे मनसुवा करै। ए पांच हजार तो रंटेंरे जमे रां। रमा भी तो रहा हूवा। उनइ तो भी चहीयेगा अरु देणा इमर उचित है। एमा कुविकल्प करिके नेटाके जुदे दाम रखे सो, आर न ग्रा ना पावल प्रमुख तो इछा माफक घरमे तयार है। फिरि जोग अति लाभ जाणे, तब धान्यका सौदा कर रखे, उनइ कहे। ए माल उनका है। तुम्हारे घर रखो। हमकु ज्यु चहीयेगा, तैसे लीया जायगा। एसी तरै करिके ज्यु ज्यु घरमें धान खपे, त्यु त्यु वह धान ल्यावे। अपने आपोनसेती यु जाने। मेरे तो इछा परिमाणसेती अधिक घरमें रखणका त्याग है। ए तो औरके घरमें रखा है, मुझे क्या त्याग है, एम मनके कुविचार करे। अथवा कच्चा मण रख्या है, पर दशांतर गये पक्का मण भी इतना गणे सो भी ऐसा करे सो प्रथम अतीचार है॥१॥ दुसरा क्षेत्रप्रमाणातिक्रम अतीचार लिखे है। सो जो वा स्तु परिमाण रख्या है, उनमें ज्यादा हुया। तब दोयघरके विचालकी दिवाल तोड गिरावे, वडा एकघर करे। खेत्र बगीचा प्रमुखकी वाडि तोडिके वडा बगीचा करे मनमें विचारे में ने जो परिणाम कर रख्या है सो अखण्ड है। जे कारण गिणती एक अथवा दो घर रखे थे, सो ते ही गिणतीमें अरु वडा करणेमें कोणसा दोष, गणना तो ज्यू की ज्यू है, ऐसा करे। सो दुजा अतीचार॥ २॥ तीजा रूप्यसु-वर्ण प्रमाणातिक्रम अतीचार सो इछा परमाणसे यादा हूवा तब अ पनी भार्याके गहना भारीतोलके बनावे, अथवा उनकी नेष्टा कर रखे, रूप्य भाजनप्रमुख भी भारी घडाय रखे। सो तीजा अतीचार॥ ३॥ चौथा कुप्यपरिमाणातिक्रम अतीचार सो तावा पितल कासा प्रमुखके भाजन वा और गछपीछ जो गिणती रखे है। अर जब संपदा पाई तब भाजन गिणतीमें तो प्रतिज्ञा परमाणे राखे वे तो तोलमें दुगुणा तिगूणा सेर तोलमें बनावे। मनमें यह धारणा धारे, मेरा व्रत तो अ खण्ड है, गिणती तो भाजनकी नही भागी है, अथवा कच्चा तोल रख्या गया है। किसही परदेशांतरे पक्केका व्यवहार है। अब अ पने अज्ञानसेती कहे। कच्च पक्के कोण चरचा है। हमारे तो सब

जनरा ममत मेर प्रमाण कछू हमने सेर चढाया नही, बाद हमारी खातरदारीके वास्ते मी कीमने रनाया नही तो हमारे तो सेरसे प्रतिज्ञा है। कचे पकेका हमारे कछ हिमाव नही गवै है ऐसा करै सो चोथा अतीचार ॥ ४ ॥ पाचमा द्विपद चतुप्पद परिमाणातिक्रम अतीचार, सो दाम दासी घोडा गौ बैल और भी चौपद प्रमुख अधिक हुया जाने, तब वेच देवे। अथवा गर्भग्रहण अवेग करावे, गिखतीमेरा वेचे, तब गर्भग्रहण करावे। अथवा भाई पुत्रकी निश्राकर राखे। एतले अपना परिमाण भाकर कहणमे रखे। ऐसी कुटलिता करे, अपनी अज्ञानताइसू मा प्राणीको पाचमा अतीचार लगे ॥ ५ ॥ ए पाचो अतीचार जाणणा प आदरणा नही है। जे इहा चेत्र वास्तु चतुष्पादादिक कोई मागनमें आवे वे निकावे नही तिहा तक अधिक रखणा पडे उनका आगार है।

इति श्रीद्वादशव्रतटीपे पचम थूलपरिग्रहपरिमाणव्रत व उद्योतमागरगनाणिकृतभाषा सम्पूर्ण ॥ ६ ॥

दुहा

प्रणमू गणधर पदकमल श्री गौतमलब्धिनिधान।

अब गुणव्रत विवरण कहू षष्ठमदिशि परिमाण ॥ १ ॥

अब तीनूव्रत छठा सातमा आठमा इणकू गुणव्रत कहीये। तिसमें छठे व्रत बीच दिशिका विचार कहीस, इम हेतू इस व्रतका नाम दिग्परिमाण, सो लिखे है। जिम कारण पूर्व जो पचाणुव्रत कहे, उनकू गुणकारी है। ऐ तीनु व्रतमें पचाणुव्रतकी होय है। इस वास्ते गुणव्रत कहाये। सो किम तरसे, जब दिशि परिमाण कीया तब दिशिनियम क्षेत्र में बाहिर रहे जीव उनकू अभयदान दीना तब पहिलो प्राणातिपात विरमण तिमकी मजबुती भई। तथा उसक्षेत्र गत जीवों सेती जूठ बोलणेका त्याग हुआ इतने दुजो मृषावादविरमणव्रत तिनकी पुष्टी भई। तथा उस क्षेत्रकी चीज अणदई लेणका त्याग हूया, इतने तीजा व्रत अदत्तादान विरमण तिमकी पुष्टी भई। तथा उस क्षेत्रगत स्त्रीसेती काम भोगविलास मिट्या, तब चोथा व्रत मैथुनविरमणकी पुष्टता भई। तथा उस क्षेत्रगत वस्तु क्रयविक्रय निषेधसेती परिग्रहमूर्छा कम भई, इस वास्ते

पाचमाव्रत परिग्रहपरिमाण तिसकी भी पुष्टिता भई। तथा उस क्षेत्रका व्यापार संबधी अठारह पापस्थानका त्याग भया। तिसवास्ते पाचू व्रतकू गुणकारी है। तिस कारण इनकू गुणव्रत कहीये। तिहा दिशिपरिमाण सो च्यारू दिशि विदिशि अरु ऊर्ध्व तथा अधोदिशी परिमाण व्रत होवै दिशि परिमाण के दोय भेद है। एक व्यवहार, दुजा निश्चयभेती, तिहा व्यवहारभेती दिशि परिमाण सो स्वइच्छायें दसू दिशि जावेका अरु आव्वी भजवेका अरु जहातक व्यापारकरणेकी चाह उनका परिमाण करके रखे, सो व्यवहारदिशि परिमाणव्रत है। तथा निश्चयभेती दिशी परिमाणव्रत सो जो गति गमन है, सो कर्मका धर्म है। कर्मवशि पड्या जीव च्यारू गतिमें भटकै है। परानुयायी चेतना भई तब परस्वभाव अनुसरता हुआ। जीव तो शुद्ध चेतन्य अगतिस्वभाव है। स्थिर निश्चल स्वभाववत है। ऐसा श्री जिनवाणीके उपगार सेती जाण्या, तब चेतना शुद्ध स्वरूपानुयाई भई। तब आपना अगतिस्वरूप जाणिके सब भेत्र सो उदास रहे, एतलें सचचेतनम् अप्रतिबंधक मानें वरतें। सो निश्चय दिशि व्रत है। इहा दसू दिशिका परिमाण मा दोय भेद, एक जलवटका, दूजा थलवटका। तिहां जलवट जिहां जलमें बेठके जावना अर थलवट जो खुसकी जमीपरे जावना। तिहां जलमार्गे फलाणा बिंदरतक जावणा, तिस वास्ते जलमार्गकी गिणती सख्यामें आवे नही। तिस वास्ते बिंदरका नियम रकखे। तिहा पिण पवनके तथा मेह आधी प्रमुखके तोफानमें जाहाजकु कहा ले जाय नाखे। अरु अजाणपणे भूलचूकसेती अधिक चलावें, तिसतें गिणती जिस बिंदर पीथी, तिसतें दूर और बिंदरमें लें जाय रख्यें तिसका आगार है। तथा थलमार्गे अपने जिस क्षेत्र रत ऊचर्या हुवे, जिहासु च्यारू दिशि च्यारू विदिशि ओजन गाउ कोश जितना जावणा, तितनेकी मुझे जयणा। चोर अथवा किसी म्लेच्छादिकके बंधनमें पड्यै, ले जाय अधिकें गाउ कोस तो वाकी जयणा, परवस पडे दोष नहीं। ऊर्ध्वदिशी कोस चारेकी जयणा। अधो दिशि दो जोयणा उचा चढी नीचे उतरण सो गिणतीमें नही। नियम क्षेत्र बाहिरका किसीका पहिचानसेती आवे। ते वाचनेका फिर लिखनेका

आगार। अपनी तरफसेती विनाकारण पत्रादिक ना लिखूं । परदेशकी विकथा सुणनेका आगार, कोई लहणादिक मोटे प्रयोजनै आजीवीकारै भयसेती हक्कप्रमुख लेनकू आदमीप्रमुख तगादे भेजणेका मुझे आगार। ओर दिशिपरिमाणमें ५०० पांचसै कोस प्रमुख परिमाण रख्या है। पीछै कोई पापके उदयसेती राजभयसेती आजीविका भयसेती जिस गाम अथवा नगरमें वसतेथे, तिसमें सो दोयसो कोश दूर जाय रहे। तो भी पूर्व क्षेत्र परिमाण रख्या हूंता, सोई रखै पिण छोडे नही, अरु जो आगेमें जो आगार रख लिया है, तैसे अपना निवास जहां नवा कीया है। तिम ते भी पांचसै कोश गिण लेवै। नही तो पूर्व प्रतिज्ञा करी है सो पालै। ऐसी विगतसेती छठा व्रत है। उसके पांच अतीचार है। तिहां प्रथम ऊर्ध्व दिशिप्रमाणातिक्रम अतीचार, सो अपने अनाभोगसेती बेसुरतीका लीया तथा कोइ कारणसेती ज्यादा गमन करे, तब प्रथम अतीचार ॥ १ ॥ ऐसीतरै अधोदिशि प्रमाण अतिक्रमै तब दुजा अतीचार ॥ २ ॥ तथा तिर्च्छी च्यारू दिशी अनाभोगादिकै प्रमाणातिक्रमै तब तीजा अतीचार ॥ ३ ॥ इहां अनाभोगै आप जाय, अथवा नियमभंग भयै गुमास्ताप्रमुख भेजो तब चोथा अतीचार ॥ ४ ॥ जो एकदिशि सो जोजन रक्खे है अरु एकदिशि पचास रक्खे है, कमहूक काम पडे दोडमें जोजनका जाणेका तब पचास योजन ओर दिशिके रख्ये थे सो तिणि जारणा, जिम दिशि जारणा पडे तिस में मेल लेवे, ऐसे अज्ञान से रख्ये सो जोजन पूर्व दिशि के मोकले रख्ये थे तिसमें पचास कोश दक्षिण दिशिके थे, सो इसमे आन गिण लेवू । दोढ मैंश्री गिणती भई यूं न गये अरु आज दिन ऐसै ऐसै दिशि गए उस मैं मेरा व्रत भी न भांजैगा। एक दिशि काम पड्या उधर करै नहीं। जिस दिशि जायें आवणेका नियम रख्या होय, तैसीहीज प्रतीज्ञा पालै। उलट पलट अपनी गरज पडया करै ऐसी कुविकल्पना विचारै तब चोथा अतीचार ॥ ४ ॥ पांचमा अतीचार विस्मृति अतर्धान सो दिशि परिमाण करिके ते दिन पीछै विसरी जाय। जो मैने तो इणदिशि कूं तो सो जोजन रखे थे अथवा इस दिसि ते रख्यै हुवै ऐसा

गचाग्रउ परिग्रहपरिमाण तिसकी भी पुष्टिता भई। तथा उस क्षेत्रका त्याग ऐसी अठारह पापस्थानका त्याग भया। तिसवास्ते पांचू व्रतकू गुणकारी है। तिस कारण इनकू गुणव्रत कहीये। तिहा दिशिपरिमाण सो च्यार दिशि विदिशि अरु ऊर्ध्व तथा अधोदिशी परिमाण व्रत होवै दिशि परिमाण के दोय भेद है। एक व्यवहार, दुजा निश्चयसेती, तिहां व्यवहारसेती दिशि परिमाण सो व्यवसायार्थे दसू दिशि जाणेका अरु आदमी भेजेका अरु जहातक व्यापारकर्मकी चाह उनका परिमाण करके राखे सो व्यवहारदिशि परिमाणव्रत है। तथा निश्चयसेती दिशि परिमाणव्रत सो जो गति गमन है, सो कर्मका धर्म है। कर्मवशि पड्या जीव च्यारू गतिमें भटके है। परानुयायी चेतना भई तब परस्वभाव अनुसरना हुआ। जीव तो शुद्ध चैतन्य अगतिस्वभाव है। स्थिर निश्चल स्वभावात है। एसा श्री जिनमार्गके उपगार सेती जाण्या, तब चेतना शुद्ध स्वरूपानुयाई भई। तब आपना अगतिस्वरूप जाणिके सब क्षेत्र सो उदास रहे, एतले सवक्षेत्रसू अप्रतिबंधक भाव वरते। सो निश्चय दिशि व्रत है। इहा दसू दिशिका परिमाण सो दोय भेद, एक जलवटका, दूजा थलवटका। तिहां जलवट जिहां जलमें बेठके जावना अरु थलवट जो खुसकी जमीपरे जावना। तिहा जलमार्गे फलाणा बिंदरतक जावगा, तिस वास्तें जलमार्गकी गिणती सख्यामें आवे नही। तिस वास्तें बिंदरका नियम रखवे। तिहा पिण पवनके तथा मेह आधी प्रमुखके तोफानमें जहाज कहां ले जाय नाखे। अरु अजाणपणे भूलचूक सेती अधिक चलावे, तिसतें गिणती जिस बिंदर थकी, तिसतें दूर और बिंदरमें ले जाय रख्ये तिसका आगार है। तथा थलमार्गे अपने जिस घर व्रत उच्चर्या हुवै, जिहासु च्यारू दिशि च्यारू विदिशि जोजन गाउ कोश जितना जावणा, तितनेकी मुझे जयणा। चोर अथवा किसी म्लेच्छादिकके बधनमें पड्यो, ले जाय अधिके गाउ कोस तो वाकी जयणा, परवस पडे दोष नहीं। ऊर्ध्वदिशि कोस चारेकी जयणा। अधो दिशि दो जोयणा उचा चढो नीचे उतरण सो गिणतीमें नही। नियम क्षेत्र बाहिरका किसीका पहिचानसेती आवे। वे बाचनेका फिर लिखनेका

पायकै अपनी चेतना जगायकर स्वरूपानंदी चेतनविलास अनुभवै सो निश्चय भोगोपभोगगत कहीये। अथवा भोग शब्दका अर्थ लिखै है। सातमा व्रत के दोय भेद है। एक भोग, दुसरा उपभोग। सेती कर्म-व्यापारादिक क्रियारूप य है। सो तिहा भोगके फिर दोय भेद है। एक उपभोग दुजा परिभाग। तिहा सो चीज एकही वेर भोगमै आई आहार पुष्प विलेपनादिक। परिभाग सो वेर वेर भोगमै आवै। भवन वस्त्र स्त्रीयादिक। तथा कर्मसेती यु है। उसकै भेद बहु है, सो आगै लिखै है, तिहा श्रावक इ उत्सर्गमार्गै निरवद्य आहार लेणा। ते शक्ति नही तो साचित्त परिहारी होणा। ते नही तो सचित्त परिमाण कर लेणा। अरु वावीस अभक्ष बत्तीस अनतकाय प्रमुख दुर्गतिहेतु जाणी अवश्य त्याग करणा। उसमै भी पूरी शक्ति न होवै तो अपना वीर्य मदका पश्चात्ताप कर परिमाण करि लेना। तिहा प्रथम बावीश अभक्ष लिखै है वड १ पीपल २ पारस पीपल प्लक्ष भी पपीलकरी जातिविशेष ३ तथा उबरि ४ कालुबरि ५ ए पाच फल अभक्ष है। इन पाचूमे मखी सरखी जीव है। आकार सेती सरीगै होत है, ए वास्तै पाच अभक्ष है। ओर सहीत मध ६ मदिरा ७ मास ८ मखन ९। ए च्यारु निरतर जैसा इन चीजका रंग है तैसाही असख्य जीव उपजे है। अरु ए च्यारु महा विगय है, बहुत विगाड करै, कामादि दोषकू बढावै। पहिलै तो ए हिंसा विन होता नही। अरु पीछे भी चेतना कू वहकावै इस वास्ते अभक्ष कहे है। आर पुराणादिक वैष्णव मार्गमै, तथा कुराणादिक म्लेच्छादि शास्त्रमै भी मदिरा मासका बहुत दोष कहा है। इस वास्ते स्वपरदर्शन मे भी ए चीज त्याज्य है ॥ ९ ॥ ए नव भये, और भागप्रमुख लैणमै चेतना विगडै सो इनमै ही गिणना इसमै भी सरदी रहै। तेहथी त्रस जीवकी बहुत उत्पत्ति है। इस वास्तै यह भी त्याज्य करणा। तथा हिम सा बरफ, सो भी अभक्ष, अपकायकै असख्य जीव है, पीछे चेतना कू मद करै, सरदी करै। ए चीज खानेका कछु जरूर नही। बहुत आरभीक। स्वादिष्ट भी नही है। बलादिक वृद्धिकारक भी नही है। अरु श्री सर्वज्ञपरमेश्वरजी प्रतिषिद्ध है, इस वास्तै अभक्ष है। इसमै प्रस-

जीव ए पाई ऐसा दिशि परिमाणमें कम वेश करै, अथवा कागदप्रमु खसैं लिख रख्या न करै। अथवा बुद्धि विलाम मंदता भई तिमसेती बहुत दिन बीते विचारी अमणता शक्ति होय जाय तब जादाकै कम गिणती करै सो पाचमा अतीचार ॥ ५ ॥ ए पाच अतीचार जाणणा पे आदरणा नहीं।

इति श्रीश्रावकव्रत निरूपण दिशिपरिमाणगुणव्रत प उद्योतसागर गणिनाकृत षष्ठमव्रतभाषा सम्पूर्ण ॥ ६ ॥

दूहा

अब सप्तमकी विधि रचु पालै भविजनलोग।
यह है गुणव्रत सप्तदू नामै भोगोपभोग ॥ १ ॥

अब भोगोपभोग गुणव्रत दुसरा, जे कारणै ए व्रत आदरणैसेती सचित चीजका खावणा छोडै। अथवा परिमाण राखै, तथा जिसमें बहु आरम्भ होय सो व्यापार न करै, बहु हिंसादिक अनर्थ करणी पडे ऐसे का त्याग करै अभक्ष तजै, इतने नियम इस व्रतमें लीये जाय, तिस वास्ते पाच व्रतोकी मजबुती है, तिसतै गुणव्रत कहीये। अब सली सब लिखे है। तिहा भोगोपभोग व्रतकै दोय भेद है। एक व्यवहार ॥ १ ॥ दुजा निश्चय ॥ २ ॥ तिहा भक्ष अभक्षकी समझि पायकर, और भी आश्रव संवर की समझि पायकै खानपानादिक इन्द्रिय सुखकै कारण उसमें शक्ति परमाणै बहु आरंभी तजै। अल्पारंभी कर राखै सो व्यवहार भोगोपभोग व्रत कहीये। तथा निश्चयसेती जो जिनवाणी सुणीकै वस्तुतत्त्वका स्वरूप पायकै विचारै जो जगतमें पराई चीज ले खावणी सो हराम कहीये, जो पराइ चीज खावै सो हरामखोर कहावै। तिस वास्तै जो नेकीके लोक हैं सो अपने हकक ही खाणैं, तिस राह बीच चल पराई चीजका सुपनेमें भी जीव न राखै। यं मैं भी शुद्ध चैतन्य भाव धारि परसमतपुण्यकी जाति होयकर सडै भी गिरै भी जाती भी रहै। ऐसै परपुद्गल के पर्याय है। जगतका जूठ तिसका भोग भुंजै हराम है। पराया भोगनीयै सेती जस नहीं, सामर्थ्य नही इस वास्ते परभाव छोडै। स्वगुणशुद्धि हूवै ऐसी समझि

उहा रात्रिमें छत्त दिवालप्रमुखमें आश्रित जीव बहुत बैठे हो। वे सता पमें व्याकुल हुवे अग्निमें पडे, तथा पतग प्रमुख जीव चक्षु इन्द्रियके विषय व्याकुल होय के अगनिमें झपापात जल मरें। छात छपरमें रात्रिमें सर्प्प गिलोई कुलायतरा मछर बहूत बसतें हूवे ऐसेंमें ताप लागे तब व्याकूल होय के सर्पादिक गरल डारे, व भोजनमें आवे, तब आत्माका घात हूवे। अरु दिनका कीया धरि रक्खा हूवे सो अन्न खावे उसमें भी चीटी प्रमुख जीव चढे उसकी खबरी रात्रिमें न पडे, वे खावे तब बुद्धि नाश वे, शास्त्र बीचभी कह्या है यथा पीपीलिका हन्ति इसवास्तै रात्रिको भोजन न करणा। अथवा जिमणा, ए सर्व निषेध कहे। ओर वासण मेलते करते रात्रि कू जीवकी रक्ख्या न चलै। अरु रात्रिके खाणवाले परभवें उलूक मजार मूसा सर्प वागुल चमचेडका भव पावे। धर्म दुर्लभ पावे। अरु आप रात्रि भोजन करे तब पुत्रपोत्रभी वह ढग पडै, कुचाल चलै, अशुद्ध परपरा चली जाय। अरु आप तजे तो पछले भी सुचारा चलै। रात्रि भोजनमें प्रत्यक्ष जीव हिंसा दर्शावे अन्य दर्शनीका जल बीजल ने आग धर्म पाया हता, ए जिनाना विरुद्ध रात्रि भोजन है, ए व्रत पण मुनिकू पचमहाव्रततुल्य कह्या उचराते है, ए वास्तै सर्वथा त्याज्य है अभक्ष्य है ॥ १४ ॥ तथा बहुबीज सो जिसमें गर्भतुच्छ अरु बीज बहूत सो तुच्छ फल कहावे, रींगण वनस्पति जाति विशेष पटोल खस-खस ओर पपोटा प्रमुख इन फलामें जितने बीज जितने जीव ज्यू टाक भरी निर्लीमें तेर मा जीव तो खसखसम तो उनमेती केइगुणा होवे इसवास्तै थोडा खाणे जीव घात बहूत हूवे। कछु उदरवृत्ति न हूवे। तथा रींगण प्रमुख बहुबीजी चीज खाने तो पित्तादिक रोग का हेतु है जिन आज्ञा विरुद्ध है इस वास्तै अभक्ष है ॥१५॥ तथा आचार जो भातिका आवलेलीबा पाडल नीबूका केर अरडा करुदा काकडी प्रमुखका ओर अद्रक जमीकद मिरमिर इत्यादिकका आचार अथवा राईडा दिन तीन उपरात अभक्ष्य है, तुच्छ है, त्रस जीवकी खांनि है। बील प्रमुख सो यौंगहसु अभक्ष्य है। उनका फिर आचार कैसा, विपथा किंरि यथाग्या तिमका रक्खु करणीमे नाखे चोथै दिन उसमें

स दोष गणदोप नहू है ॥ १० ॥ तथा विष जो अफीम प्रमुख चीज सो अभक्ष है। जे कारणे अफीमादिविष चीज खावणेसेती पेटके जीव कृमि गंडोलादि प्रमुख मर जाय। अर चेतना मुरझाए। फेर इस वास्ते की टेव पडे खावणेकी छुटे नही। मोताद वखत के वखत ना मिले तो बहुत रोग उपजे, शरीर शिथिल पडे, अर अमली को मत करणा दुस्तर हो। अर स्वभाव बदल जाय। अमल करे तब वस्तु और तरे अरु उतरे तब वस्तु और स्वभाव ओर स्वभावसे छोडी परवसि पडणा। अर खानेमे नही उसका, तथा अफीमादि विष खावणेवाला बडी नीति करे लघु- नीति करे तिस नालमें असंख्याता जीवकी हिंसा होय। जिहा ताई पसा रस। जावदा जाय तिहातक पक्षीप्रमुख जीव मर जाय उनकी गधसेती इस वास्ते यह भी अभक्ष गिणया जाय, सोमल वच्छनाग हरताल प्रमुख - जे चीज इसमे आइ ॥ ११ ॥ तथा कर गडाहा जो ओरा जो मेघ राधा भि गल उपरे गडेके मिले है, अशुद्ध द्रव्य है, इनमें भी वरफका जमा महादोष है जिनाना विरुद्ध है। इस वास्ते अभक्ष है ॥ १२ ॥ तथा खडी मट्टी नहूआनिकी प्रथ्वी सो अभक्ष जे कारणे इनमें भी असख्य जीव है, फेर ए चीज खावे सेती पेटमें बहूत जीवकी उत्पत्ति हुवे। इस पाडुरोग आमवात कबजी व पथरीप्रमुख रोग बहूत होय. बहुत मिट्टी खाय उसका मुख का चेहरा पीला होय सुरखी मुख की जाती रहे कोई जातिकी मिट्टी मे मेंडक प्रमुख जीवकी जोनी है। वे मरही पायें जीव सूक्ष्म उपजता होवे, तेमसे भक्षण करते पचेंद्री जीवकी भी हिंसा होय जावे। जिनाना विरुद्ध है, इस वास्ते अभक्ष है ॥ १३ ॥ तथा रात्री भोजन ता प्रत्यक्ष दोष निधान है। इह लोक दु ख हेतु है, रात्रे च्यारु आहार अभक्ष है जे कारण रात्री भोजन जो जैसा आहार उसमें ऐसेही रंगके तमस्काई के जीव ऊपजे, अर आश्रित जीव सपातिम बहुत जीव आय मिले। रात्रीमे भेल सभेलकी खबर न पडे, तथा प्रसग दोष बहूत लगे, जब रात्री खावेका दर होवे। तब नित्य रसोई करणी पडे तिहा जीवका सहार हुवे, श्रावककुलका आचार न पले, सूक्ष्म त्रसजीव निजर न आवे अरु जब निजर आया, तब जतना कछु न हुवे। अग्नि जलै

नीकी मरमाई रही है सो चीज वासी भई, बीच एक रात्रि व्यतित भई सो अभक्ष, मिठाई वर्षाकालमें अच्छी शुद्ध वेश बनी हूवे तो उत्कृष्ट पनरे दिनका काल है पीछे अभक्ष है। अरु जो उसका वर्ण गंध मिताची बदल गया तो काल पहिले भी अभक्ष है। तथा उष्णकालमें मिठाईका काल २० बीस दिन उपरांत अभक्ष, । तथा शीतकालमें मास एक १ काल उपरांत अभक्ष, तथा दही सोल प्रहर उपरांत अभक्ष है। पै एक राति बीतेकी आचरणा मठेका काल भी इसीतरे, इसरीतिसेती जो काल जिसका शास्त्रमें कथा है सो पूरा हूआ पीछे वह चीज चलितरस हूवे। इस वास्ते अभक्ष जे मांट चलितरस हूया। तब असंख्यात बेइन्द्री जीव उपजे, इस वास्ते त्याग हैं ॥ २१ ॥ तथा बत्तीस अनंतकाय भी अभक्ष हैं। जिस कारणे सुईकी अणी उपर कन्दमूल रहे। उसमें अनंत जीव है। सो सब सूक्ष्म बादर पृथ्वी पाणी अग्नि वायु अरु प्रत्येक वनस्पति ए सबजातीके सब जीवसेती अनंतगुणा जीव सुईके अग्रमें कंदकी जो रनी है उसमें अनंत जीव है इस वास्ते सब अनंतकाय अभक्ष है ॥२२॥ इति बावीश अभक्षका निवरण। अब बतीस जाति अनंतकाय लिखे है। जो भूमि नीचे कंद हूवे सो एसें सब कंदजाति अनंतकाय प्रथम ॥ १ ॥ सूरणकन्द जो जमीकंद ॥ २ ॥ वज्रकन्द ॥ ३ ॥ हरीहलदी ॥ ४ ॥ अद्रक जो कंद ॥ ५ ॥ हरयाकचूर ॥ ६ ॥ सतावरि वेलि औषधी ॥ ७ ॥ सोफआली ॥ ८ ॥ कुमारपाठा ॥ ९ ॥ थोहर जो सीज तथा लंका सीजकी जाति ॥ १० ॥ गिलोय ॥ ११ ॥ लसण ॥ १२ ॥ वसकेला ॥ १३ ॥ गाजर ॥ १४ ॥ लुणीयो ॥१५॥ लोढीपदमनी ॥१६॥ गिरमिर कच्छदेशे प्रसिद्ध ॥ १७ ॥ किसलये कोमलपत्ता जो नये ऊगते, सवगाळके पत्ता तथा सब वनस्पतिका जो अंकुर उगता, अंकूर प्रथम अनंतकाय हूवे, पीछे मोटे हूवे जब कोई प्रत्येक वनस्पति हूवे अरु कोई अनंतकाय रहे ॥ १८ ॥ खरसुआकन्द कसेर अनंतकाय ॥ १९ ॥ थेग कहींये मोथा केई जातिका ॥ २० ॥ हरी मोथा ॥ २१ ॥ लूणावृक्षकी छालि ॥ २२ ॥ खिलोडा ॥ २३ ॥ अमृतवेलि ॥ २४ ॥ मूला ॥ २५ ॥ भूमिरुहा कहींये छत्राकारे देशभाषा सांपका

नियमा ऍंद्री जीव उपजै । अर जो जठा हाथसे छूए तो पचेंद्री जीव उपजै । अन्य दर्शनीके शास्त्रमेंभी आचार नरकद्वारमें गिण्या है। इसवास्तै अभक्ष्य है सर्वथाम ॥ १६ ॥ तथा घोलवडा अभक्ष्य है। जे मागेरे दालने हूवे सो विदल धान जो कलाई बुट चोडा मृग प्रमुखका होवे ते वडे वरु कच्चे गोरस जो दही मठा उसमें डालै सो खाणा अभक्ष्य है जिस कारण विदल अरु दहीमठा सयोग मात्र तत्काल पंद्री जीव उपजै जो कछु चीज विदलकी हूवे सो मठे मिले अभक्ष्य है। अर विदलमें निमवास्तै अनाजकी दालि हूवे चीकनाइ न हूवे। विदल राय सरसवकी दालि हूवे पै विदलदोष नही उसमें चीकना है। इहा जो मठा गरम करे, विदलमें मिलावे तो दोष नही तथा दूधमी जो उष्ण न क्या हूवे तो विदलकी चीजमें रे साथ खानणा अयुक्त है। पद्रंद्री जीवकी उत्पत्ति हूवै, इसवास्तै विदल अरु कचा गोरस के साथ में चीज अभक्ष्य है। तथा बेंगणजाति अभक्ष्य है। जे कारणे बेंगणमें नद्द बीज है, तथा बीटमें त्रस जीव सूक्ष्म रहते है, अर काम सन्नाकू नदावे, मति धीठी करे, ए द्रव्य अति अशुद्ध है इसकी जाति सर्व जाणनी। और हरीको सूके खाणेकी आज्ञा है अर इनकी तो सूकीभी निषेध है। इसवास्तै निषेध अरु अभक्ष्य है ॥ १७ ॥ तथा अजानफल सो भी अभक्ष्य है। जिस कारणे अजानफल जो है, उसकी तरह गुण दोषकी मालिम नही। क्यु खाई जाय कदाचित निषफल होवै तो आत्मघात हूवे। व्यग्रचेतना हूवे इसवास्तै अभक्ष्य है ॥ १९ ॥ तथा तुच्छफल टींबरु जो बनवेर पीलू पीचू प्रमुख तथा अत्यत कोमल फल फली ए भी अभक्ष्य है। जे कारणे एचीज बहुत भी खायतो भी तृप्ती पूरी न हूवे। अरु पीछे बहुत दोष लगे, अर जो फल खायकर उसकी गुठली डालै, उसमें सम्मूर्छिम पचेंद्रियजीव असख्य उपजै । तथा बहुत तुच्छ फल खावै तिसकू सब रोग उपजै ए वास्तै अभक्ष है ॥ २० ॥ तथा चलित रस अभक्ष जिसका काल पूरा हूआ। स्वाद बदल्या, वेस जावे ए सो चलितरस कहीये कुथा मळ्या अन्नवासी रोटी सीरा कचोरी तरकारी खीचडी बडा नरम पुरी इत्यादि अनेक रसोई जीमने पां-

उदय अतिदुस्तर निवारिके बहुल वस्तुका परिमाण रख्या है। तिनमेंसे फेर नित्यका आश्रव निवारणे कू संक्षेप करणे कू चउदह नियमकी दिन प्रति धारणा रावे। तिहां प्रथम सचित्त परिमाण, मुख्य वृत्तिसे तो श्रावकू तो सचित्त त्याग चाहिये, जे कारणे सचित्त वस्तु अनाहार में त्याग गुण है। प्रथम तो प्रासुक जलादिक पीवते श्रीर सबका सचित्त का त्याग हुआ, जनताई अचित्त नहीं है। तब ताई मुखमां प्रक्षेप न करे। दुजा रसनेन्द्रियका जीतना हुआ रसाई स्वाद सचित्तमें हुवे तो भी न रावे। पेतीस चोज तो बिना पचाई स्वाद लगे श्रीर सबका त्याग हुआ। तीसरा अचित्त जलादिक पीवते कामचेष्टा जाति हुवे, घड़ी घड़ी उपयोगमें जीउ रहे रखे सचित्त हुवे। चौथा जितना द्रव्य जलादि अचित्त कीना, उनमेंसे जीव विराधना हुई चेतना इतनेमे रही और प्रतिवर्णे असंख्य अनंत जीवोत्पत्ति हुवे है, उनसे विरोधी भाव मिटो इत्यादि और भी बहुत गुण हे। पे केनेक यु कहे है। जो अचित्त करने में छकायकी विराधना होती है इस वास्ते एकही कायकी विराधना भली यू कहे के सचित्त त्याग नही करे तिणे जिनशासनका रहस्य नहीं पाया। जो सचित्त परिहारमें आत्मदमनता उद्धरय निवारणता सर्वविषयकषाय परणतिप्रमुख अनेकगुण हुवे। सो नहीं जाण्या। ध्यऱ्या बहुली हुवे है तिनमेंसे सचित्त त्याग में बहुत लाभ है। यु आगम में रहस्य बहुत सुक्ष्म है। जिनही छद्मस्थनीक मनी आगमका पार पावणा मुसकल है। जब हठ छोडीकर बहुत बुद्धिका खरच करे तब कछु पावे। इस वास्ते बाहिर अन्यमतिकी कुयुक्ति सुणिके मुनावणा नहि। जैनसैली अतिगंभीर है। इस वास्ते मुख्य विण सचित्त परिहारी हुवे ते नहीं हुवे तो सचित्तका परिमाण लज्यो, इतन सचित्त मुझे मोकले है॥ १॥ तथा दूसरा द्रव्यनियम तिहां धातुमय शिलाका पात्र प्रमुख तथा आपनी अंगुली प्रमुख विना जो मुखमें घाले सो द्रव्य कहीये। 'परिणामात रमापन्न द्रव्यमुच्यते। ए द्रव्य लक्षण कहे। तिहा खिचडी मोदक वडा पापट प्रमुख बहु द्रव्य निष्पन्न है तो भी गहूंकी रोटी तथा बाट गुध री पोली दोकली प्रमुख ए सर्व भिन्न द्रव्य कहीये। जे कारणे नामान्त

नसगा ॥२६॥ पयूलारी माजी ॥ २७ ॥ वरड़ा ॥ २८ ॥ मुग्वल्ली जो गन्धि वटी नाम जैसी हुवे ॥ २६ ॥ पल्लका माजिजाति विशेष ॥ ३० ॥ सेगल खारालीकी टेगड़ी बीन गरमें नही विहा ताई बांधि गी अनन्तकाय ॥ ३१ ॥ आलुकन्द विशेष, रतालु पींडालु ॥ ३२ ॥ तिलफूल ॥ ये बत्तीस सामान्य अनंतकाय जाति नाममात्र कहा। ओर विशेष तो जि . । कोई वनस्पति पंचाग अनंतकाय है । कोई वनस्पति फल अनंतकाय है । किसीका पत्ता अनंतकाय किसीका फल अनंतकाय है । किसीका छाल अनंतकाय, किसीका मूल अनंतकाय है किसीका पान अनंतकाय है यूं किसीहीका एक अंग, किसीका दोय अंग किसीके तीन अंग किसीका च्यार अंग, किसीका पांच, किसीका सब अंग अनंतकाय है। जिसमें अनंतकायके लक्षन लिखे है, तिनसे अनंतकाय पहिचानी जाय सो लिखे है। जिसके पत्ता फलप्रमुख की सीरा जो नस मालिम न पडे गुप्त हूवे । जिसकी सधिकी मालिम न पडे, जिस के फर गुप्त हूवे ना ताड़नेसे बरोबर भागे, जो छेद्या थका बरोबर भागे। जिसमे पत्ता मोटा गुहद जैसे हूवे सचीकन हूवे, जिसमें कोमल बहुत फल पत्ता प्रमुख ए सब लक्षन अनंतकायके है। इति बत्तीस अनंतकाय। इहा अभक्षमें अफीम आदिप्रमुख जो खावा ना चाल हूवे सो रक्खे उसकी जयणा। रात्रि भोजन मास प्रतिदिन ४ अथवा ५ अथवा मासमें पंचतिथदिन टाले। और जैसी सगती माफक रक्खे। एते दिन आहारकी जयणा, उपरात निषेध ओर दिन तिविहार दुविहार करू वा चोविहार करू। और अभक्ष जो औषध भेषजमें आवे कोई दिन तिस री जयणा। बत्तीस अनंतकाय निषेध, रोगादिक कारणे औषधमें लेणेकी जयणा, अजाणपणे किसी द्रव्यमें मिल्या थका आवे, तिसकी जयणा है।

हवे चवदह नियम विवरणा लिखे हैं। गाथा। सचित्त १ दव्व २ विगई ३ वाहण ४ तंबोल ५ वत्थ ६ कुसुमसु ७ वाहण ८ सयण ९ विलेवण १० बंभ ११ दिसि १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ ॥ १ ॥

अर्थ—श्रावकें जावजीव पंचाणुव्रतमें इच्छा परिमाण कोई आ गलि कर्मपरणति अनेक तरेकी संभावना करिके अथवा निर्वाह समर्थ

रक्खूं । अथवा ये पन गिणै सो समुचय वस्त्र नी सख्या रक्खूं । जो आजके दिन इतकी सख्यायें मुझे वस्त्र वात्ररखा है ओर नहीं । भेलसभेलपणे अजानसे बदल पहिरणेमें आवें तिसकी जयणा । इति छठा वस्त्र नियम ॥ ६ ॥ अब सातमा पुष्पभोग नियम कहे सो सिरमें रखनेके लायक, गलेमें पहिरणे लायक, फुलकी सिज्या, फुलका तकीया, फुलका पंखा, फुलका चद्रूवा जाली प्रमुख जे जे चीज भोगमें आवें छडी मेहरा किलिगी फुलकी, ओर तोरा इत्यादिक अरु फुलकी जातिमें जो सुगंधी भोगमें आवें, उनका मुझे इतना द्रव्य गिणतीका माकला । इतना फुल नाकमेती वास लेवें । इतनी जातिका देहीकी भोगमें, ऐसा नियम उपयोग राखि करी जेसा पले, ऐसा तोल वजन गिणती गमें व्यापार प्रमुख जमी अपनी शक्ति हुवे तैसीतरे राखे । इति कुसुम नियम सप्तम ॥ ७ ॥ अथ अष्टम वाहन नियम सो रथ गाडी गज घोडा पालखी उट बेल नाव प्रमुख जिसपर बेठिके जहा जाणा हुय तहा जाय। सो वाहन तीन जातिका–तरता ॥ १ ॥ फिरता २ चरता ३ । उसकी सख्या रख लेवें । ए नियममें कोसखेडणा और क्षेत्र समरावणा चकडोल हिंडोल चढणा, उस प्रमुखके चक्रमें बेठना ए सब आवें । इस वास्ते उनकी सख्या रख लेवें । जो इतनी सख्या वाहन आजके दिनमें चढणा सो वाहण नियम आठमा ॥ ८ ॥ नवमा सयन कहीये सिज्या तिसका नियम राखें । सेज खाट छोटी मोटी तखत पोस लकडका तखता चोकी तथा भूमिपर तूलिका रूडकी भरी सुख सिज्या एतेका परिमाण जो आज दिनमें इतनें कामभोग मुज आज कल्पे । ए नियम रक्खूं । इतनें बिछावनें उपरके ओर पलिंग पोस प्रमुख ओर आसन खुरसी उपर बिछावणेका चौकीदार पट्टा प्रमुख इन्द्रका सबका छोटे मोटे सब उपयोग धरिके रखणा । और भूले चूकीकी जयणा । इसी तरे सेती शक्तिमाफक रख लेवें । इति शयन नियम नवम ॥९॥ अथ दशम विलेपन नियम । सो भोगके अर्थ इतनी केसर इतना चन्दन चोवा अतरजआदि तेल फुलेल कसरी कस्तूरी अबर, अरगजा जो जो अगरू लगावाका कथा। तेल क्या अतर तिसका नाम धारिके गुलाबका अतर अथवा अम्बरका फितनेका

र भ्याउन्तर स्वरूपांतर परिणामांतर सेती द्रव्यांतर हूय । अथवा इहा
केइ आचार्य और तरे भी द्रव्यनियमा कहे छै । पै वहु वृद्धि परंपरा
समाचार नहीं है । इस वास्ते द्रव्य परिमाण रावे । जे एते द्रव्य आ
ज के दिनमे खाणा ए द्रव्य नियम दूजा ॥२॥ तीजा विगयमे विगय दश
१० । तिनमे च्यार महाविगय हे मधु १ मांस २ माखन ३ मदिरा ४।
ए च्यारका तो श्रावक अभक्ष में त्याग है । बाकी छविगय भक्ष है।
दूध १ दहि २ घृत ३ तेल ४ गुल ५ सर्व मीठा पकवान ६ ए छह
विगयमेसे एक दोय तिन छोडे, और की जयणा । उसकी नीवियाती
पांच पांच जातिसें एक एक विगयके है । जब विगय त्याग कीया तब
नीवियाती भी तजे चहीये । अरु जो न छोडे जाय तो उसही वसत धार
लेवे जो मेन विगयत्याग लेवे है पिण नीवियासकी जयणा, इति वि
गयनियमतीय ॥ ३ ॥ अथ चोथा उपानह कहीये जूतीका नियम। जू
तीकी जाति पतल जूती खडाऊ मोना चमाऊ प्रमुख ए जीव हिंसाके
वडे अधिकरण है । तिहा श्रावक कू चित्तप्रमादि कारण विना खडाऊ
पहिरणा नही है । अरु जूती विना तो चलनेका समर्थ नही है । इस
वास्ते उसका परिमाण लेणा, आजके दिनमे इतनी जूतीका जोडा पहि
रनेमे । औरकी जूती पाउमे धारू नही। अरु जो भूलिचूक पाउमे पाउ
पडे तीसरी जयणा, इति उपानहनियम चोथा ॥ ४ ॥ अथ पांचमा
तबोल नियम, सो चोथा आहार स्वादिम नामे तिनमे पान सोपारी ल-
वंग इलायची तज तेज पत्ता सीतलचीनी जायफल जावत्री पीपलामूल
पीपरप्रमुख किरियाणा जिनमेती मुखशुद्धि हूये पै उदर पूरणा न हूवे
सा चीज स्वादिम आहार विशेष तबोल कहीये, उसे परिमाण कर ले-
ज्यो आजके दिनमे तबोल जो मुखसे सेर अथवा अधसेर मुजे खाणा
एसा रखे । अथवा सख्या रखै । जो एती चीज तबोलमे खाणी। ए
तबोल नियम पांचमा ॥ ५ ॥ छ । वस्त्रनियम सो स्त्री पुरुषके पाचो
अंगके वस्त्र भी वेष कहीये उनकी सख्या जो आजके दिनमे एते वेष
मुज पहिरणा अरु एते छुटे वस्त्र वापरणे, ज कारणे रातै पहिरणेका
तथा स्नानादिक करणेका वस्त्र वेषकेमे गिणा जाये नहीं इस वास्ते जुदा

रक्खें । अथवा वे पन गिणे सो समुच्चय वस्त्र की सख्या रक्खें । जो आजके दिन इतनी सख्यायें मुझे वस्त्र वापरणा है ओर नहीं । भेलसभेलपणे अजानसे बदल पहिरणेमें आवे तिसकी जयणा । इति छठा वस्त्र नियम ॥ ६ ॥ अब सातमा पुष्पभोग नियम कहे सो सिरमें रखनेके लायक, गलेमें पहिरणे लायक, फुलकी सिज्या, फुलका तकीया, फुलका पग्गा, फुलका चद्रूया जाली प्रमुख जे जे चीज भोगमें आवे छडी सेहरा दिलिगी फुलकी, ओर तोरा इत्यादिक अरु पुलकी जातिमे जो सुगधी भोगमें आवे, उनका मुझे इतना द्रव्य गिणतीका मोकला । इतना फुल नाकसेती वास लेंवे । इतनी जातिका देहीकी भोगमें, ऐसा नियम उपयोग राखि करी जेसा पले, ऐसा तोल वजन गिणती गमे व्यापार प्रमुख जेसी अपनी शक्ति हुवे तेसीतरे राखे । इति कुसुम नियम सप्तम ॥ ७ ॥ अथ अष्टम वाहन नियम सो रथ गाडी गज घोडा पालखी उट वेल नाव प्रमुख जिसपर बेठिके जहा जाणा हुय तहां जाय। सो वाहन तीन जातिका-तरता ॥ १ ॥ फिरता २ चरता ३ । उसकी सख्या रख लेवें । ए नियममें कोसखेडणा और छत्र ससरावणा चरडोल हिंडोल चढणा, उस प्रमुखके चक्रमें बेठना ए सब आवे । इस वास्ते उनकी सख्या रख लेवें । जो इतनी सख्या वाहन आजके दिनमें चढणा सो वाहण नियम आठमा ॥ ८ ॥ नवमा सयन कहीये सिज्या तिसका नियम राख्ये । सेज खाट छोटी मोटी तखत पोस लकडका तखता चोकी तथा भूमिपर तुलिका रूडकी भरी सुरत सिज्या एतेका परिमाण जो आज दिनमें इतने काममोग मुज आज कल्पे । ए नियम रक्खे । इतने विछावने उपरके ओर पलिंग पोस प्रमुख ओर आसन सुरमी उपर विछावणेका चोरीदार पट्टा प्रमुख इन्हका सबका छोटे मोटे सब उपयोग धरिके रखणा । और भूल चूककी जयणा । इसी तरे सेती शक्तिमाफक रख लेवें । इति शयन नियम नवम ॥९॥ अथ दशम विलेपन नियम । सो भोगके अर्थ इतनी केसर इतना चन्दन चोवा अत्तरजवादि तेल फुलेल कमरी कस्तूरी अबर, अरगजा जोजो अगर लगावाका कथा। तेल कया अत्तर तिसका नाम धारिके गुलावका अत्तर अथवा अम्बरका कितनेका

रामरामरा इत्यादि रा मरणा करि राखै । अथवा उँगटरा तिमरा भी १२ इसीं म करि त्यागके दिन इतना तोलका मुझे चाहीयैगा, सो राख लेवै । तेरा नियम है । ब्यार विलेपन भी मन तोलमें राखै । इति विलेपन नियम त्याग । इहा पूजादिक कार्यमें हाथप्रमुखमें लगणा है, अर सिरमें तिलकका करणा तिनसेती नियम न भागै । और नियममें गरगातजी धमर हेतु अधिक करणेसेती भी नियम भग नहीं ॥ १० ॥ इग्यारमें ब्रह्मचर्य नियम सो श्रावक दिनमें अब्रह्म सेवा तो प्रायं निषिद्ध है । रात्रिकी जयणामें अथवा परिमाण करै श्रावकै दिन रात्रि म एती एती बेर ब्रह्मचर्य की जयणा । इहा हास्य विनोद आलिंगना दि स्त्रीसेती सो मनहींमें मैथुनक्रिया लागे । जैसी शक्ति ऐसा भांगा राखे । कोई श्रावक रात्रि चउविहार करता हुवै । अर रात्रिमें एकान्त ध्यानकी चाल हुवै जब जापकी रुचि बहुत हुवै सो दिनमें गृ जाणै रात्रि क विषयसेवा करिके अशुद्ध हुय कै जप कैसे करू। अर विषय रोग की लगन लगी है सो भी परिणाम कू बिगाडे है। इस वास्ते दिनमके विषै विकल्प मिटाउ, पीछै शुद्ध होय कै रात्रि निश्चिंतपणे स्वस्थ चित्त जप करू । एसी बुद्धिसेती दिनहू विषय सेवै रात्रि न सेवे । इस वास्ते किसी क दिनमें निषेध रात्रीकी जयणा । किसी कू दिनकी जयणा रात्रि निषेध, अर किसी कू रात्रि दिन दोनूही जयणा पैं गिणती राखे । जो रात्रिदिन होयके एती बेर स्त्रीसंग भोगसेवा करस्यू, जैसी शक्ति होय एसा राखै । इति ब्रह्मचर्य नियम ॥ ११ ॥ बारमें दिगदिशिका नियम, सो दश दिशि जाणे आवणका परिमाण जो जैसी शक्ति जैसा प्रयो जन ऐसा राखै । इहा अन्यदेश उपदेश आदमी भेजवेका कागदका बा-चणा लिखणा ए मन इनमें आवै, पीछै जैसा पले तैसा राखै । इति दिगनियम विवरण ॥ १२ ॥ तेरमा स्नान नियम सो दिनमें तिलादिक अभ्यगनपूर्वक स्नान करणा । सो उनका परिमाण जो इतनी बेर दिनमें स्नान करूगा । इहा देवपूजानिमित्ते अधिकस्नान करणा पडै तो भी नियमभग नही है । ऐसी सर्व मर्त जत बीच धर्महेत क्लमरेश करै, उनमेंतीं नियम भग नहीं । इति स्नान नियम विवरण ॥ १३ ॥ चव

दमा भातपाणीका नियम, सो च्यार आहारमें स्वादिमका परिमाण तो तबोल नियममें परिमाण रख्या है । अरु बाकी तीन आहार है । उसमें स्वादिम मीठा मेवा मिष्टानपान मोदकादिक, असनमें भात रोटी कचोरी सीरा, तिसका परिमाण गाये । तिनमें एता मेरकी जयणा, इहा घरमे बहु परिवार है, उनकी खातर बहुत असनादिकका करणा करावणा पडे उनकी गृहस्थ कू छुटानी नही है इस वास्ते उनकी जयणा, तथा पर घर जाति प्रमुख सगप जिमण कू जावणा पडे तिहा तो केई भया भात प्रमुखकी रसोई बनाई होवे पे नियमधारीकू उनका दोष नही । तिस वास्ते आपके खाणेका परिमाण रखे, अरु परिणाम स्वइ होवें तो परीमाणमें अधिक पचन न जीमें सो तो बहुत भला । ये सब गृहस्थसेती न पले इस वास्ते यथाशक्ति राखे, तथा पाणीका परिणाम जो दिनमे पे तो कलसनारे इहा बहु परिवारवत कू पाणी प्रमाण स्वनिष्ट भोगकी सूरत राखणी । समुदायकी भेल मभेलकी छुट नही है । सो छुटा रखे सो बहुत भला है । इति भातपाणीका नियम ॥ १४ ॥ इहा जो अधिक मावत साधक हुव, सो सचित्तादि परिमाणमें द्रव्यपरिमाणमें नाम लेने रख्य उन कू बटी निर्मल, अरु अशक्त कू तो सामान्यकरण है । इति चवदे नियम स्वरूप । *अथ पनरह कर्म्मादान स्वरूप लिखे है, कर्मादान सो व्यापार करने पापकरम गाढे बधन हुवे ऐसा व्यापार कर्म सो पापकर्म उसका आदान जा ग्रहण है जिस व्यापार में उसकू कर्मादान कहीये । इहा ममारम पाप तो सबहि व्यापारमें हुवे है तोभी आरम व्यापार-सेती ए पनरह कर्मादान व्यापारमें बहुत पाप अरु मलिन परिणाम हुवे । परभव पापकी चाले । इसवास्ते श्रावककू अवश्य त्याग है, कदापि न छुटे आजीविका उनमें लागी होय तो परिमाण करिले । तिहा प्रथम इगालकर्म सो लकड जलायके कोयला करे वेचे आजीविका उपजावे सो इगालकर्म, । ऐतलेके इगालकर्म ऐतले कोईतरेकी भट्ठी करे इट नीप जावे कुभारकर्म, लोहारकर्म, सोनारकर्म, भ्राभारकर्म, बगटीकार, शीशाकार, रुनारु भठीयारा, भरभुजा, हलवाइ, धातुगालकप्रमुख जो अग्निसेती नितनादे व्यापार है सो इगाळकर्म । ए व्यापारमें बहुत दोष है । ते

सारौं पानि सबना मुख्य पात्र है । च्यारू दिशि उर्ध्व अघो सगले जायौं जीवका अवश्य हणै इ वास्तै अनाचरणीय है । इत्यगाल भर्म प्रथम ॥ १ ॥ दूमरा वनकर्म सो छेदा अणछेद्या वन वेचै, बगी चार पलवा वेचै, पा फूलफल कदमूल निणकाए लकडी वसादिक व्यापार, तथा परी चीजका जो व्यापार सोभी वनकर्म, तथा खेती व्यापार करणा ए मन वनकर्मकू करणा आजीविका निमित्त लगा अगिमेजी लेणा, करसणी कैनाई धानमे वधता लेने वो भी वनकर्म तथा धान पीसावै सडावै भरडावै एभी इनके व्यापार है । ए वनकर्म च्यारा सगे वनस्पति अरु वनस्पति आश्रीत त्रस जीवकी अवश्य निराधना हुवै इम्तवास्तै वनकर्म अनाचरणीय है । इति वनकर्म ॥ २ ॥ तीजा साडीकर्म सो शकट नडा गाडा वहिल सो अनसारीका रथ इका गाडी ढोगी, तथा नावजाती जरा पलवार महिलगिरी उलाक ममलीया प्रमुख तथा हल दताल, चरखा, घाणी प्रमुख इनके छोटे मोटे अग धूसरा चक्की प्रमुख उगली मूमली मर्व बनाय नवे वेचै, वेचावै, खडै रहित, सो वनकर्म शकटकर्म ए बडे हिंसाके कारण है, अनाचरणीय है । इति साडीकर्म ॥ ३ ॥ चोथा भाडीकर्म सो गाडी वहिल उट पोठ गंगा गदह खसर गोडाना रथ सुखपाल डोली प्रमुख आप रावै, औरका भाड देवै, आरका भार ठौड पहुचावै । तथा घर दुकान वस्त्र व भरवार प्रमुख अपनी हुवै, परकू भाडै देवै । तथा सार्थवाहको व्यापार हुडा भाडाका व्यापार ए सवही भाडीकर्म मैं, जो भाडा अपनी चीजका लेवै अपनी चीज आरकू सुपै सो भाडीकर्म इनमै बैल घोडा प्रमुख जीवका नाटनाडी महादुःख उपजै, अरु चलवेमै मार्गके त्रसादि जीव हिंसा अवश्य हुवै । अनाचरणीय है ॥ ४ ॥ पाचमा फोडीकर्म सो कुवा खणावणा तथा तलाव हौद वावडी नीकै इत्यादिक तथा हलका खेडन करणा मगत्रास पै पत्थर फोडावणा, हीरा रतन रगडावणा पत्थी करावै, घाट करावै नरसावै मूहरा वहरखाना कावणावणा, तथा जव धान्य सुट प्रमुखकी दाल करावणी चावल करावणै इत्यादि सब फोडीकर्ममैं तथा इगालकर्ममै भी आवै, पृथ्वीदारणमै पृथ्वीकाय त्रसकायके जीवकी हिंसा

है और जीवकी अपघात वै कलामणादि यह पाप हवै इस वास्ते ए कर्म त्याज्य है। ए पाचू कर्म है। महा हिंसा तिणमें छाडणा ॥५५॥ अथ पाच कुवाणिज्य लिखै है। तिहा प्रथम दतवाणिज्य सो हाथीका दात उल्लु के नख जीभ कलजी और पखीके रोम तथा पर कलिगी प्रमुख की चमर गौके पूछका तथा हिरणके सिगडा प्रमुखके सींग और सख कोडा कौडी कस्तूरी जवादि माती बाघका चर्म, बाघके मुछके केश, मावर सींग कचकडा किरमजदाणा रेसम उन नात नमभ प्रमुख जो त्रस जीवके अग उल सींग इ सबका व्यापार दत वाणिज्यमें आवै, ए वा णि घमें तत आगरमें जावै अग लेणेइ नव ते ल्योर शूद्रभिल्लादिक तत्काल हस्ती गेंडा प्रमुख जीवूकी हिसामें प्रवर्तै। महा पाप अनर्थ करे आपना भी परिणाम उहा मये मलिन प्रवर्ते, लोभके हेतु उन व्यापमु कदापि करणा पडै हमारे नाई अच्छा दात वे भारी वै मोटा वै तैसा आण देयोगे तो और बधता मोल पावैगे तब व्याध इनूके कहणेसेती ज्यादा कर्मकरै ऐसी तरै मन द्रव्यमें जायगा, तिस वास्ते मत चीज व्यापारीमें लेणा पिणा आगारमें न लेणा। आजीविका करा जोइज तिम वास्ते कुवाणिज्य तजणा। एक हस्ती मरे तब दोय दात पावै। एक गौ मरे तव पूछ एक पावै। ऐसी तरै मन गिणी लेणा इति दतवाणिज्य प्रथम ॥ १ ॥ दूजा लाख कुवाणिज्य सो लोह, धाहडी, नील, मानीसार, साबू, मणसिल, लोह सोहागा पडवास रसुवा कपीला तूर्या उस सब खार की जाति उनका जो व्यापार सो लाख वाणिज्य कहावै। तिस लाखमें प्रथम त्रसजीवका समूह विना लोह उपजै नही पीछै भी जब रग नीकालै तब भी अस्र ऐसे सडावै, तहा भी त्रस उपजै, महा दुर्गंध रुधिरका सा त्रस उपजै। धाहडीमें भी आश्रित त्रस जीव का है उपुया बहुत वर्म, अरु मदिरा का अग है नील भी प्रथम सडावै तिहा त्रस जीव ऊपजै उनकी हिसा करै तब नील उपजै पीछे नीलके कुडमें त्रसजीवकी हिसा बहुत केवल नीलके रग पहिरै तिसमें भी त्रसजीवइ जूं लीख उपजै इस वास्ते जहा तहा हिंसा हेतु है तथा खाल मनशिलादिककी वासना सेती त्रसजीव मखी प्रमुख मरे,हरताल मणशिल मारनै जतना रखवै नही तब वासनासेती मरै, रुसी शाम पडवास प्रमुख पण तिहा जो कामसें...

[illegible] ॥ इनके तीसरा घात हुवे है । इनमें आगे पीछे त्रसकी हिं [illegible] वास्ते त्याज्य है । इति लाख कुवाणिज्य ॥२॥ तीसरा [illegible] सदा मास ० च्यार महाविगयकी जो [illegible] दही घृत तेल गुड खांड प्रमुख रसीली चीज उनका [illegible] रसवाणिज्य कहावे, इहां रस वाणिज्यमें च्यार महाविगई [illegible] हुई है, जिस वास्ते सदा त्रसजीव संयुक्त है सो हुवे है । [illegible] हिंसा है । तथा दही दुध घृतादिक संचिकरण रसीली [illegible] भाजन खुल्या रहे । तहां भी बीजा जीव छोटा मोटा [illegible] कोइ जीव नहीं । दोय दिन तांइ उपरांत दहीमें त्र[illegible] उत्पत्ति हुवे । तेल घृतादिककी गरमेती बहुत चींटी प्रमुख जीव पडे अरु आया सो लिपट जावे बचे नहीं । जिहां घृततेलादिका [illegible] नमी चीकनी मेली हुय रहे उहां फिरतां त्रसजीव वे सो [illegible] व्यापार महा हुवे तिहां तिल टीमी सावराप्रमुख सदा पीलावणा हुवे । तिहां जब फागुणमास उपरांत मास हुवा तब अवश्य तिलादिकमें त्रसजीव बहुत उपजे तब वे जीव संयुक्त तिल्ली पीली जाय जीवनी साथ पीली जाय तेलरी चगस करे उहां भी अनेक जीव त्रसकी घात हुवे यु आगे पीछे बहु जीव हिंसा हुवे तथा गुड चीनी मिसरी प्रमुखमें मिठाइके योग सेती बहुत मखी चींटी चिहुटा बहुत जीवका संहारका हेतु है । तथा खाण्डी चीनी चोमासेमें अभक्ष है तिस कारण आर्द्रा नक्षत्र लगे जब से खाण्डी चीनीमें असंख्य जीवोत्पत्ति है । च्यार मास अशुद्ध है, अरु जब व्यापार हुवे तब असंख्य त्रसजीवकी हिंसा हुवे तथा मोम भी बहुत जीव घातबिना नीपजे नहीं अरु पीछे भी बहु हिंसा कारण है मामवत्ती रंगाराप्रमुख कार्यमें अधिकार हुवे, अधिकरण कार्य है तथा मुरब्बा पाक रोगान अतर अर्कका व्यापार भी सब इनमें आवे, केतेक रसवाणिज्यमें इंगालकर्म यंत्रपीलनकर्म विषकर्म रसवाणिज्य इतनेका दोष एकमें लागे, इस वास्ते रसवाणिज्य निषिद्ध है । इति रसकुवाणिज्य त्याज्य है ॥ ३ ॥ तथा चोथा केशवाणिज्य सो द्विपद मनुष्य दास दासी गुलाम आजीविका हेतु लेई स्वदेशमें वेचे तथा गो भैंस घोडा

उट हाथी बैल बकरी पाडा गद्धा तथा पखीमें बाज कुकडा कूही बहिरि सिकरा लाल मैना मुरगा तोता मोर सुरख पीदडी तीतर पचेंद्री पखी जीव वाकू आजीविका हेतु लेवै वेचै सो केशवाणिज्य कहावे, ए केश वाणिज्यमें दामदासी तिर्यंच प्रमुख जीव कू तो प्रथम स्थान कुटुंबका वियोग पडे, अरु जिहा ले करी ओर कू देवे उहा उन कू नित्य पराधीनपण अपना मन की कछुई असर भी नई ओर तिर्यंच जीव कछु मुखसु बोले सो नही अपना दु.ख है के सुख है, जन्म पर्यंत विचारे बधमें रहे, बहुत कलपे, बहुत भुख प्यास है, उसपर फेर जो लेवे सो निरपराध मारे मार मरे, बहुत बंधनादिक बहुत दुख पावे, पखी भी पंजरमें पडे बहुत दुख मानै है सिकरा बाज बहरी ओ तो महा हिंसाके हेतु है नित्य पर-माम विना रखा न जावे इस वास्ते केशवाणिज्य भी धर्मरुची है जो श्रावक तिम कू त्याज्य है ॥ ४ ॥ तथा विष कुवाणिज्य पाचमा जो सोमल बछनाग अफीम मनसिल हरताल गाजा भांग चरस तमाकू प्रमुख तथा हथीयार तरवार धनुष्य कटारी बरछी तोमर फरसी कुहाडा कुद्दाल छुरी पेस कबज बंदूक ढाल गोली दारू बगतर पाखर जलमटोप जिनके बलमेती संग्राममें मजबुत हुवे, तथा हल मुसल उखल कुश कुद्दाल दताली नरवत दाव दात छीनी नाल गोला हवाई कुहुरुयात प्रमुख सब हिंसाके अधिकरण उनका जो व्यापार सो विषवाणिज्य कहावे । इहा शिष्य प्रश्न करे है । सा अमलप्रमुख विष कू तो विष कहे पै धनुषादिक हथीयार कू विष क्यु कहो हो, तब गुरु कहे सुणि तत्त्व नहीं पाया । जो विषसेती काम हुवे है सो इनसे भी हुवे, विष मारया उस कू तो कोई उतारी भी सके पिण शस्त्रका मारया तो कोइ बचे भी नही तथा जब हथीयार लेवे तब विषरूप परिणाम हुवे, ज्यू ज्यू जलदशस्त्र हुवे त्यू त्यू खुश हुवे, तारीफ कर मोल लेवे, अगलेका परिणाम विगडे इस वास्ते विषरूप कहीये । ऐ विषवाणिज्यमें बछनाग है सो तो एकेंद्रियादिक पचेंद्रीयपर्यंतका घात करे है । सोमल तो उनमें ज्यादा है जो खावे सो बहुत कष्ट पावे, मरके दुर्गति मे जाय, विष खायके जिस गति ऊपजे उहा भी विषरूप हुवे, ज्यु क्रोधसेती विष खावे तो मरके साप हुवे.

व होरी ज्ञातमें उपने इस वास्ते फलमें भी विष पावें तथा विष वस्तु गन्ध-मती और नाग हूवे, हरताल मनसिल पांनीमें पीस्या है उसपर आण मरगी रहे सो मिताव मरें, अफीम भी जब खावें तब आत्मघात करें उसके शरीर का मलमूत्र गिरे, उहा त्रस थावर जीव हुणे चेतना मुजावें, दुर्ध्यान हुवें, दुर्गति जावें, तथा भाग प्रमुख भी चेतना कू मुजावें शरीर भोगनादिक अग्निनि वढावें, अब्रह्मचर्य बहुत सेवावें, असत्य वढावें। तनकी दढता जावें, कषायवृद्धि करें तुच्छपणो आवें निद्रा वढावें, मति अज्ञानता करें, अच्छी तबीयत कू वदलावें निर्घमी हुवें, और निंदा वाचालपणो वढावें। मुखसेती वचन निकालतो आवो पाछो न जोवें, चित्त भमीमी अवस्था लगें, आश्रित बहूत जीव कू हणावें इत्यादिक इहलोक दु:ख, परलोक दुर्गति गहनमें पडें इस वास्तें विष कहीयें, सब हथियार तो प्रगटही पापहेतु हैं इस वास्तें विषवाणिज्य निषेध है। इति विष कुवाणिज्य स्वरूप ॥ ५ ॥ एतलें पाच कुवाणिज्य हुवा, ए सर्व दश थया ॥ १० ॥ ❀ अथ सामान्य कर्म कहें। तिहा प्रथम यत्रपीलन कर्म, सो घाणी कोल्हू चरखा चरखी चीमा उखल मूसल रहट सारणी रेंगडी यत्र सराण जलयत्र पातालयत्री आकाशयत्र डोलिकायत्र प्रमुख जो जो काष्ट पाषाण लोह वस्त्रादि अनेक अनेक अगमिलापसेती जो जीव घात-कारी पदार्थ हूवें सो यत्रपीलनकर्म। ये यत्र पीललकर्ममे बहुत आरभ हैं, घाणयत्रमें तिलादिमिश्रित त्रसजीवघात हुवें, इसी तरें इक्षुपीलनकर्म यत्रमें भी अनर्थ जीवघात है। यू जो यत्र है सो मुकर्रर करिकें जीवघात हेतु है। इस वास्तें आजीविका वस्तु यत्र पीलनकर्म निषिद्ध है ॥ १ ॥ दुसरा निर्लंछन कर्म कहे, सो बैलकें नाक फाडावें, घोडे कू दाग दिरावें, गौ बैलकें कान कटावें शृग छेदावें पूछ छेदावें उंट पीठ गालन नासावेधन बैल घोडे कू खसी करावणा इस दिवाय खोजो करावे, तथा कोतवाली खिदमत करें। नया कर करें ईजारे लेकर आकरा कर करें, चोर धाडिस सामासे छेडिखडी करें। मनमें चाहे, मेरा नाम होवें, इस वास्तें निर्दयशस्त्र चलावें इत्यादिक बात सरस काय होय सो करें, सो निर्लंछन कर्म कहीयें। ए निर्लंछन कर्ममें बहूत पचेन्द्रिय कू कदर्थना होवें घात

हूवै अपना परिणाम च अतिनिर्दयपणो हुवै। उनमें दुर्गतिपात हावै, इस हेतु यह निषिद्ध निर्लंछन कर्म ॥ २ ॥ तथा तीजा दावाग्निदान सो केतेक जीव मिथ्यात्वी अरु अग्यानके जोरमें विपर्यासी कहै, ए वन बहुत होय गया है, भिल्लादिक दु:ख पावते हूवेंगे, इस वास्ते दव लगाय दीजे तो जलके हुवे, बडा धर्म होसी। फिरि इनके नया कूंपल नीकलेगी फलेगी, फूल फल खावेंगे, धर्म होयगा, ऐसा उपदेश दिरावे देवे और वनदव दीये थके धरती माताका बोजा उतरेगा, जगा खाली हूवेगी, धान निपजैगा, खेती नवी नीपजेगी, लोक सुखी होवेंगे, और त्रिण काठ जूना जल जायगा, और नवे त्रिण रसभर हूवे तब ए गोरू वाछरू सुख सेती चरेंगे, और जली भूमी विषै धान अच्छा नीपजेगा। मूढ मातवरी ऐसी दिखलावे, लोभकी लगनमेती पापकर्म करतो सके नही, और डाकायत चोर भील का मेवासा मिट जायगा, ऐसी न्याय रीतीसेती दव दीरावे, धनकटी करावे, तथा आजीविका हेतु बडे बडे वनगहन जिहा पैसणा नीकलणा दुष्कर पडे, तिसमेंती भी वन कू अ मिसरकार करे तब त्रस जीव व्याघ्र, भालम चीता गेंडे सब भाजि जावे अपना स्थानक छूटे, सर्पादिक, भुज परिसर्प, और भी कोडी मकोडी प्रमुख तो सर्व हणाय ऐसा मनमें नावे। यही जीविका पातक चढेगा सो नही अरु कहे दव दीए सेती सुखे फिरिणा आवणा हुवेगा, पहच्छा (पथ) अच्छा हूवेगा। ऐसी हिंसा निश्चै नरकगति कू पहूंचावे, यामें सदेह न करणा, इहा केतीक चीज व कही की जमीन में फानसा गुलाब वालोड ककडी इत्यादिक वनस्पति नवी निपजे तब पहिले जमी भ दव देवे जमीं जले तब वे द्रव्य उपजे सो भी दवदान इस में आवे इतने व्रती वै धर्मरूची ऐसा उपदेश न देवे और पास न दिरावे। इति दव दान कर्म तीजा ॥ ३ ॥ चोथा शोषणकर्म कहै सो जो सरोवर वाव तलाव द्रहप्रमुख कू शोषावे पाणी कू बहार कढावे। तब मिथ्यामती अज्ञानी लोभान्ध वे विपर्यास बुद्धिसेती धर्म धर्मबुद्धि बतावे तिहां लोभी अपना स्वंरस धानके हेतु जल बहावे ऊख बहुत त्रिसाई है। सोयही तलावका खेत्रमें ल्यावो धान निपजे पछे कीच रहै, वास्ती, तिसमें जलजीव मत्स्यादिक बहुत त्रसजीव अवश्य भूख तापसे मर जाय।

तथा मामार्थी दुष्ट लोक मन्छात्निकनी धान करें। तथा मूढ प्रमुखिमा जा यु कहै ए पानी गुदला है गया है मो पाणी कुं गाग दृता, इमवास्ते अगीला पाणी बहुत ढांकरा है, तथा अन्य जल आवेगा पिण यु न जाणे इनने जीवरा सहार काटाम्हारी हुवेगा ऐमा न विचारे। तथा करेरी मीगध हाय मही उमकू खुलाय के ओर अच्छा पाणी आवेगा तब पीवेगे, आमरा ऐसी अधर्मबुद्धि कीया कहे पुण्य व्है एम शोषणकर्ममें ममझ न करे न करावे इति चोथा शोषणकर्म ॥४॥ पाचमा असती पापणकर्म मो कौतुक अर्थे असती जनावर कुत्तादि पाले निशिक पाले मुरगादि पाले ओरमी जीवरू कौतुक अर्थ बधनमे रखे। पक्षी जीवरु पृथ्वी ओर पशोंकी हिमा करे तिमकू पाले, तथा दुष्ट भार्या दुष्टपुत्रादिकक माहमेती पापे। मार जट न गिणे ज्यु क्रू करे उनके खुमी करे तथा वेश्यांके खातर दामदामी पोषे मामी असतीकर्म तथा माळी कमाइ नागरी चमार प्रमुख बहु आरभी जीवने माथ व्यापार करणा उनकू द्रव्य खरची देणी मो भी दुष्ट जीवरा पालणा हुआ, इहा थोडेकी खातर बहुपाप सिरपर लेने इमवास्ते निषेध, इहा अनुकम्पार्थ श्वानप्रमुख जीव क कीण प्रमुख कू वस्तु देणा मो पुण्यहेतु देणा जिमरा दोष नही, अरु अपने महलमें जा जीव हुआ उनरी खबर लेणी तब लोककीर्ति तथा नीतिमाफक बाप कुटुम्ब की भरणा पोषणा करे उममे को दोष नही है। इति असति पोष पाचमा ॥ ५ ॥ इति १५ पनरह कर्मादान कथन। अब स्वर्णकी कर्मादानकी विगत लिखे है। इहा खालकर्मकी आजीविका निषेध है इमवास्ते न करे ता भी गृहस्थ है निरविशेष छोड्या जाय नही इमवास्ते उनकी ममझी करले। अपनी मगति माफक विचारे। कथा मासादि गढारणा, घाट करावणा भिक्षा पडावणा नवावणा प्रमुख उपरान्त रख तथा वस्त्र जो अग्नि पर्क रगमें रगावणा उनका मान राखे। तथा इट चूना घर काय लेणेरा आगार, व्यापार निषेध, उनमें भी जो अपनी खातर इटप्रमुख लहीना होय एमें ॥ कोई मरधी मांग तब देणा पडे, उमकू कीमत माफक पढमें लेणे पडे उमका आगार तथा भडभुंजे घर कुटुंब मरभी करावणा पडे उनका नव प्रत परिणाम करे। मरेरो ना पान्य गरखा ना अभमण वा मणप–

यंत्र मसाण गावें, अधीकर्मकी चीज लेणे देणेमें आवे उसके अग्निकर्म करणेका आगार उसकू बेचणेका आगार और निषेध ठठेरा लोहार प्रमुखमें घरमनधी वासण कुसण सुख करावे तिसका आगार। लज्जादाक्षिण्य कुटुम्बादिकाय माहाज्यकी आदेशादिककी जयणा ॥ १ ॥ तथा वनकर्ममें घर मनधी तेल घाडे उट प्रमुखकी खातर घास प्रमुख खरणेका मगावणेकी जयणा, धर्मार्थे खातर उत्तर प्रत्युत्तर देणेका आगार ॥ २ ॥ साडीकर्म धचि नाव गाडी छकडा रथवहिल जो घरका हुवे उसकू समारणा पडे उसका आगार, तिसका बलीते लाय वहू और तिसका बेचणेका आगार मोकला, लेहणेमें आया उसकू रखे या बेचे तिसका आगार ॥ ३ ॥ चोथा भाडिकर्ममें अपना घरहाट नाव गाडी प्रवहण प्रमुख भाडे देणेकी जयणा तिसका भी आगार ॥ ४ ॥ फोडी कर्ममें अपना घरमाधी कुवा भुहिरा टाका तहखाना करावणेका आगार, घर की खाली कू करावणेका आगार घर करावणेका तथा जवहरका व्यापार घरमनधी नग घाटघूटकी खातर ताडावणा फोडावणेका मोती वींधा वणा तथा घरकी खातर पत्थरखानी खुदावणी घाट घडावणा पडे उनकी जयणा। लज्जा दाक्षिण्य माहाज्य करणा पडे उनकी जयणा, घर खरच फाडीकर्म जो हो जावे उनका आगार मोकला। इति फोडी कर्म पांचमा ॥ ५ ॥ छठा दंत वाणिज्यमें घर खरचमें आवे मोगरे आदि खरचमें लेणा मगावणेका आगार और व्यापारका रिवाजमें रखा हुवे उसकी जयणा लेणे देणे और सरमराकरणेका आगार इति दंतवाणिज्य ॥ ६ ॥ सातमा लाख वाणिज्यमें भी दंत वाणिज्यवत् [illegible] घर खरच होवे धार्य पडे तिसका आगार ॥ ७ ॥ आठमा रसवाणिज्य घरखरचमधी जो रखा है उनकी जयणा, लहणे [illegible] री जयणा, लज्जा दाक्षिण्यसेती फुरमाणी [illegible] पडे, उनकी जयणा, तथा अपनी तयार चीज किमही [illegible] माल वर्तमान माफक मूल लेकर देणी [illegible]। इति रसवाणिज्य आठमा ॥ ८ ॥ नवमा केश वाणिज्यमें [illegible] देतु [illegible] व्यापार निषेध, घरमधी पशु बेचणेका [illegible] आगार, घरमें [illegible] ोता [illegible]

निमित्त घोडाप्रमुख वेचकर और लेणेका आगार कोई सगारी उचित घोडा प्रमुख खरीद कर देने का आगार राजादि प्रमुख करणे कु कोई जातिके चतुष्पद वेचाती लेकर निस्तरणेका आगार, फुरमासी केशवाणिज्य नाचाले सरभरा करणेका आगार ॥ ९ ॥ विषवाणिज्य गुमा जो जो आगे व्यापारमें रख्यें हुवे तिसका आगार तथा घरखरचमें वा विष चीज औषधमें आवे तिसका आगार तथा अपनी मानकी खातर घरखरचीमें जो जो शस्त्र आवे तिसके रखणेका आगार, नह करा वणा सममरणेका समावणेका आगार। लेहणे आवे उनकी जयणा इति ॥ १० ॥ यन्त्रपीलण अग्यारमा कर्म ॥ ११ ॥ जो जो व्यापार आगे रखे है। उस व्यापार में जोजो यन्त्रपीलन क्रिया आवे उनकी जयणा तथा घर खरचमें जो जन्त्रपीलण आवे उनकी जयणा। तथा अपने अगके रोगादि निमित्ते अक्षर चोका प्रमुखका यन्त्र तथा रोगादि कारणे कोड औषध करणेका यन्त्र करणे करावणा पडे उनका आगार लजा दाक्षिण्ये फुरमासी अहृट करणा पडे उसका आगार है इति यन्त्रपीलन कर्म ॥ ११ ॥ बारमा निर्लेछनकर्मका व्यापार निषेध है। पें कोइ राज्य अधिकारी कहीयें आग्रह करिके कहे उनमें जो आवे उनका तो आगार तथा घरसबधी पशु बालादिकक्कु करणा पडे उनका आगार। लहणे आवे उसकी तजवीज करणी पडे तिसकी जयणा। इति निर्लेछन कर्म ॥१२॥ तेरमा दवदाननिषेध जो राह बीच रसोई प्रमुख निपजावतें कोई वताम (वायु) प्रयोगे जतना करते अगनि वनमें प्रसर जाय उसकु बुजावणेकी शक्ति नहीं तो मैंशक्त ऐसे न भाने, छती समर्थाई गई न करुगा घरखरचमें कोई गीतें कार्य करणा पडे उनकी जयणा। इति दवदान ॥ १३ ॥ चउदमा शोषणकर्म, जो सरोवर द्रह तलाव सुकावणा निषेध घरप्रमुखका कुआ गलावणेका आगार नदीमें नेरी करणी पडे उनका आगार और भी घरसबधी कार्यमें निम महिलेमें रहे है उसमें उचित पचकी सरासरी कार्य निमित्त खरच देणा पडे पाणी पीवणे खरचके निमित्त अगला शोधाय नवा करणा तिसमें कछु खरच करे तिसका आगार। इति चउदमा शोपणकर्म ॥ १४ ॥ असतीपोषण घरसंसारसबधी न छूटे तिसकी जयणा, चाह करिके न धारू। परिग्रहपरिमाणमें पशु राखे उनकु पोष

णका आगार तथा मेलेछादिक राजामेती व्यापार आजीविका अर्थे आहा
रादिकै पोपणा पडै उनका आगार अपनी गरज माटे अछुट करू ।
तथा अपना उदीकभानसतो मिल्या जो पापकुटुंब उसका भरण पोपण
करणेका आगार । ए अनतार सफल जाणु नही तथा लहणेमे आवे
उसका प्रतिपालन पोपण करणेका आगार अनुकंपा बुद्धि थानादिक
पापणेका आगार इणरतीमेती पनरह कर्मादान दोप तजू पै पनरह कर्मा-
दानमे जो चीज परसरथ दाक्षिण्यता सबंध इत्यादि अष्टपर्ण लहणे,
लहणाप्रमुखमे आवे ते कारणे कर्मादान क्रिया करणी पडै उनकी जयणा
इहा जो कर्मादान करते हे उसमे एकेक कर्मादान मे और दोय तीन
च्यार मिलते आवे उनकी जयणा । इति पनरह कर्मादान निगत ।
अथ सातमा व्रतके पाच अतिचार लिखे है । सचित्तमेती मूल भागे तो
श्रावक कु सचित्त नियम हुवे, नही तो सचित्तकी मरया करणे । तिहा
सर्व सचित्त परिहार अथवा अचित्त अथवा सचित्त परिमाणयुत हुवे
अर कोई अनाभोग दोपमती कोई सचित्त आहार करे तथा अपरिमाण
तो जल मे तीन उकाली पानी उपर आवे तव शुद्ध पानी भया । उसमे
एक दोय उकाले पानी अपरिणतोदक कहावे यह पानी अचित्त हूवा
ऐसे जानीकु पीवे तथा सचित्त फाग करते काचा रहे, उन कु भी अ
चित्त बुद्धिमेती खावे । श्रावक कु सचित्त चीज अचित्त करणे कु शस्त्र
अच्छी तरे लगे तदपीछे अतमुहूर्त बाद खावे तिहा अचित्तकी बुद्धिमेती
सचित्त खावे अथवा अनाभोगादिके खावे सो प्रथमातिचार ॥ १ ॥
तथा दूजा सचित्त प्रतिबद्ध अतिचार, सो जिस कु सचित्त नियम है सो
गाछमेती तुरत उखेल्या गेरमती गुद प्रमुख खावे सो तहा गुद तो अ
चित्त है । पिण सचित्तकै स्पर्श लग्याथा सो दूपण है, तथा आम पकका
समुच्चे सहित मुखमे मेले है सनम उपयोग एसा जाणे मैने तो ए फल
पक्के चूसे है ए अचित्त सर्व इनमे क्या दोप है एसा उपयोग न जाणे
अवर गुठली सचित्त है । इस वास्ते सचित्त त्यागी होय सो ऐसी चीज
अचित्त बुद्धिमे खाय तब दूसरा अतीचार लगे ॥ २ ॥ तीजा अपक्व अ
तिचार सो जो अचालित आटाप्रमुखको अगनि सस्कार नही कीया है
अर कच्चा ही आटा फाके जे कारणे श्री सिद्धान्तमे आटा पीस्या पीछे

जेतलेक दिन सचित्त मिश्र रहे पीछे अचित्त हुवे ते लिखे है श्रावण भाद्रव मास पांच दिन तोडी अणछाण्या सचित्त मिश्र रहे पीछे अचित्त हुवे । जेष्ठ आसाढ तीनप्रहर मिश्र रहे आश्विन मास च्यारदिन मिश्र रहे । कार्ती अगहनमें अरु पोष ए तीन मासमें तीन दिन मिश्र रहे । माघ फागुणमें पांचप्रहर मिश्र रहे । चैत्र वैसाखे च्यार प्रहर मिश्र रहे पीछे अचित्त रहे । इस वास्ते रस्या आट्टा अणछाण्या अचित्तकी बुद्धिसें खावे तब तीजा अतीचार ॥ ३ ॥ चोथा दुप्पक्व आहार सो रंध्या पचा वत्ता अधपक्व जौ सब जातिका होला धुंगरु ऊबी ज्वारिका सिंग रन्या सो अग्नि सम्कारसें पका अचित्त हुवे केताएक भाग सचित्त रहे उसकूं अचित्त बुद्धिसे जाणे तब अगनी मस्कार तें अचित्त जाण खावे तब चोथा दुप्पक्व अतिचार लगे ॥ ४ ॥ पांचमा तुच्छौषधि भक्षण सो तुच्छ कहीये असार निसेस्याले सेती रस्ता नहि न हुवे जिसतांई आरम्भ बहुत जैसे गांडा प्रमुखकी अतिनीकी छीमी उनके खायेमती रहा आमाकी तुंस प्रबल न भाजे । अरु प्रमादसें दोष लागे कोमल वनस्पतीमें कोईतो अनन्तकायकी सत्ता रहे स्मगृध्यपर्या थये कोमल फली फल प्रमुख सचित्तकर खांणेका भी व्यवहार नहीं है इस वास्ते गांडा प्रमुखकी रसकी फली खावे मनमें जाणे गोडकी फली तो मुझ खावणी है यू जाणेकर खावे । पै यू न जाणे तुच्छौषधि भक्षण पाप लगे । इति पांचमा अतिचार । इति श्री द्वादशव्रत विवरणे सप्तमा भोगोपभोगव्रत प उद्योतसागरगणिनाकृत भाषा संपूर्ण ॥ ७ ॥

दूहा

द्वादशव्रतकी टीपमें रह सात निरधार ।

अष्टम अनरथदण्ड का अब लिखु सुविचार ।

प्रथम अनर्थदण्ड सो जो सप्रयोजन धनधान्य क्षेत्रादि नवविधि परिग्रहसंबंधी हानिवृद्धिरूप जे कारणे धनवृद्धि निमित्त ससारी जीवकूं बहुत पापकारण करणा पडे तो सार झूठ बोलणा हुवे पापके उपगरण मिलावणे पडे मनसेती कीया चाहीये, अनेकविकल्परूप आर्त्तध्यान करणा पडे ज

कारण धनादिपरिग्रह आजीविका हेतु है इस वास्ते धनवृद्धिनिमित्तो जेजे आरंभ सेवन तो सेवन ता सप्रयोजन है इस वास्ते अनर्थ दंड है यूही धनहानि हूवे तब भी ऐसा कारण पायके गृहस्थकू वे धनहानि करणेकू अनेक विकल्प करणा पडे पापस्थानक सेवणा पडे वे भी अनर्थदंड है जे कारण ममाणि सुयका मूलका कारण व्यवहार है तो धन नहीं है इस वास्ते उसकी खातर दण्डाय सो अनर्थदण्ड तथा अपने स्वजन कुटुंब परिवारादि तथा आदर जो जो आश्रव पापस्थानक सेवणा पडे सो भी अनर्थदण्ड है। जे माटे जिहां ताई कषाय प्रबल निरास नहीं तिहां ताई स्वजनादि पास छूटे नहीं। ममारमें इन्द्रियसुखकूं पुष्ट हेतु स्वजन है व्यवहारमें हेतु कहावे है अपने सुखे सुखी अपने दुःखे दुःखी इस वास्ते उनकी खातर पापस्थानक सेवे सो भी एक अनर्थदंड है। जे माटे ससारी जीव पुद्गलविलासी पुद्गलानंदी है। प्रबल अविरति कषायोदय सेती इनकू छोडी सकत नहीं है। अरु पचविधि भोगसेवनसेती केतीक-कालें इन्द्रियतृप्ति रहे आत्मा प्रमुदित रहे सो भी अनर्थदंड है। ए च्यार प्रयोजनमें जो कोइ प्रयोजन होवे नहीं अरु पापवृत्ति करे सो अनर्थदंड निष्कारण कारण जिहां आत्मा स्वाये दुःकर्मका वृद्धि हुइ सो अनर्थदंड कहावे। इनके च्यारो भेद है सो लिखे है। तिहां प्रथम अपध्यान अनर्थदंड ॥१॥ पापोपदेश अनर्थदण्ड ॥ २ ॥ हिंसप्रदान अनर्थदंड ॥ ३ ॥ प्रमादाचरित अनर्थदंड ॥ ४ ॥ तिहां अपध्यान अनर्थदण्डके दाय भेद है। एक आर्तध्यान १ दूसरा रौद्रध्यान २ तिहां प्रथम आर्तध्यानके च्यार भेद तिहां प्रथम अनिष्टसंयोगार्त ॥ १ ॥ इष्टवियोगार्त ॥ २ ॥ रोगनिदानार्त ॥ ३ ॥ अग्रसोचनार्त ॥ ४ ॥ तिहां इन्द्रियसुखके विघ्नकारी अनिष्टशब्दादिक त्रिहकाल उनके संयोगकी चिंता रहे ए मुजे अनिष्ट शब्दादिक कबहू मिले। ॥ मुजे नवविधि परिग्रह मिल्या है उसका कदे वियोग पडे अथवा इष्ट जे वल्लभ मातापिता स्त्री पुत्रमित्र प्रमुखका विदेशगमन वा मरण हूये बहुत चिंता करे साय पीवे नहीं वियोग दुःख सेती आत्मघात चिंतवे आदरे सारादिन गुसेमें रहे तथा धर्म कपूत है ए भाइ वेद्धिलें [illegible]

मुनमती उसका कछु उपाय पाउ तो भला है, ख़ी विचारे मोत मेरी भडी मिली है भर्तारकु बोलते है विते ऐसे भर्तारकु मुझसेती जुदाइ करावेगी इस वास्ते इनका कछु उपाय पाउ तो भला हूय जाय सेवक चितव जा स्वामीके मुह आगे फलाणी पेस चढा है मेरी लाभम करेगा मेरा राही चिते है सो मारेगा स्वामीकु कछु जुठ साच कहेता रेगा मेरी चाकरी छोडावेगा तब मे क्या करुगा इसका कछु उपाय पाउ तो भला है उसके निग्रहकी खातर कछु जत्र मत्र कार्मण मोहन वसीकरन हुई कोई जुठा साचा उसका कछु छिद्र ताके। जलता आल देवे। लोक के मुख आगे उसका बुरा बोले । उसके निग्रह करणवाला कोई छै, कोई धूर्त जटिल प्रमुख उठी बोलयो फलाणा जमनीयघात करनलिदान करे। तो शत्रनिग्रह हुवे तब ते मूर्ख सो भी जीवघात करे उसका मस्त वाछे पै मुह सुं न विचारे तू अपने शुद्ध भाग साच दिल सेवा करेगा तो तुजे कोन निकालेगा पुण्योदय ह तब ताइ कोई बुराकरि शके नही । यू आरती जठी विचारे इत्यादिक सर्व सनर्थ ससारी अनर्थ दडार्थ छै तथा आगमी अपनी आतुरतालेती विना अशुभ कारण मिले पिण आगेकु मनमे दुविकल्प करे जे दुश्मन के कुलके बीच फलाणा समर्थ पैदास हूया छै सो मुजदु ख देगा इसवास्ते ए गनवागादिक आवर इसकी जाय दड पावे तो भला होय, बहूत तस्दी पावे तो ए गाम छोडिके भाग जावे, इनका कछु भी छिद्र पाऊ तो फलाणे कु कहू वे रानद्वारमे खबर करू तब तस्दी आपसे पावे एसी विचारणा मुढ करे। अरु उसके दिलमे कछु भी नही है पिण अज्ञानी ऐसे अनर्थमे पडे और भी तथा मूढ विचार ए खबरमे चोर बहूत भये इनकु हाकम छानी कोन खबर चोर जब अपने दाव आवे तब सबकु निग्रह करे तो भला हूवे, यह चार क जहालगी पूर्वपुण्य उदय प्रबल है तहा ताई उसका कछु भी विणसे नही पिण यह कनिकपनाला जो चितवे है तो उसकु चोर मारणेकी क्रिया है, हिमाकी आर्तध्यानकी बैठी और फिर कोई मातबर हूया है अपनी बह बराबरी करेगा, हमसे पाव आगे धरेगा, इसवास्ते ऐसा इलाज इस हरामनादेका करावणा फिर उठाव कहाड इसकी दाद फिरियाद लगे

नही इत्यादिक बैठा अनर्थ विचारे पिण मुरख एह विचारणा दिलमें न विचारे मेरे कहे क्या वेगा इसका पापोदय प्रगट वेगा तव आपसेती होतव्य मिटैगा नही तो कांई रु इत्यादिक अपध्यानार्त्त अनर्थदंड है विना मतलब पृही पापजाल पोतै बांधे ॥१॥ तथा रोगनिदानार्त्त जो रख्य मेरे शरीरमें कबही रोग हवे मत रोग दूर रहै तो भला है ऐसा विचारे किसीकु पूछे फलाणा रोग क्यु कर होता है तब कहे फलाणे चीज खावे तो विकार होता है, अरु फलाणा अभक्ष्य खावै तो कबही हुवे, तब वे अभक्ष्यादि खावे ओरकु वतावे तथा जो शरीरमें रोग उपना तब बहुत हायहोय बहुत करे बहुत आरंभ करे बहु द्रव्यव्यय करे हा हा मेरा रोग यह कब जावेगा, घडी घडी पलपल वीच जोतिषीकु पूछै मेरे दिन केसे है, यह रोगव्यथा कब मिटैगा, और वैधकु पूछे महाराज मेरे दिल वीच वडी सका है तुमसे करतव्य आता है नही, मेरे उपर किसीने जादु कीया होयगा, फलाणा मेरे उपर खुणस रखता है, सो मेरे उपर किसीने रगत हुवे तो वैसा जोशे ऐसे रीतिसे नई नई शका धरे, रोगकी खातर, अब यह कुलनिरुद्ध धर्म आचरे अभक्ष्य खाणेकु तयार भया अब आकारणी करणेकु भी लागा उनके मन सोचे में अब सदाई यह रहै जो कोइ रोग छेदनेकी वडी औषधी मत्र जंत्र उतारा झाडा हजराइत ए मनहीकी चाह रखे ए चीज किसही वगत मेरे काम आवेगी ए सब कामकी है । इसकु अपने पास अमलमें राखीये तो अच्छा फिरी हाथ ऐसी चीज नही चढेगी तब ऐसा जाणिके जडी बुटी सब एकठी करने लागा ए सब रोग निदानार्त्त ॥२॥ तथा अग्रशोच आर्त्तध्यान, जो आगलै कालकी चिंता करे, जो आगले सालमें ए विवाह यच करुगा तथा ए महिल हवेली ऐसी तो बनाऊगा सहूको देखकर सर्व अचम्भा पावैगा। तथा फलाणे खेत बगीचा बोयावेग, ऐसा मैं भी बनाउगा जो ओर सबके बगीचा उसके आगे नाकारे होय जावे, सब दुस्मनकी छाती जले, ऐसा बनाने तथा ससोदा कीया है सो आगे बहुत यह मुहगा होयगा, तब हम अपना मुह माग्या मोल लेउगा, और किसी पास ऐसा नही पावैगा चूवेगे अरु लेवेगे ऐसा वचन आर्त ध्यानमे बोलै, तब इतना

पैसा हाथ मार लेंगे अब क्या फिकर है ऐसा दिलमें आगेमें सावे। तथा ए चीज जनर चाहै कोईके पास नही है। कोई अच्छा सिरदार गरा पातिसाहके ठिकाणे दिखलाईये ता वे भी चाहकर लेवे, ऐसे मे पना भी कर चघे सिरपाव मिले, अपना भी काम होय आवेगा, प इसे अच्छे मुह माग लेंगे तब ऐसी मान मांगे लोक बखतही रहेंगे ऐसे हूया ना है नही, अब पहिलेसु इ मगन होय है घाट कसे आगेके वाधे है। आगे क्या आगोंपे क्या होयगा चीजमे नफा मिलेगा के नही चीज रहा कोई जावेगी, ऐसी ता खबर हैही नही, वातु उतो कसे ता साधे जाये यह भी आर्तध्यान, ज सरा मेरे घरमें नाज सगद बहुत है, अर अगली सालके चिहन मोटे है अरु पतरों भी ताले यही वहते है था गला साल घटा निपध है तिससे न्यारमाणा जो कोई रखेगा ता न्यार स्नटी अच्छी मिलेगी, अवश्य दुकाल पडेगा तो भी रघुगा नही तब धानमें तिगुणा भी नफा मिलेगा ना भी नही बचे ऐसे जाने जाते धान सान हमारा मन मान्या वेगा तब अठगुणा उपर आगे वान रखा देगा तब पैसेवालोंकी वान निकलेगा तब पैसा बहुत मिलेगा तब फिर नाज अगरमें भरावेंगे तिसमें और भी मिलेगा ऐसे द्रव्य बढेगा लाखु की मौना करेंगे फेर भेरतरेका व्यापार करेंगे। अपनी तिजरमें मन व्यापार है मन मेली सहिरम है तिसही मे दगाऊसें नही तिसही साहिरमें साहकारमें सट्टा २ वट्टा लगावेंगे तिसी जागा अपना गुमास्ता रहेगा, वहांकी हुडी लिख देवेंगे ओर तिहां उ१ सा ह श साडा लगावेंगे अथवा किसी सिहरमें कोई चीज अपनी समझसे लीनीयें इससे उसमें चरम धपली जावेगी कोई वर्ष च्यार पाचमें लखी कोटी धजुनामती माल रहे रहे अपना भी नाम सहरमें सिरे होवेगा, अब आसान हाय जायगा किसही कू खातर मे नही ल्यावेंगे, ऐसेमें कहाइ सागाइ सारीका भी जाग मिलि जाय तो बहुतही अच्छा, तो इहांही नवार हवेलीया इहांही फिर बनावे। लटकवाले सनहीका जोग मिलि जावे मनके मनोरथ मनही फले। दुश्मनु का छाती उपर कीया साहिरसा तो मुग दले बहुती रीति वे एसा राजद्वारमें नीमा सूर हूवेंगे तब अपने प्यार अपनाय कू

वडारेंगे मुदीपूरू निस्लाय देंवे तव अपना जानता ऐसें मनकें चाहें सच करेंगे भोगविलास करूंगा अर जो यहा सादी हमारी भई तो बहूत खुसबस्ती करुं कबही स्त्रीयादिक अपने जीवमें गुम्माकर बेठेंगी तो तब उसकू मनावेंगे अछी अछी तरें के तास जरी योंगे गहिना पहिनावेंगे इत्यादिक मनकल्पना जूठी साची बांधें। बहुत कर्म उपार्जे तिस ते यह आरतध्यान छोडी अरु धर्म करणी करें आगले भवकाल जो इन्ह भवें धनसमृद्धि जमप्रतिष्ठा मान महत्तत चाहें परभवें देवत्व इद्रत्व पदवी चाहें ए पहिला अग्रशोचनार्त्त ध्यान कहीये। तथा रौद्रध्यानके च्यार भेद लिखें हैं। सो जाणणा, तिसमें पहिला हिंसानदरौद्र ॥ १ ॥ मृषानदरौद्र ॥ २ ॥ चौर्यानदरौद्र ॥ ३ ॥ संरक्षणानदरौद्र ॥ ४ ॥ तिहा प्रथम हिंसानदरौद्र जो त्रसथावर जीवकी हिंसा करिकें अपनें दिलमें हर्ष करें बहूत आरभकी चीज घर हवेली बगीचा बनाके पीछें उसकी तारीफ लोककें मुखसु सुणें मनमें बहूत खुस हूवें जो मैंने ऐसा अपनी ओकूय यतमें ? कैसा काम कढिकें कराये सब लोक तारीफ करें हैं हमारे जैसी अकलका फलाव थाइ जणाता हायगा मेरा पैसा खरचें लगा सो म यही सफल भया, तथा रसोई खानेकी प्रमुख चीज बनावें सो तिस में बहूत भातिकी मसाला भक्ष्यवस्तु केई अभक्ष्य मिलावें, अनेक अग्निमस्कारे देकर अच्छी वस्तु बनाई। अब सबकू बुलावा दे करि के न्याती जाति मिजमान प्रमुख कू जिमावें तब वे रसिए लोग भोजन करिके रसोइकी तारीफ करें अरू कहें ऐसी वस्तु बनी बहूत बेर याद होयगी भाइजी पिण आजका तो मजा ऐसा बन्या क्या तारीफ करें जितनें मसालें दीये हैं तिनकी रसमोई बहुत ही सुपीयारी लगें है, ऐसी रसोइकी तारीफ बहुत सुणनेती मनमें खुस हूवें अरु फलाने मजमानी करी हूती तिसकें नाम टें निकलें थें, यरु हम वैसा भोजन कीया, सब तारीफ करें हैं, फिर ऐसा मोसर पावेंगे तो फिर भाइबधकू बुलायके अछी तरें सेती जीमावेंगे, तथा रात भोजन अभक्ष्य चीजकी नकल बनायके उसका आसय धरिकें खावें मिलावें तब रसीया जीमण वखाणें, तद जाणीजें सब सफल भया अरु हम भी खुस हूवें, जैसा हमसरीसा कोइ भी भोगी नही है। अथवा राजविग्रहयुद्धादिककी वार्ता सुणिके खुसी हूवें, ए

भला कीया। यह राना समसर बहादर है, आगें भी इनके पिता दादा पातिशाहिसें बडे मरहर थे, अरु सीपाईगीरिमें बडे मजबूत हूते, जिनके पीछे ए इनके वडेरन उस जगा फतें पाई। जिसा भी खाली करगया ऐसें मनमानहर आगणवाला है। बडे अकल बाहादर है। बडे बडे सुमीया कुमार दुस्मनकूं मारकरके हुतसब कूं सिर नमाय करके चो तरफ अमलका डका बनाया था अब भी सब जुवान ऐसे ही हैं। एणु की जहा जहा चोरी है तहा पता चीजका काई मालीक नहीं रहता है। तथा और क्या यह फलाणा सुभट एकली चाटमें अर कूं मारलेंते, आप एकिला निर्भय रहकर आंदेकु चोर टालना आर क्या हायगा, साबाश साबाश कहे, और दुस्मन कू मृया सुणिके खुस होवे, मोरगी यारह है। मुछे हाथ फेरे। अच्छा समलें हाथुका, मुगस रन। हरामखोर हमारा पुण्य ते मर गया। ऐसें ऐसें कूट कपट नाथे। यह परस न रवे मारणवाला तू कौण, उ-सकी भवस्थिति आणपूरी अइ उन्हें भीमो भोगसी, एक दिन तुन्हभी गह यही पकडोगे, इसका झूठ गर्व करणा तिसमें कछु भला नही, अरु ना तु मारता ता इतना दिन कयु नील करी तो ऐसी विचारणा हिमा नन्द रौद्र ध्यान कहीयें। ए विना मुतलब कर्म बाधना ॥ १ ॥ दूसरा मृषानंद रौद्र कहे है जो जुठ बोलिके हर्ष पामें, जो मनमें विचारे, मैंने कसी बात बनायके कही, या सबने कबूल करी, मेरा कपट किसहीने नही जाण्या, और कू ऐसी कला नाने, ऐसे बडे बडे अकलवान हूते पिण काई बोल सक्या नही, मैंने सबहीका जवाब स्वाल कीया, बोलमें तो बडी करामात है, बोल्या तो कछु काम करता है, इसही बखत हम नही हुते तो इसके क्या इलाज हुता, इन सबूकी गति हुती, ऐसी तो पूंछ तथा दुस्मनकी भी जुठी तोमत देवे, दुःख पावे तब हर्ष, मैंने कैसा होर कीया है। तथा अपने फरजन्द सबकी आगें बाता बनावें अब मुरगा तुस्क्या करोगे, हमने कैसें कैसें कैल कीया, ये किसीको मालुम नही है, आपका फैल छोड जाण तब अकलकैसी तथा दरबार नायके चुगली करता गराका स्वार्थ करेंसे हय, मैंने राजा कू कैसा वसी कीया है। एसे ऐसे मनमें विकल्प करें इत्यादिक मृषानंद रौद्र कहींये ॥ २ ॥ तीसरो चौर्यानंद रौद्र कहींये। तीसरो चौर्यानंद रौद्र सो

ग फीर यही रात गरचमें आय जाय तो तुम्ह कहते यह, ओपधीकी तरह तारीफ करते मो हमरा एक मोताज भी टेर्णामें नाहे। तुम्हारा उल्हाना रहता तिम खातर आन यादगीरीमें आये अब वह कहे हम उपर भारियनें वडी कमबखतमी करी तुम्ह हमारी खबर लेवो नहीं तो कहा लेवे ऐसी तनकीनमें पडमें वात बनायकें लेवे वडा बोज देकर आगलेंस लेणा मम होणा इत्यादिक विकल्पना बुरी करणी यह भी चार्यानन्द रौद्र कहीये ॥ ३ ॥ अब चौथा सरक्षणानन्द रौद्र कहै सो लागगा, सरक्षणानन्द कहीये सो जो परिग्रह धनधान्य बहूत भडांने फेर अधिकका चाह करी पाप कुटुम्ब पोपणेंके नाई परिग्रह वढायणेका बेहद बुद्धि विचार आगे लोकनिन्दादिककी अपेक्षा न करे, यू करते पापपरिग्रह कोई प्राचीनपुण्यसती पावे, बहूत मिले तब मनमें खुस वे, देखो मैने ए मन एक चावने कीया। ऐसा कोण खरचनार हुवेगा, मेरे जैसी दौलत मिलावेगा, एसा अहंकार कर मगन रहे फेर चेतना उसी परिग्रहमें लगी रहे, कोई राड उस परिग्रह कू नुकसान होय द्रव्य कू वडा-लकर रखे तालीप्रमुखकी खबरदारी रखे रात्रि कू नींद नाही, सगा पुत्रका भी विश्वास न करे, पुत्रादिक कू कहे तुम्हारेमें कैसी अक्कल है मति मारि गई हे तुम्हारी, तुम्ह ने उद्यमी हो वे अक्कल हो, हमारी तरे क्या तुम्ह कमावोगे तुम्ह तो धन विगाड हो, हम न हुवेंगे, तब जा नींये क्या होयगा। लछन तो अभीसेही जाहिरमे आवे है। तुम्हारे वडी तमती हुवेगी, कमानेकी तो कला एक भी एकमें नही, तो यह दोनग वैसे भरोगे, औरे मुरग्ग धन कमावणा वडा मुसकल है, कमायकर इकठा रखणा मरूकमें अब ताट दरयो, हमने कमाया भी कमावें मी है। आज ताई लोकीकमें प्रतीत आवरू व्यवहार चलाये जाय है सो हमारी खबरदारीसे और दुश्मनूंके ताई भी झेर कर रख्यें है हम थकेको कोई दाना मुरीदम भी नीकालता नहीं है, तुम्ह जैसे हूते तो धन कमावणा तो दूर रह्या पर तुम्ह कू खाणे कान देता ऐसे दुस्मन लगि रहे है, हमा री अक्कल सीखो, ज्यु तुम्हारा भला हूवे, इसतरेसें परिग्रहमें चेतना लगि रही है सो सरक्षणानुबंधी रौद्र कहीये ए सर्व अपध्यानाचरित अनर्थ दंड कहीये। दूसरा पापकर्मोपदेश अनर्थदंड सो हरघडी किसी कू गैर-

मनधी कू लज्या दाक्षिण्यता विना पापोदेश दीयै। जो तुम्हारे घरमै बडे बडे भये, हमारे देखनैमै आज आये, तिसतै तुम्ह कू कहते हो, अन इस कू समारो ज्यु यह सुधरेगा तो गाडी हल सब जगा जोतोगे तहा रहैगा, शरीरका बल वधैगा। नही तर गौ कू देखि कारि हिरस करैगा तो लोक कू चोट चलावैगा, तिसतै इस कू फेरो खसी सीतान करावौ, मालकू कछ बिगाडो हो पीछै जोतमै जुवैगा नही, जो फिरावोगे तो चमक मिट जायगी, नाथ्या भी तो हनोज नही है, तिसतै नाथ तो पहिला जोइजै, ऐसा पापोदेश देवै, और कहै, एह घोडा बछेरा बडा हूवा जायै है, अन इसकू फेरणीयै, पाम फिरावो, ज्यु चाल सीखावै चोकडा लगामकी डिगरी अन उपर काठीप्रमुख मडावो, बाध्या नाथ्या जिनावर खराब होता है। तथा अबर बरसातके दिन आयै, अपना खेतमै घास गुछली व सो कटाय डालो, ज्यु जमी साफ हूवै, पाणी बरसातका खेतमै भरै, पत्र कर जमी तर हूवै तो धान अच्छा नीपजै। बरसात भी आया, घरकी मरमत करावो, ए घर जाजरा भये है, फेर ब नावो, अब वखत है, मसाला मजुरी सब ससती है, अब हवेली तुरत हीतु बनावो, तुम्हकू खबर न हूवै तो हमसेती पूछलेना, ऐसीतर मनसुबेम रहैगा उस तजवीजसू बनैगा तब सब कोई देखिकै खुस्ताफ होयगा। ऐसै उपदेश देकै कर्म खोटे बाधै, तथा फिर कहै तुम्हारे भाईनी लडकी तो स्याणी हूई, इसके फिकरमै होकै नही, ब्याह जाग भई कछ न हूवै तो हमसू लेवो पिण किसीका नहीतर ओसका करज करो, नहीतर हम किसीकू कहीकै हमारी सातरगीसू लेवो पिण यह काम कीया जोईजै। यह धर्मकाम है, तिसमे ढील न करो, ऐसै उपदेश ससार वधावणैकै देवई। ओरू कहै भाईजी बगीचा ससरावो स्हाड जमी सुकत होय तो आगि उपर जलायद्यो। यह जगली बहुत घासफूसका बध रहा है सो कटायकै इसही जागा जलाय देवो, ज्यु जमी साफ हो जायगी ऐसी कहै और प्रेरणा करै। असुका तुम्हसेती दुसमनाई रखै है, सो तो अब तुम्हारा वखत है, राजदरबारमै तुम्हारा तो भार है कडाई पेचमे देकर विसाय डलावो, अपनी चलती होय तब गर्ज न कीजीयै। हमारी

ता है। त्या प्रकार फिरि कब पावोगे। अपनी चलतीके वीन भ
ग कारनीस नाया तो क्या जीत्नीका फल है, जिस वास्ते दुस्मन
स नाश करना मोटा भला है, यह तो तुम्हारी बडाई लोकमें आ
त्त रहे है। एक बेर हमने भी सुणी तिस ते तुह अजब धर्ती
मिले तो यह सिर उपर चढता जाता है, तुम्हारे इतनी भी निर्गु
दुस्मनका फ्तान हो कार्टीये नटामलगैती, लोकको यही कहत
ना हरेन मेती कीर्तिये इसमे पापदाप न गिणी जीये ऐसे म उपदेश
माल हमें इता गिन चन्या है तो भी हनान रसोईकी कह पा
नहा उठा न हर्ष रसाई की तरदृति कग, चौकासमुल गिरानो,
कग रसोई पीछे मत काम है, हमारे तो उठने है नडी फनर रसो
सारे तव कह मुर्ने इत्यादिक उपरगक प्रयोजन विना जुठा या
कहिना तिमस कथा निकलगा, आपना आत्मा भारी करणा ए हिस
आरंभक कहना। जो अपने सवधाइ तथा दाक्षिण्यमेती, तथा
गरजबिना हर कोईइ कहना कु रसोई नही करते हो। आगि नही
तो आगि लेवो, हमारे घरमेता जब चाहो तब हमारे आंगनमें मार
और उपरगक है, आगि दीवा काती चडा सच न है और यहे
मजारके बाग तरकारी नहुन आई है ले आवे। सितानमेती दिन
रेयकी पीछे अम्रकी तरकारीह तो चालसे अपने हाथमे छोटी
साई ये पीछे घी हींग हलदी मसाला घालीके पचाईये, तब पीछे
गरी तेला उस का मजा पावोगे। तब कहेगे आसास अर आगेमु तम
स्यानाग जाग्गाणकी चीज है सो मजेसु बनाईये खाईये। कोड देवे ले
हैं, बडे चातुर है। एसा विना पूछे माग विना देवे, यहे अधिकरणी
अरु मांगावे, सो भी अनर्थदंड तथा और यत्र जो चरकी उगल
गाडी रथ नाव चरखा चरखी घाणी मसेता दात छुरी कैंची पावडा
सति कुहाडा फरसी और भी सब हथीयार छोटे मोटे जितने होय
धार नहक कटारी कमाण प्रमुख तथा ओर अधिकरणमे कुहारी प
परसा समसम की टट्टी आदि है। और मंत्र माप नीठ रमणान
चालता चलाये नेठा गडबड करे, नि प्रमाण पाप लगावे, ए

आपकी अग्यानताम्र वाघंवार्डपणे मेती लीगे यथा नहु जातके तेलमर्दन करे, स्गायके ऊपर ऊरटणा पीठी सुगध द्रव्यनिष्पन्नमेती तेलकी चिकनाई मिटाने वह पीठीमें कड्रनीतीती चीज बहूत पडे, उससेती ऊगटणा करे पीछे जीवाकूल भूमी हो उम जगा उपर बेठिके स्नानप्रमुख करे। नहा वह पाणीका रेलाचले उहा जो जीव होय मो स्टकरम गधमेती विनाशरे तथा थोडे पाणीका काम वे, वहा नहुत जल टाले, इहा तजवीज करिके शुद्ध भूमि देखि करी स्नान मज्जन करे तो दया पले। प्रमाददोपमेती धर्मकी कछु क्रिया गडनड कर, तथा कौतुक नाटक पेखणा प्रमुख देखणेकू आप जावे, ओरकू साथ ले जाय दिखावे वे दोडादोडीमें चलते आवे नहूत जीवकी विराधना हूय राह वीच वहा तमासा जाय देखे, खुसी हूवे, ओरके आगे तारीफ करे। अपना इहलोक परलोकका साधन जो व्यापार उधगारे जप पूजादिक उस वखत नहि जाय तब वे काम सीदावे। फेर वह तमासा देखि घर आयकर परजनके वर्णन करे, आप चीकना कर्म नाधइ ओरके परिणाम निगाडे, ओर सती सत्त कागोंकू काट लेगेकू चले, ओर चोर मारणेकू ले जात होय उहा देखणेमे जावे दखे उहा परिणाम ए रहे, अन इमकू कर इमकू कब मारेंगे, सती नहके घरमे रुर पीमे आगमे कैमे बेठइ, ओर मिथ्यात्वकी अनुमोदना तारीफ करणी पडे, चोर मारे उहा पापकी निंदा पकडे, मारे उसकी तारीफ करे, उहा चीकणा कर्म नाधे, फर फेर जन वे बात निकाले तारीफ करे तव भी चीकना कर्म नाधे इमकेड नेर कर्म नाचे तथा कामशास्त्र जे कोकशास्त्रादिक उनको परचय नहुत करे। चोरासी भोगासन सीखे सीखावे, पडिवादिकसू माडी पुनम तिथताई सुद वदिमे चढता उतरता कामदेवका वासाकू धारे धरावे, नगरसिख वर्णनशास्त्रकू पडे पढावे, भाव भेद अग उपागके वतावे, ओर नदीतट जलक्रीडा करणेकू जावे, ओरकु बुलावे ने नदीमें तिहा तोडी। अपना मेल धोवे। वह मेलका पाणी चले इहा तक सव जलजीवका छोटेका नाश हूवे। इस वरके आपकू का म मना वढावणकी कफकी चीज माजम गोली चूर्णप्रमुख खावे। पचद्रीय जीववधोपन्न मलमकी पट्टी लगावे वधेजका ओपध करे। ओरकू

मागावै। तथा तिम वचनसूं आपरू परकूं कामसंज्ञा वधेई चेतना विग ए एसें वचन गाउ आस्कू नालावे। तथा हाथकै मुखकै नेत्रके भृगुटीके नाग मैं तिनरू देख ओरकूं हास्य आवै। किसीकी मजाख करै वगावै। सत्यन मम बोले। तथा राजकथा जो राजाकी दोलति वखाने, राजारी लडाइ वखाने, इसतरै फोजा चडी, लडाईके सामान है हम भी खडे दे र हे इसतरै मनरोगाकरु दुस्मनकू जेर कर लेवै, वडा बेबाहदर है। तथा राजा राजाका भाग वखानै ओर कहै, उस राजारी कोण बरोबरी करै ए आज दूसरा इन्द्र है तिसकै इतना सेर अतर भोगमें आवै है। राजाका असवार बल वखान करै। तथा तिना कामकाज देशकथा जो त दतेइंद्रिय सुख जो खानपानादि वखाने अथवा सिरोवाइ ते सुखिकै ओर ही भी चित्त नागचै सिरवै, आपकू अतरमकी अनुमोदना हुवै, उस देश निपारी रम सराये। तथा स्त्रीकथा जो स्त्रीको रूप रंग चतुराई उसके मनफैलका निपुणतासू कनहरारी कैसे द्रिष्टांत सुणावै जारी तिनारी नर जाणे मा वडा चतुर कहावे उसकू सुणिकेई पुरुषकुं परिणाम बिगडे। श्रद्धी सुखिक फल सीजै। आपकू विषयकर्म आग ओर भातिके बधाय। तथा भक्तकथा जो खाना पीना असनादिक च्यारूं प्रकार आहारकी कथा कहै वखाने सिखोडे काई रसवती उसके संस्कारकी वात करै तरे करिके वखाने सीखावै। फलाणी रसाई फलाणी तरकारी इसी जुगती बनाई देखता आप आय आवेगें। परमेश्वरकू भी भोग चढै ऐसी बनी है। इहा निकलकरु भी ऐन लगावै गाम मिथ्यात्व पापायै केइ जीव वे सुनिके ऐसे आरम्भमै प्रवर्त्ते तथा एक दिन बहुत आरम्भकर खाया, सो फरकर याद करै सराहै। तब बहु दा चीकना कर्म बाधै। ए च्यार विकथा करन लाज मर्यादा नीति धर्मगंभीरता इतनैकी हानी करै लबाड कहावै, ए च्यार विकथा न करै तो कछु अपना काम मीदावै नही कछु इंद्रियसुखमें हानि होवै नहीं, केवल निकमा कर्मबंधन चीकना थावै ए प्रमादसैं हुवै, ए कुचाल मिटावै मिटै, कामकाज पावै फोकट दडाये ए प्रमाद अनर्थदंड कहीये इस व्रतकै पाच अतीचार लिखै है। तिहा प्रथम कंदर्प चेष्टा कहीयै कन्प कहीयै। कुचेष्टा अनीचार सो जो मुखविकार भृविकार नेत्र

विकार हाथकी सज्ञा बतावे । पाऊंके विकारकी कुचेष्टा करै, चेष्टा करते थोर कु हासी आवै किसी कु कपाय उठै । कहासे कहां चली जावै । अपनी लघुता हुवे धर्म निंदावै ऐसी कुचेष्टा करै सो प्रथम अतीचार जाणणा ॥ १ ॥ दुसरा अतीचार मुखमेती मुखरता करै, सो जो असबद्ध वचन बोलै जिनमें ओ—ए प्रगट हुवे, कष्टमे पडै, अपनी लघुताई हुवे वैर बांधे धींगाई बधीने लबाड चुगल इत्यादि नाम धारे, लोकमे जावे, एसा बहुत बधकर बोलणा यह दुजा अतीचार ॥ २ ॥ तीसरा अतिचार भोगाधिक आरम्भ करै, सो जो भोग उपभोगको बैरवे स्नान पाणी आहार वा विलेपन सोधा प्रमुख आरभकी क्रिया जो है सो अपने खपमेती ज्यादा बनावे जिस्सा आरभ करै द्रव्यव्यय होवे । बहुत इमक धरै सो यह तीजा अतीचार ॥ ३ ॥ अब चोथा अतिचार कामकै मर्मकथन जिसके बोलणेसे अपनी बिरानी चेतना काम क्रोध मयी होय जाय ऐसा ने तर्कका बोलणेमें विरहकी बात दुहा साखी रेखता झूलणा कवित परिजगण श्लोक शृङ्गार रसकी कथा कहणी सो चोथा अतीचार ॥ ४ ॥ अब पाचमा अतिचार अधिकरण दोप कहै । सो जो अपने कामकाजसे अधिक अधिकरण मेलै तैयार रखे । सब अगोपाग मिलाय के समार कर रखें । सो अधिकरण कहीये, सो जिनसे हिंसादिक पापस्थानकी पुष्टता होय । रथ उखल मुसल घण चक्की छुरी तरवार कटारी बदुक कमान, तीर तरगस ढाल बरछी सरोता छीनी फरसी कुदाल प्रमुख हथीयार सब उनसे ज्यादा बनावे विना सबध दाक्षिण्यतासे माग उस कु चाहकर लेवे । विना मागे सो पाचमा अतीचार जाणे पिण आदरै नही । समझु श्रावक ने सा तो त्याग करै एह बडा लाभ है ।

इति श्री द्वादशव्रत टीप विवरणे अष्टम अनर्थदंड विरमणव्रत
प उद्यात सागरगणिनाक्त भाषा सपूर्णा ॥ ८ ॥

॥ दुहा ॥

अब चौ शिक्षाव्रत कहू नवम सामाइक नाम ।
टोप बत्तीस छाडकर बैठे एकान्त धाम ॥ १ ॥

द्वादश कायाके प्रथम पुनि दश वचन प्रमाण।
मनको दश दोष जु मिलैं मन बत्तीस सुजाण ॥ २ ॥

अर्थ —तिहां छट्ठा अरु सातमा तथा आठमा ए तीनुं गुणव्रत कह्या अब पूरा आठ व्रत है अरु आतमगुण कु पुष्टिकारक, अविरति कषायमें नादा सभावे मिल्यो अनादि अशुद्धता जो विभाव परिणतिकी इत मिटावणेकु आत्मिक गुणानुभाव वरणेकू सहज स्वरूप रमाइणाकी मनी पावणे कू नवम सामायिकव्रत करणरूप शिक्षाव्रत लिखे है। तिहां सामायिक सो ना जघन्य दोय घटी प्रमाण आर्त्तरौद्रध्यान परिणत क्रियारूप अशुभ सावद्य व्यापार छोडिके आतमा कू समता परिणाम राखे सो सामायिक अथवा समनाय सामायिक एतले, सम कहता सम्यक् प्रकारे रत्नत्रयी ना ग्यान दर्शन चारित्ररूप सहजरूप उदासी वृत्ति मुक्तीका मार्ग सो सम कहीये उसका जो आय जो लाभ हुवे जिस कु सामायिक कहीये। ए सामायिकव्रत दोय घडीकी मुनि मारकी वानगी है निशानी है। अरु अनादिकालका विश्राम रखणेका सम्यक् उपाय है जिहां साधक नाय घडी स्वरूप सन्मुख चतना करिके सहज स्वरूपकी चाहना धरिके सकल सावद्य त्रिकरण योगे तजी के सामायिक करे। उसमे बत्तीश दुषन दुरि करे, तब शुद्धि हुवे सो लिखे है। तिहां प्रथम बारह दोष कायाके है सो बतावे है। तिहां सामायिकमें पग उपर पग चढायको उर्ध्वासन पलाठी लगाय के बेसे, पाव उपर पाव चढायके बेसे ते मानमहातम्य पर्यायकी वृद्धि विनयगुणकी हानि होय अथवा वस्त्रसेती गोडा बांधकरि ठामणो करिके बेसे सो प्रथम दोष है॥ १ ॥ जिसमें विनयगुणा दीपे उडता न जणाये अरु जयणा होय ऐसे आसन बेसे। तथा दुसरा चलासन दोष सो जो थिर न हुवे। बेरबेर आघा पाछा हाले चपलाई करे, मूलमार्ग तो आसन एकहीन आसणे सामायिक पूर्ण करे। अडिग पणे रहे, कदापि रोग निर्बलता कारणे एकासणे रह्या न जाय फिरणा पडे तो उपयोगसयुक्त जयणापूर्वक चरवलेसेती अर्थात उठी पूजन प्रमार्जन करिके आसन फिरावे, वे चाल्ल राखे नही सो दुजा चपलता दोष है ॥२॥ हिवे तीजो चलदृष्टिदोष कहीये, जो सामायिक लके दृष्टि नासिका ऊपर रखणा है अरु मनमे शुद्ध श्रुतोपयोग राखे, मौनपणे ध्यान करे।

तथा जो सामायिकव्रत शास्त्राभ्यास करणा है तो जयणायुक्त है मुहप-त्ती मुखे देई दृष्टि पुस्तक उपर राखिकै पढे सुणे, तथा सामायिकमें काउ-सग्ग करणा है तो च्यार आगुल आगे अर साढातीन अंगुल पीछे मो-कलं पग रहे, ऐसी योगमुद्रासे खडे रहे भुजा दोऊ प्रलंबित रखै, दृष्टि नासिकाके ऊपर रखे वा जीमणा पगके अगुठे उपर राखे ए शुद्ध सा मायिक शैली, ये शैलिकू छोडिके छोडिकर चपलपणे च्यार दिशि आखु फिरावे चकित मृगकैसी तरे सो तीजा दोष है ॥३॥ चोथा सावद्यक्रिया दोष कहे सो जो क्रिया करिके कछु सावद्य क्रिया करे अथवा सावद्यक्रियाकी मना करे असारति करे सो चोथा दोष है ॥ ४ ॥ पाचमा आलबन दोष, सो जो सामायिकमे दिवालप्रमुखका आसरा छाडिके निरभय एकासने बैठे ए रीति छोडीकर वा थभकू दिवालकू पीठ लगानके बैठे, अथवा औरके आसरे बैठे दिवाल पूजे विना, बहु जीवका विश्राम है वहा पीठ लगानते मैं बहुत जीवकू विराधना हुवे । निद्रा प्रमाद वधे ए वास्ते आलबन ए पाचमा दोष है ॥ ५ ॥ छट्ठा आकुचन प्रसारणा दोष सो जो सामा-यिक लेकर कमीबिना कारण प्राणी हाथपाव सकोचे विस्तारे, जे कारणे सामायिकमें तो बिना पुष्ट कारण हलणा चलणा नही है । जरूरीमेती नचार हुवे । तो तब चरवलासेती पुजन करि प्रमार्जन करि हलावे म णमें अगसहनाका खेद धरे । ए सलीबिना निरमा हाथ हिलावे नही ना हलावे ना छट्ठा दोष है ॥६॥ सप्तम आलस्य दोष सो जो सामायि कमे अंग आलस मोडे, अग अग एठावे । करडका करे कमरवांकी करे ए प्रमादकी बहुलतामेतीव्रतमे भेद ऊठे । तब शरीरमू अगतिभार जागे तब आलस मोडे, असुगमण ऊठे ए सातमा दोष है ॥ ७ ॥ आठमा आमोटन दाष सो जो सामायिकमे अगुली प्रमुखकू टेढी करिके करडका काढे, ए प्रमादकी प्रबलताम् वे, सो आठमा दोष, ए तीनू छट्ठा सातमा दोष निद्राप्रमादकी उपाधिसू हुवे दर्शनावरणीकर्मका उदय बलसेती हुवे ए आठमा दाष है ॥ ८ ॥ नवमा मलस्पर्श दोष सो जो सामायिक लेकर अगमे खुजली रेख मूल मागे तो सामायिक लीधे खजूली प्रमु-खकी उपाधि ऊठी, तब वे चेतना ठीकपणे रही नही विकल्प होणे लगा, शुभ आलबनमे चेतना थिर न रहे । तब नाचार होयके चखलाप्रमुख

मती जयणापूर्वक पुनन न प्रमार्जन करीके मनमें अपना असमणपनाका पश्चाताप करना महापुरुषकी धीरता मनमें भावतो धीमे धीमे खिजूली खणे ए मेल है सो दसमा दोष ॥ १० ॥ इग्यारमा विमासण दोष सो कह जो सामायिकमें अगविमासरा करवे । एतले हाथका थोभा देवे, वेगल ह ता करके बैठे सो इग्यारमा दोष है ॥ ११ ॥ बारमा निद्रा दोष सो जो सामायिक लेके निद्रा करे ए सर्वघाती प्रकृति है सो सामाइकफू निष्फल करे ए बारमा दोष कह्या, ए बारह दोष सामाइकमें काया के दोष छोड़णे ॥ १२ ॥ अब दश वचनका दोष कहे तिहा प्रथम कुबोलका दोष सो जो सामायिक लेकर कुवचन बोले, कुवाक्य भल उत्तमपुरुषके बोलवा लायक वचन नहीं जो वचन सुणिके स्त्रियोंमु लज्जा भय कषायादि उपजे सो कुवचन दोष कहीये ए प्रथम दोष ॥ १ ॥ दूजा सहसात्कार दोष सो वचन सामायिक लीवें आगे पीछे उपयोग विना दीर्घ बोले, अविचारित बोल, ज्यु मनमें आवे तेसे कह ए दूजा दोष ॥ २ ॥ तीजा असदारोपण दोष कथा कहावे, सामायिक लीये हांसीतांई जूठी तोमत देवनकी क्रिया करे सो तीजा दोष ॥ ३ ॥ चोथा निरपेक्षवाक्य दोष कहे, सो सामायिक लीधे शास्त्रनिरपेक्ष अपने छन्दे सेती बोले, युभी जैनमार्गी सदा सापेक्ष वचन बोल्या चहीये । निरापेक्ष बोले नही । सो सामायिकमें भाने ज्यु बोले सो चोथा दोष ॥ ४ ॥ पाचमा सक्षेप दोष सो जो सामायिक लीये सूत्रपाठे वचन सक्षेपे करिवो जे अक्षर पाठादि हीन करि करे यथार्थ करे नही ए पाचमा दोष है ॥ ५ ॥ छट्टा कलहकर्म सो जो सामायिक लेकर साधर्मीसेती कलह करे, सामायिकमें तो कोइ भि पामति गाल भी देवे वा उपसर्ग करे कुवचन कहे तो भी उन सेती कलह न करे । ज्यु ज्यु कर कलह समारणकी चिंता करे तो वे साधक सामायिकमें साधर्मीक साथ कलह न करे अरु क्लेश करे सो छट्टा दोष है ॥ ६ ॥ सातमा विकथा दोष, सो जो सामायिक लेकर राज्यादिक च्यार विकथा करे, सामायिकमें तो सिज्झा अरु ध्यान इणहीको तो मुख्यता है कदापि ते नही करे तो धर्मकथा बेठा करे सो महापुरुष चरित्र अथवा तीर्थादिककी महिमा कहे । और ऐसी तैसी

कर्मनधर्मी विकथा न करै, करै तो सातमा दोष ॥ ७ ॥ आठमा हास्य दोष कहे । सो जो सामायिक लेकर पारकी मजाख करै नहीं, जिण कारण हास्यमोहीनीके उदय हास्यरसमेती इहलोकमें मजाख करै तो लघुता पामै लोकीकमें यु कहे है अनर्थको मूल हासीरोगको मूल खांसी अन्य परलोकमें तो वे हास्य रसकर्म उदय आवे तब रोवते भी छूटै नही इस वास्ते साधक सहजे भी मजाख न करै, सामायिक लेकर तो कदा पि न करै । इस वास्ते आठमा हास्यदोष सो त्याज्य ॥ ८ ॥ नवम अशुद्ध पाठ दोष, सो जो सामायिक लेके सामायिक सूत्रादिक उचरै । उसमें सुखसेती सपदाहीन अथवा अक्षर लघु ठिकाणै दीर्घ बोलावै । दीर्घ स्थानके ह्रस्व बोलावे । कांना मात्रा हीना अधिक मोटा अशुद्ध पाठन उचरै यद्वातद्वा कहे, वर्णसूत्रका सो नवमा दोष ॥ ९ ॥ दसमा दोष मुणमुण बोले सो जो सामायिक लेकर उतावलो स्पष्ट प्रगटा अक्षर न उचरै, पद गाथके ठिकाण इसो कहे सुगमेती अक्षरकी कछू ठीक न पडे, कोई जाणे मखी मगमदकरै छे । गटबड करिके पूरो पडे सो दसम दोष ॥ १० ॥ यह दश दोष वचनका जाणणा अथ मनके दश दोष कहे है । प्रथम अविवेक दोष सो जो सामायिक लेके किरीया सब करै पै मनमें विचार नही विचार सो सामायिक कीया, कौनतरै है, कौन फल है, किसीका साधन है कौन पर साध्य है । व्यवहार सामायिक कौन, निश्चय सामायिक कौन, सामायिककी क्या सैली है, ऐसा विवेक विना सामायिक करै सो अविवेक सामायिक दोष प्रथम ॥ १ ॥ दूसरा यश वाछा दोष सो जो सामायिक कीया यशकीर्त्ति वाछै सामायिक तो निर्जरा का हेतु है शिवपदका मुख्य साधन है सामायिक करिया यश वाछे । सो दूसरा दोष ॥ २ ॥ तीजा धन वाछा दोष सो जो सामायिक बीच करते धनादिककी चाहना वांछे । हमारे सामायिक कीये धन हो ज्यो, अथवा सामायिक कीये मनमें विचारै कोई भव्य प्राणी धरम जाणीके अथवा सामायिक प्रसादे धन देवै, सो तीजा दोष ॥ ३ ॥ चोथा गर्वदोष सो जो सामायिक लेकर मनमें गर्व करै, जो धर्मके ध्याता है ऐसा हमकू लोक कहे, सामायिक करै है, और मूर्ख क्या समजे, एते ससारी जीव कामकाजमें पडे है हम सामायिक करै है और कौन करै गर्व, सामायिक हमसरीखी और कौन करै और

विचारे पश्चात् तास शुद्ध सामायिक बत्तीस दूषण टाली हम करें हैं, ऐसा वह आप सो जोता जाय ॥ ४ ॥ पांचमा भयदोष सो जो सामायिक करत भय पावें भय इहां यह जो हम श्रावक कहावें हैं अरु जो हम न करेंगे तो लोक कहेंगे । श्रावकका कुलमें उपजनेका क्या फल । ऐसी हमारी निन्दा करेंगे, देखो फलाणा ऐसा वृद्ध भया है तो भी कछु धर्मकी नाम ग्रहण सीखें नहीं आवती है । और तो सब रहा दिन एक नित्य सामायिक भी न करि सकें ऐसा क्या है बडे नाम धरावत हैं । ऐसा पाडिक्कमणा ना जाने करणेका यातुन है ऐसा ठपका देवेंगे । इसके भयसती शरमाऊमें सामायिक करें सो भय दोष मन बीच कोई भाव है नही सो पाचमा दोष ॥ ५ ॥ छठ्ठा नियाण दोष, सो जो सामायिक करिके धनादिकका अथवा और कछु अपनी इन्द्रादिक वस्तुका नियाणा करे, हम सामायिकका यही फल पाऊं । इह लोकको सौख्यता धर पाऊं । परलोकम भी देवतादिक सुख पाऊं, ऐसा आशय धरि करे सो कोटीरत्नकी कोडीकी चीज करें । सामायिकका फल मांदा नियाणा कीया जन्म, बेच दीधी ऐसा करे सो छठ्ठा दोष ॥६॥ सातमा संशयदोष, सो जो सामायिक करे पे संशय न मिटावे, संशय भयो सामायिक करे प्रतीत तत्वकी नहीं है मनमें विचारे क्या जोनींये सामायिकका क्या फल लाभेगा । करते तो है आगें इसका क्या फल होगा न होयगा ऐसा संशय धारिके करे सो सातमा दोष ॥ ७ ॥ आठमा कषाय दोष कहै, सो सामायिक वाय कषाय करें किसीके साथे क्रोध करे । जवाब देणा पडे किसीकिनारे तब सामायिक कर बैठे ऐसे कषाय भयो करे तिसमें क्या फल लाभे, सामायिकमें तो कषाय कीया वे सो भी बडे ए रहस्य है, तिहां कषाय सहित करे, सो आठमा दोष ॥८॥ नवमा अविनय दोष, सो जो विनयहीन सामायिक करे विनय सो गुरुका वा स्थापनाचार्य प्रमुख कार्यनी शैलीमें तो सबही धर्मकी करणी विना विनय है नहीं, धर्मका मूल विनय, विनयी बहुमानकी पुष्टतासेतो अगणीत फल होवे, थोडा छोटी धर्मकरणी करे, उहां विनय बहुमान बहुत है तो फल महाव्रत जैसा पावे, इसवास्ते सामायिक में तो विनय

सहाई सामायिक सफल है, सो निनय न करै, सो नवमा दोष ॥९॥ दशमा अनहुमान दोष कहै, जो सामायिक करै, सो अनहुमाने सामायिक करे भक्तिभावसे न करै। सामायिक उपरि बहुमान चाहीये जैसी कोई दुर्गती जीव रोग सोग दु:ख दारिद्रता में पचि रह्यो है महादु ख भोगवै है। इतनमें कोई क्रियावत बडा उपगारी सोजन ने देख्या, देखते ही दयापूर्वक परिणाम करने, तब दरिद्रीके घेर ल्यायकर औषधादिक करी सब दु ख मिटाया, और भी सब तरै सो साहा य कीया एसा जो आपनी तुल्यकर बैठाया, तब वै दालिद्रीक उपगारी पुरुषका कैसा बहुमान भक्ति रहै, मनमें विचारै, जो ए उपगारी उपर मेरे प्राण कुरवान है। ए तो इहलोकका पुद्गलिक सुखका उपगारी है, उसपरि एता बहुमान रहै है तो सामायिक तो इहपरलोकके पुद्गलिक आत्मिक उभय सुखका दाता है, बाह्याभ्यन्तर दु खका मिटावणहारा है। इसवास्तै सामायिक परतो इनसेंभी बडा बहुमान भक्ति चाहीयै। सो न करै सो दशमा दोष ॥ १० ॥ ऐसे मनके दश दोष। एव कायाके बारह वचनके दश, मनके दश। एव सर्व बत्तीस दोष बचायके सामायिक शुद्ध करै सो सुखहेतु का कारण कहिए बत्तीस दोष रहीत एक सामायिकका फल श्री जैनागममें व्यवहारै तो एता कह्या है बानु कोडि गुणसठि लाख पचवीश हजार नवमें पचवीश ९२५९२५९२५ एतला पल्योपम अरु एक पल्योपम ना नव भाग कीजै तेमें आठ उपर नवभाग उपर इतना पल्योपम देवताका आउखा बांधे। अरु नरकगति नांधे इसवास्ते श्रावक कू प्रतिदिन सामायिक करणा ज्यू जन्म सफल होवै। ए व्यवहार शुद्ध सामायिकका फल है। अरु निश्चय शुद्धोपयोगमेंनी सामायिकका फल अनतगुणा है। यावत् सिद्धिस्थान पहुचावे इसवास्ते सामायिक एकान्त उपादेय है। वै सामायिक के पाच अतीचार है सो कहीये। तिहा प्रथम काय दु प्रणिधान अतीचार कहीये सो अपना शरीरका अवयव हाथ पाव अप्रुरव अणपूंजे प्रमार्जे हलावै। दिवालके पीठ लगायके बैठे। निद्रा अप्रुरव अणपूंजे करै सो प्रथम अतीचार ॥ १ ॥ दूसरा मन दु प्रणिधान अतीचार, सो जो मनमें कुव्यापारचिंतन क्रोध लोभ द्रोह अभिमान ईर्षा असूयादि दोपसहित कार्य व्यासगात्त मभ्रम चित्तसहित सामायिक करे, सो मन दु:प्रणिधान दूसरा

अतीचार ॥ २ ॥ तीजा वचन दुःप्रणिधान अतीचार, सो जो सामायिक में असत्य सावद्य बोलै। अथवा पदअक्षरादि अशुद्ध बोलै, ऊवरते थकै शुद्ध, पाठ मात्रा माफुम न पढ़ै अरु अशुद्ध सूत्र उचारे। अर्थकी भी मा... न पढ़ै, अतिचपलपणे गडबड कही जाय सो वचन दुःप्रणिधान तीजा अतीचार ॥ ३ ॥ चौथा अनवस्थारूप अतीचार सो जो सामायिक के अवसर सामायिक न करै अरु करै तो यद्वा तद्वा करै वा मितावी पारै। आदरविना करै। स्वेच्छायै क्रिया करै, सो चौथो अनवस्था दोष अतीचार ॥ ४ ॥ पाचमा स्मृतिविहीन अतीचार सो जो सामायिक लेकर भूलिजाय। क्रियादिकमें भ्रांति पडै, सामायिक दडक सूत्र ऊचर्यो कै नही उचर्यो। पार्यो कै नही पार्यो। ए प्रबल प्रमादके उदयसू होय, सब साधनका मूल तो स्पष्ट याददगीरी है। जायते उपयोग है सो तो विसर गया तब सामायिकका फलमें बट्टा लगै। ए विस्मृतिरूप पचम अतीचार है

इति श्री द्वादशव्रत विवरणे नवमसामायिक व्रतकथन
ए उद्योत सागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ ६ ॥

दूहा।

श्री पारसपद कमलयुग, वदू वंदे उमेद।
दशावगाशिक दशमव्रत, तिसका कहिस्यू भेद ॥ १ ॥

अब देशावगाशिकका अर्थ छठ्ठा व्रतमें दिशिपरिमाण सो तो जावजीव किया है। सो दिशिक्षेत्र बहुत है नित्य कछु उनका कार्य नही है, इसवास्ते दिनप्रतै उसमें संक्षेप करे जो आजके दिनमें दश कोश वा पनर कोश वा पाच कोश अथवा नगरका दरवाजातक अथवा कोश अधकोश वा परोचितक जगा दिशि रक्खें। वा घरकी हदतक इत्यादिकपर्यंत जावणा आवणा, काल उपरात नियम ऐसा करणा, सो देशावगाशिकव्रत ए छठ्ठा व्रतका जाति शेष है अरु जावजीवका सवधका सो पूर्व नियम किया है सो है। हे तो चोमासा वीशदिन दशदिन पांचदिन अहोरात्रि वा दिवसतक मुहूर्ततक भी धतलै, व्रतमें हुवै, बहुत क्षेत्र रख्या हुता उनकाभी दोष संक्षेपा क्रिया ऊतारी, एनले दिग्व्रतका देशावगाशिक नितिप्रतै परिमित क्षेत्र गमन परिमाण रख्यै, जो मैं कायामें फलाणा गांव फलाणी

जगा देवल, दरगाह देनीका माळरा कोइ ओर जगा जाउगा उपरात मुजे निषेध, इसमें जो दिग्व्रती प्राणी कैताई देश परदेशका व्यापार है तो ऐसा कहै मुनें कायानेती इतना खेत्र बाद जावणा नही पिण दुरगनथरा कागद प्रमुख लिख्या माफक है सो बाचणा, अथवा आदमी भेजणा तो माफ है। बात प्रमुख भी सुणनी माफ है। अरु जिसकू दूरका व्यापार नही है सो कागद भी न बांचे किसीकू भेजणा भी नही। जो चित्तकी प्रकृति संकल्प विकल्पमें न हूवे तो बात भी न सुणे। इस बात न करे न रह्या जाय तो व्रत मार्गमें छुटा राखे। ओर जाणतं थकें दोष लगावें नही ए देशावगाशिक नित्यव्रत करै सो सदा सर्वदा फजरके वखत चवदे नियमके याददगीरीमें सर्व समालिके करै विपरीत सचपते रखै। रात्रिसवधी जूदा रखै। अहोरात्रीका करै सो फजरके समे याद करै। ऐसे व्रतविधिसेती गुरुमुखसे धारे है तैसे पाले। ओर देशावगाशिक व्रतके पाच भदके अतीचार है सो नाम लिखे है। तिसमें प्रथम आणवाण प्रयोग अतीचार ॥ १॥ दूसरा पेसवणप्रयोग अतीचार ॥२॥ तीसरा सद्दाणुवाई अतीचार ॥३॥ चोथा रूपानूपाती अतीचार ॥ ४ ॥ पाचमा पुद्गलक्षेप अतीचार ॥ ५ ॥ तिसमें पहिला अतीचार आणवाण प्रयोग सो नियमकी भूमीका बाहिरकी कछु चीज तिसकी गरज पडी, तब विचारे, मेरे तो नियम उपरात भूमीका जावणा नही, अरु चीजकी भी चाह जीवमें लगी रही है तब आप बुद्धि उपार्जे, किसीकू वही भूमिकू जावर्णवालेकू दखिके कहे। भाईजी तुम्ह वहा तक जाते हो तो हमारा कछु काम है सो भी करणेमें आवगा, तब वे कहे हा जी हम जावेंगे, तब व्रती कहे, भाइ हमारा एता काम करते आवणा यह चीज हमारी खातर ले आवोगे ऐसा कहे, अपनी महनतीसेती तब यह चीज बाहिर रतकी मगावे। अपने स्याणपणासेती विचारे मैंने मेरा व्रत भी राख्या, अरु चीजका भी काम कर्या, ऐसी तजवीजसे काम सरे, ऐसी बुद्धिका अग्यानपणा करे सो उलटा टोटा लगे है जे व्रतधारी होयके ऐसा रपट का भागा न करे गुरुबुद्धे शास्त्ररीतें जो कह्या सोई करे इस वास्ते नियम लेके परपासमेती चीज बाहीरकी मगावे सो आणवणप्रयोग प्रथम

अतीचार जाणणा ॥१॥ दूसरा अतीचार पेसवणप्रयोग कहै, सो जो नियम भूमीका बाहरका चीज भेजणी है, तब पहिलेमेती मनसोबा करै । कि सीके हाथ वह चीज भेजै । कोइ जाता होय तिसहीके सथाते तो हमरे ना जानेका नियम है, अर भेजणी जरूरसेती तब पत्रगाड किसी साथ भेजे अरु मनमें खुसी होय, मेरा व्रत भी अखंड रह्या, हम भी न गये काम भी सध्या, ऐसीतरे करै सो उलटा तोटा भया अरु अतीचार पेसवणप्रयोग लग्या तो ऐसा भी समज श्रावक है सो अतीचार न लगावै। ॥२॥ तीजा अतीचार सद्दाणुवायी कहै है। शब्द अतीचार सो जो अपना नियमके बाहिर कोई पुरुष जाता है, तिससेती कछु काम है। तब उसका विचारै । ना मुज उहाताई जाना तो नही है, उसै नाम लेकर बोलावुंगा तो मेरे व्रतकु दाग लगेगा । ऐसी शंकासेती जरोखे या अगासीकी ऊपर उरा चाय खडा शायकरि मार्गमें जाते आवते मनष्य देखै । अर मार्गमें चलणवाले इणके ताई देखै तब यह खुखारा करै, डोरा की सीख अथवा नखाक थूंकिके नाकनीच छींक करै ऊंचे सादसती, तब वह पुरुष राहके चलणेवाला उपरकी तरफ शब्द सुणिके देखादेखी भई तब चला परगि आवे ऐसे मिलाप करै, तब वह अपने कामकी दोऊ जणा वात चित करिके विदाय करै तब पीछे मनमें अज्ञानके विलास करै, जो मैंने किसी उत्पातकी बुद्धि रची, तिसतें अपनाव्रत निर्मल तरे मेती रख्या अरु औरसेती बोलायके कार्य करणा हूता । सो भी वातनिगत करि लीं ऐसी मूढ अज्ञानी क्रियाकी बोलवणी करै तिसकु शब्द अतीचार तीजा लगै, बुद्धिवान ने समज शुद्धव्रती वे सो अतीचार न लगावै ॥३॥ हिवै चोथा रूपानुपाती अतीचार कहै है, सो कोई व्रतीने अपना घरि कै तक खेत्र मोकला रख्या, और सब त्याग कीया ऐसे कोई अपने कामका आदमी राह बीच चल्या जाय है सो व्रतीने घरभीतर कोई गिडकीके राहको अथवा नालिप्रमुखमें देख्या तब व्रतीने विचार्या इनसै मेरे काम जरूरका है, तिसनें इसका घर तो दूर है वहातक हमसु जावणा नही आवता जो जावता व्रत भूमि परिमाणका दोष लगै, इसवास्ते ऐसा करूं जो उलटा मुझे बोलावणी वू आपही चल्या आवै ऐसा काम मनसोबा घ

रिकै आप अपनै घरसू निकलीके दरवाजै ऊपरा आण खडा रहै, यह भी चल्या आण निकल्या दोनू की एक नजर देखादेखी भई, ठीक जुहारी भई तब दोनूने कितनी वातयी सो करी, अपना मुतलबकी, वह भी अपने ठिकाणे गया अर ए भी घरबीच आयै दिल बीच विचारणै लागै हमनैं मनसोवा करिकै व्रत भी कुछ न लगाई अर हमारा कार्य भी भाया ऐसी हमनैं अकल्ल करी, पिण यह न विचारे इसमें अज्ञानपणो है जो जाणिकै कार्य अपना करै सो अपनी चतुरतामती, सो चोथा अतीचार रूपानुपाती लागै ॥ ४ ॥ तथा पाचमा पुद्गलाक्षेप अतीचार करै है । पुद्गलाक्षेप अतीचार सो जो नियमक्षेत्र बाहिर कोई पुरुष अपनै काम कू जाता है। तब व्रती अध्यानदोष सेती माया कठी केलवणी कू तत्पर भया । जो मैं इस आदमी कू बोलायकै रक्खु तो साम्हने आय मैं खडा हु तो दूषण लागै। तो ऐसा विचारू, कोई हुनर करिकै बिना साद दे कै बोलाउं तब ऐसा विचारीकै आवतै कै ऊपर काकरी फेंकू ममस्या करै पछा वनका देखावै तब काकरी देहमें लगे, साहमो जोवै तब उनने भी जोया, दोनूकी देखादेखी भई महब्बत वातचित करी तब पीछे विचारै हमनें क्या बुद्धिकै दोषसू मिले जैसे लोकीक मौनी बोले नही तिसरीति सज्ञा चेष्टा करिकै कार्य करै सो पाचमा अतीचार पुद्गलाक्षेप लगे तो समजु हूं न सो अनानपणकी वात न करै, तो बडालाभ का हेतु है ॥ ५ ॥ इहा पहिले दोय अतीचार अनानसेती होय, पिछले तीन अतीचार कपटपणे होय, ते सर्व्वं न आदरवा । दुसरा शिक्षाव्रत भया, छठ्ठा व्रतका भेद सेती दशमव्रत संक्षेप है । यह कल्पमें ऐसा बुझी लेना जो परिग्रहादिक सब व्रतमें संक्षेप है ऐसा जाणणा ॥

इति श्री द्वादशव्रत विवरणे दशमदेशावगाशिक व्रत श्र उद्योतसागरगणिनाकृत भाषा सपूर्णा ।

दूहा

अब इग्यारमव्रत लिखु, नाम पोस उपवास ।
जो विधि सहित करै व्रती, तो पावै उल्लास ॥ १ ॥

अथ—इग्यारशमा पौषधोपवास रूप जे शिक्षाव्रत तीजा लिगै है तिहा पोसहका च्यार भेद है। उनमें प्रथम आहारपोसह ॥ १ ॥ दुसरा शरीरसत्कार पोसह ॥२॥ तीजा ब्रह्म पोसह ॥३॥ चौथा अव्यापार पोसह ॥ ४ ॥ एवं च्यारू पोसहके प्रत्येकै दोय दोय भेद है। एक देशसती पोसह, दूसरा सर्वसेती। तिहा प्रथम आहार पोसह देशथी जो तिविहार उपवास कर पोसह करे, अथवा आयंबिल पोसह करे, अथवा तिविहार एकासणा करि पोसह करे। ए तीनू प्रकार पोसह करे सो देश थी आहारपोसह कहावै। उसकी भली पोसह लीयो, पोसह लीधा पहिला उपर्ने घरमें कही रखवे। जो हम पोसह करेंगे सो आंबिल वा एकासणा करेंगे सो भोजनकालें हम आहार करणेई आवेंगे अथवा तुम्हरा आहार उहा ल्यावणा, पीछें पोसह लवे। जब मध्यानके देववंदन करिने रहे तिवार पछी चरवला मुहपत्ती पुंजना ए तीनू उपगरण साथ लेकर पछनटी ओनि करि साधुरीतें उपयोगी रहतो थको मारगमें जयणा सहित चलयो जाय, भोजनस्थानके इरियावहीया पडिक्कम। गमणागमण आलोवे। पीछें पुंजना बिछायके बैसे। आहारका पात्र पहिला है पीछें जो प्रासुक लेना योग्य आहार लेकर साधुकीतें अगृद्ध थका आहार करे। मुखथी आहार बखाणे सरावे नहीं। मुखमें आहार पडे तो नहीं रहे नही यह अच्छा गुण कीया, जठ गिरावे नही आहार करि रहे तब फासु पानीसेती पात्र आहारका हाथ मा धोय पीवे पात्र शुद्ध करी पाणी प्रमुख सुकायने ठेकाकरि पाछा आवे, पीछें फेर उपयोगी थको पुन पाछो पोसहसालह जाय, मार्गमें निसीह जावतां आवतां बोले नही, इसी तरे स्वस्थानमें आनी इरियावही पडिक्कमें, चैत्यवदन करी धर्मक्रिया में प्रवर्त्त तथा जो आहार सामग्री पोसहसालामें कोई सगधर्मिणक ल्यावे तोभी पूर्वोक्त रीते आहार करी पात्र पाछा आवे, पीछें धर्मक्रियामें प्रवर्ते। जो उपवास करि पोसह करे तो आहारथी सर्व पोसह कहीये॥१॥ दूसरा शरीरसत्कार पोसह सो जो सर्वथा शरीर सत्कार जो अपना शरीरके धावन धावन तेलमर्दन वस्त्राभरणादि शृंगार प्रमुख कोई रीतें शरीरकी शुश्रूषा न करे। साधुनी परे अपरिकर्मि हूतो रहे सो सर्वथी

सत्कार पोसह कहीये, तथा तीजा देश सत्कार पोसह सो जो पोसहके बीच हाथपग प्रमुखरी शुश्रषा करनेंरी छूटानी राखें ॥ २ ॥ ऐसी तरें अब्रह्म पोसह श्रीजो त्रिकरण शुद्ध पोसहमें ब्रह्मचर्य पाले सो सर्व पोसह कहीये अरु जो मन वचन स्त्रीप्रमुखरी छूटानी रक्खे, परिमाण राखे या देश ब्रह्मचर्य पोसह जाणणा ॥३॥ तथा सर्व सावद्य व्यापार त्याग करे । सो सर्व थी अव्यापार पोसह, अरु जो एकादिक वस्तु अथवा उघगयना आदेशा-दिककी छूटानी राखे सो देशसेती, सोदेशथी अव्यापारपोसह कहीये ॥४॥ ए च्यारे प्रकारे पोसहके दोय भेद सो आगे आगमविहारी गुरु छते होते तब ते श्रावकजीव शुद्ध उपयोगी बहुत पापभीरु थे जो जो आपे प्रतिज्ञा कीनि है तेमीज शुद्ध पाले, तेमीज रीतें उपयोगमें रहे पै विस्मृत न होवे, कम नेम न करते, गुरु भी अतिशय ज्ञानके प्रभावसेती योग्यता पहिचानते जो यह देश लायकहीज है या सर्वलायक है। कदापि कम वश छद्मसेती होय जाति तो ते तुरति जाणते, जो मुने प्रतिज्ञाम इतनी अविरती लगी तो ब तुरतिही आलोवे पडिकमते ते बडीभूली नहती अरु अब तो ऐसी उपयोगी जीव नही है, सो काल दोष के प्रभावे वक्रजड है। इसवास्ते पूर्वाचार्यनि उपगार विचारते लाभालाभकी तुलना विचार करी ऐसा जीतव्यवहार साध्या छे । तिहा प्रथम जो आहार पोसहमें है सो भेदे दोय करे देशसेतीभी करे सर्व सेतीभी करे जैसी अपन शक्ति सा फक करे अरु तीन पोसह साका रहे, जो सर्व सेतीहीज करे, देशथकी नही वे, ए व्यवहार मेली साधी है। इसीतरे वर्त्तमान प्रवर्त्ते है। अब पोसहरा प्रभाव कह्या है सो लिखीये है ए पोसह व्रत जो सो पापभरित बहुत सावद्य व्यापारी गृहस्थको आरभ बोझ उतारणको विश्रामण ठोर है। विश्रामण करतां अल्पबोझी हूवे । जैसे भारवाहकने शिर बोझ लीया बडी गाठडी उठाई दोय च्यार कोश चल्या । ऐसे में काई विश्रामका ठिकाणा आवे तब ते प्रसन्न हूवे बोझ उतारे, जिस का-रण विश्राम ठोर सीतल छाया ने जलाशय हूवे तिहा क्षणमात्र घडी-काल बैठ आसून्या हूवे थकेला, मिटी जावे, हलवा शरीर हूवे, फिरि बोझ उठाय चले । यु दोय च्यार विश्राम राते थके सुखे मजल सिर

चैं, यु श्रावक भी नित्य सावद्यका व्यापार बोझक बहूत उठाया है। बडा भार साथ लाये चलै है। सो जब पर्व प्रमुख पर्वदिन आवैं तब प्रसन्न होयकर घरका सावद्यकर्मरूप बोझा ग्रहवींच रात्रि पोसहसालामैं विश्रामणरूप बैठ पोसह धारैं, तब सावद्यरूप बोझका श्रम थाक ऊतर जाय, भावनाउपशमप्रमुख सीतलपवनसेती विषयकषाय रूप गरमी मिट-जावणीसे मिट जाय, आत्मसीतल होय। जिनशासनकल्पतरु छायामैं बैठ रचना स्मरण चितवनमैं पाणीरूप जलसेती बहूत दिनका पाप धोवें आत्म ज्ञानदर्शन चारित्रभाव भोजनमैं पोषैं यु वीचवींच पोसहरूप विश्राम लेता आगमक भावस्थानिकैं पहूचैं। इहां आठ दिने वा पनरे दिने पोसह कर सो जीवका फल एक ही का इतना कथा है। शास्त्रकै माथ एक पोसहका लाभमें कया है सो जाणणा। जो प्रभूपूजा पूर्वक एक अहोरात्रिका पोसह करै सो जीव ने हजार सातमें कोडि सत्तहुत्तरलाखि सत्तहुत्तरिलाख सत्तहुत्तरहजार सातसयसत्तहत्तर इतना पल्योपम अर एक पल्योपम का नव भाग कीजें ऐसें सातमा भाग उपर इतना देवताका आउखा बांधै। अर इतनी नरकगति छूटें। एक पोसहकै कीयें इतना लाभ उपाजे। एह अक्षरी थापना है २७७७७७७-७७ $\frac{7}{9}$ ऐसा फल एक शुद्ध व्यवहार पोसहका है। अरु जब व्य-वहारका पोसह करते चेतन निश्चय लगी उस पोसहका फल लाभका तो परिमाण भी नही। यह अगणित लाभ जाणत रत्नत्रयी क्षायिक भावैं होय जाय। तीन लोकमैं भव्य पूजनीक होय इस हेतु पोसह है सो गृह-स्थइं अवश्य हि करणा। पोसा है सो कर्मरोगका औषध है। सो गृहस्थे पर्वदिन अर्थे पोसह करै। तिसकै पाच अतीचार है। उनकी विगत लिखे है, तिहां प्रथम अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जासथारक अतिचार जिम टीकाविषै तथा तखत उपर पोसह सथारो करै तै सथाराभूमि वा तखत पाटादिक पडिलेहै नहीं सुतलै सम्थारेकी जग्या आरुमे अच्छीतरे नीगा कर देखे नहीं, अर जो देखे तो कहूं देख्या न देख्या प्रमत्तपणै सो अप्पडीलहीय दुप्पडीलहीय सिज्जा सथार प्रथम अतीचार पोसहका लागै दूजा अप्पमाजिय दुप्पमाजिय सिज्जासथार अतीचार जो सो हिवै स

थरा रजोहरण प्रमुख पुंजे नही अर पुंजे तो जैमै तैसें गडबड करी सधारो निक्षारे, पण जीवकी रक्षा न करे सो दुजा अतीचार। श्रीजिनशासनकी शैली ऐसी है सो मार्गी जीव जो क्रिया करे तिहां प्रथम दृष्टि पडिलेहण करे अच्छी तरे सब ठौर चीज निगाकर जीव पीछे पूंजणा प्रमुख से पूंजे तद पीछे वह वस्तु वापरे। ऐसा सहज चाल है, तो पोसहादिक क्रियामें तो निपट उपयोग धरी पडिलेहण करे, अरु जयणा सू न करे सो दूसरा अतीचार पोसहका ॥ २ ॥ तीजा अप्पडीलेहीय दुप्पडीलेहीय उच्चारपासवण भूमि ए अतीचार सो लघुनीति वडीनीति परठवणेकी भुमि दृष्टिसूं विलोकन न करे, अरु विलोके तो ज्यूं त्यूं काम चलाय देवे, जीवजतना विना किये परठवे लघुनीति प्रमुख सो तीजा पोसह अतीचार ॥ ३ ॥ चोथा अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चारपासवण भुमी ए अतीचार सो मात्राकी विष्ठाकी मालेकी भूमि प्रमार्जित देखिके न करे। अरु पूंजे तो यद्वा तद्वा करिके काम करे, वडीनीति लघूनीतिप्रमुख जतन से न परठवे सो चोथा अतीचार पोसहका ॥४॥ पाचमा पोसहविहिविवरीए अतीचार सो पोसह करिके आहार त्यागादिक सो क्षुधादिक परिसह लागे। तब पारणाकी चिंता करे जो प्रभाते फलाणी रसोइ वा फलाणी चीज खावेंगे तथा फलाणे बिहाणे कार्यकारण है उहां जावेंगे। उनसें तगादा करूगा। तथा बिहाणेमें उठी पोसह पारिके अछी तरे सू तेलमर्दन करायके अछे गरम पानीसें स्नान करूगा, फलाणी पोसाक पहिरेंगे, तथा कुलस्त्रीके साथ ऐसा मीठे भोग विलास करेंगे ऐसा सावद्य चिंतवे। तथा सध्यासमये स्थंडिल शुद्धि न करे, पोसहमें विकथा करे, पोसहमें निद्रा करे। पोसहका अठार दोष कू टाले सो अठार दूषन लिखे है। तिहां प्रथम पोसहव्रती विना पोसमें छुटे श्रावकने ल्याया पाणी न पीवे ॥ १ ॥ दुजा दोष पोसह निमित्त सरस आहार लेवे नही ॥ २ ॥ तीजा दोष पोसहका पहिले दिन उत्तरवारणे विविध सयोग मिलाय आहार न करे ॥ ३ ॥ चोथा दोष पोसहमें वा पोसहनिमित्त अगले दिन देहविभूषा न करे ॥ ४ ॥ पाचमा दोष पोसहनिमित्त वस्त्रादिक धोवावे नही ॥ ५ ॥ छठा दोष पोसहकेनिमित्ते वस्त्र

आभुषण धडाय न पहिरें वस्त्र न लेवें, अंग गहिना न पहिरें, स्त्री सुहागन होय तौ भी नथ फकत हैं सो सोहागका कुशल चिन्ह है और गहना नवा घ... डायके पोसहमें न पहिरे ॥ ६ ॥ सातमादोष पोसहका निमित्त वस्त्र रगाय पहिरे नहीं ॥७॥ आठमा दोष पोसहमें देहमेती मेल प्रमुख छडावें नहीं ॥ ८ ॥ नवमा दोष पोसहमें सोवे नहीं निद्रा न करें ॥ ९ ॥ दश... मा दोष पोसहमें स्त्रीकथा भली बुरी न करणी ॥१०॥ इग्यारमा दोष पो... सह में आहार कु भला बुरा न कहणा ॥११॥ बारमा दोष सो राजकथ... युद्धकी बात भली बुरी इत्यादिक न कहे ॥१२॥ तेरमा दोष पोसहमें ऐस... देश रीतके अच्छा है न बुरा कथन, कहना नहीं ॥१३॥ चवदमा दो... लघुनीति बडीनीति बिना पूंजे भूमिके परठवें नहीं, परठवे सो अपनें... नाखिसवें ॥१४॥ पनरमादोष पोसहमें पराईनिंदा न करणी ॥१५॥ सोलम... दोष पोसहमें स्त्री पिता माता पुत्री भाईसगधीसेती बात न करें ॥१६... सतरमा दोष पोसहमें चोरीकी कथा न करणी ॥ १७ ॥ अठारमा दो... पोसहमें स्त्रीके अंगोपांगादि दृष्टि लगाय देखें नहीं ॥ १८ ॥ अठा... ही दोष पोसहके त्याग करे करें सो शुद्ध कहीये । इत्यादि विपरी... करें सो पाचमा अतीचार पोसहका ॥ ५ ॥

इति श्रीवारहव्रत दीप विवरणे इग्यारमा व्रत प उद्योतसागर-
गणिनाकृत भाषा संपूर्णा ॥ ११ ॥

। दोहा ।

अब बारम व्रत है अतिथि संविभाग यह नाम ।
पंच दोष आहारके पुनि अतिचार हैं ताम ॥ १ ॥

अथ द्वादश अतिथि संविभाग व्रत लिख्यते । तिहां अतिथि ... विभाग कहीये जिसकु लोकिक पर्वोत्सवादि दिनको प्रयोजन नहीं ... अतिथि कहीये पनर्ले लोकव्यवहारमें समारम्भादिके हेतु तिथि वार विनाह... इत्यादिक सब चिन्हें छोडी दीये, सबही दीन धर्माराधनमें ... जिनकी, वार्ते अतिथि कहीये । प्राहुणा मिजमान छे ... तिथि पर्वदेखिके आवें, हरकोई दिन पथमें चलें आवें उसकु तिथि प... प्रयोजन नहीं अणचिंत्यो आय खडा रहे । त्युं साधुभी विणा निम...

भोजनकी वेला आय हाजर हूवे। प्रायेंसाधु नूहतो दीयें उसके घर क-दापि आवे नहीं अरु भोजनकाले मधुकरी कहीये भ्रमरवृत्ति करे गृहस्थ के घर विना निमत्रण विचरता जाय। गृहस्थकू कामना भी न ऊपजे। अरु गुरु आज्ञा विना कदापि गृहस्थके घर जावे नही, सो अतिथि जि-नाज्ञाकारी शुद्धसाधु उनकू सविभाग करे एतले न्यायोपर्जित वित्त व्यव हारशुद्ध कमाया जो द्रव्यादिक उनसेती अपना उदर भरणकू निपजाया। उत्तमकूलाचार पूर्वक जो शुद्ध निर्दोष आहार सो भी पूर्वकर्म पश्चात्कर्मादि दोषरहित बहुमानसहित भाग्ययोगे गृहविषे साधु आवे थके अतिहर्षवंत हूवा। पाच दानगुण युक्त दाताकी शुद्धिता धरिके, तिहां दानके पाच गुण कहीये, जो जैनमार्गी दातार सो शुद्धपात्रकी प्राप्ति पायके प्रथम गृहाङ्गणविषे मुनिके दर्शनमात्र भये अतरङ्ग की बहुत दिनोकी चाहनाके उल्लासपणेसेती आनदके आसू आवे, जैसे अपना प्यारा परम हितकारी प्राण थी प्रिय ऐसे वल्लभसज्जन दूर गया होवे जिसकू मनसे कदापी नही वीसरे, दिलमे यही वाछा लगी रहेके कब मिले, ऐसी चाहना धरते धरते बहूतकाल वही गया, ऐसे मे वे हितू बडी मुदत पीछे अणचिंत्या आगे खडा रह्या तब उस परमहितूकू देखीकर अतरग उल्लाससेती हर्षके आंसु गिरे सो सीतल आवे। जिम कारण वियोगके आंसू गरम हूवे, हर्षके आसु शीतल वे, त्यू श्रावकभी साधु आयाकू देखिकर प्रशस्त रागभक्तिका उल्लास ऊठे मनमे विचारे, अहो मेरे बडे भाग्य आज मुनिराज बडे हितु पधारे, मै अनादिका भूलया स्वद्रव्य सबल रहित भाव दलिद्रपीडीत ज्ञान लोचनरहित यथामार्ग पीड्या अपारससारचक्रमे पड्या भटकताथा सो बहूत अकथनीय दु ख पावते किसी गिणतीमे नही था सो यह मुनिराजने मेरेकू बहूत दु खी देख बडीसी करुणा भावधरिके बडी महिरबानगी कीजी। जो गुजकू प्रथम ज्ञानाञ्जनशिलाका फिरायकर सम्यक् ज्ञान लोचन खोल दीये। अरु तत्त्वत्रयीसेवारूप आजीविका व्यापार सीखाया तथा रत्नत्रयी धारणरूप नियम देके मेरा अ नादिदालिद्र भाव छोडाया। भले आदमीकी गिणतीमे मुझे ल्याया। ऐसे ए निष्कारण विनगरज् बडे उपगारी सो मेरे घर आगणा आये ॥

भावनारी पुष्टि भेती प्रगट गुणगानके उल्लासनेती हर्ष आनंदके आंसू आवै ॥ १ ॥ तथा जु ससारीजीवकू अत्यंत इष्टवस्तु संयोग पाय रोम उमड हुई रंग रही भक्तिके प्रभावमती मुनि कूं देखते सब रोमराय उह सित होय हृदयमें हर्ष समावै नहीं ॥ २ ॥ तथा मुनि कूं देख बहुमान उठ । जैसे ससारी जीव सामान्य गरीब गृहस्थके घरि राजा आप चलि के आया । तब वे गृहस्थ कैसा मान देवै । मनमें बहुत अचरिजवान उत्कर्ष भर आवै, मनमें विचारै जो मेरे घर महाराज आये घरमें क्या उनकी त्यार री चीज है सो मैं इनुकी निजर करूं. फिरि फिरि ऐसे बडे लोक मेरे घर कहा आवे । ऐसा संयोग कब मिलना है, ए तो मेरे भा ग्योदयमती दुर्लभयोग मिल्या है, ऐसा विचार करी जो घरमें अच्छी वे अजब चीज होय सो निकाले, फेर विचारै, मेरे घरकी चीजकू महाराज कबूल करै तो मेरे बडा भाग्य मानु । एसे उल्लासमें वस्तु भेट धरै, ज्यु श्रावक भी साधु गृहस्थके घर आये, देखकर बहुत बहुमान करै । जो एसे निस्पृह शिरोमणी जगद्बन्धु जगति हितकर जगद्वच्छल निष्कामी आत्मानंदी करुणागार ससारजलधि उध्धरण परम उपगार करण, दक्ष, क्रोधादिक कषाय भंजक, आप तरै पर तारक ऐसे मुनिराज चलिके गृह आये सो आज मेरे बडे भाग्य, जाग्रत दशा सफल भई । एसा हर्ष भर्या ससभ्रम ऊता सनमुख जाय । त्रिकरणशुद्ध प्रणाम करि कहै स्वामी दीन दयालजी पधारीये, गृहाङ्गन पावन करीये । एसा बहुमान देकर घरमें पधरावै, मनमें विचारै आज मेरा अतुल भाग्यका उदय हुआ । आज तो साधु मेरे आहार पाणीका अनुग्रह करे मेरा जे कारण साधु जीको आहार लेनेमें बडी तजवीज है, साधु गवेषणा करै शुद्ध निर्दोषकी प्रतीत आवे जब तो लेवै । इस वास्ते रखे कोई मुझमेती दोष उपजे एसा विचार करिके त्रिकरण योगे बहुशुद्ध मान भर्यो उपयोगी थके विधिपूर्वक आहार लयावै ॥३॥ तथा मीठे वचन सो विनती करै, स्वामीजी ए शुद्धमान निर्दोष आहार है इस हेतु सेवक उपर शुद्धदृष्टि पसाय करिके कृपानिधान करुणा पसारीये मुझे निस्तारीये ऐसे मीठे वचनै परमभक्ति वंत वचन विनति करता आहार देवै, तब मुनिराज योग्य आहार जाणी

लेवै, श्रावक भी जेती दान लायक निर्दोषी वस्तु है उन सबकी निमन्त्रणा इण विधि सेती दान देकर फेर हाथ जोडिके नीचा नमी भूमिके मस्तक लगाय मीठे वचनैंमू वीनति करै, इसरीति सेती फिर कहै, स्वामी मुझ गरीबकी विनती है सुणि लीजीये । कृपा निधान सेवक उपर बडी महिरवानगी करी । मुझे बडा कीया । आज घर पावन भया, उत्कृष्ट भाग्योदयविना मुनी चरण कब रज घरमें कहामू गिरे आजका दिन सफल भया । फेर भी स्वामीजी कृपा करिके असन पान खादिम स्वादिम औषध वस्त्र पात्र शिज्या सथारकादि प्रयोजन उपजे जघन्य सेवक उपर अनुग्रह करणाजी, स्वामी तो बडे तुम्ह हो मुनीराज हो, गुणवान हो । बेपरवाह हो, आपक किसी चीजकी कमी नाही किसी बातका प्रतिबंध नाही है बात नीपरे, प्रतिबंध ही तो भी करुणानिधान मुझ सेवक उपर फिर अनुग्रह करणा युक्त है, तथा अपनी हदताई पहूचावणा जाय, उहांसे वदनाकर पीछा फिरै ॥ ४ ॥ तथा पीछे आयके भोजन करै पै मनमे हर्ष न मावै । भाग्यका उदय हूया, हर्षवश विचारै आज कोइ भली बात होयगी बडा कोइ भाग्य हूया जो ए मुनीराज बेपरवाह निगततृष्णा महज उदासी निरीह ऐसेको मै विनती करिनी, इतना नहिके घरा आय अरु मैंने जो आहार दीया सो भव लीया बीचमे कोइ अन्तरायरूपी विघ्न न हूया । ए तो कोई मेरा पराग तुल्पा निजरमें आवे है, फेर ऐसा पात्र कब मिलै । अरु जो मिलै तो जाणीये अतुल पुण्याईका प्रसाद भया, ऐसी अनुमोदना बेर बेर करे ज्यू कोई मन्द भाग्यवान व्यापार करते थोडा कमावे है, कोइ दिन एक हि मार्दम लक्षद्रव्य कमावे तब जैसी फिरी अनुमोदना चाह करै उनसे जादा समकीती दानकी चाह राखके । ऐसे पाचूगुणसती दान देणा सो शुद्ध दानसे अतिथिसंविभागव्रत हूया ॥५॥ इहां श्रावक वे सो साधु कू दोषरहित आहार देणा, साधु भी दोषरहित आहार लेवे तिहां दोष विचारते सोलह दोष श्रावकमें हूवे, अरु षोडश दोष साधुसेती हूवे अरु दश दोष आहार में उपजे एव ४२ दोष बचाय साधु शुद्ध आहार लेवै । अब बयालीश दोष कहे है । प्रथम आधाकर्मी दोष । जो साधुकी खातर छकायका आरभ करणा

वर्तित दोष ए दोष भक्तिसेती व्हे वा अभिमानसे व्हे लोकिकमें यात चरचै जो ऐसा मानकर गृहस्थ होवे ऐसा आहार लेते हैं। अथवा कोई आहार निरस देता और पाडोसी देखेंगे तो निंदा करेंगे एसा आहार साधुकूं देते हो तिस तें लोक लाजसु ल्यायके अच्छा देणा सो दशमा परावर्तित दोष ॥ १० ॥ इग्यारमा अभ्याहत दोष सो जो अपने घरमें बन्या आहार सो भद्रक जीव आहार लेकर साहमा साधुके ठिकाने जायकरि देवे । सो अभ्याहत दोष इग्यारमा ॥ ११ ॥ बारमा उद्भिन्न दोष सो जो कोठा तथा सिंदुक प्रमुखमें रही चीज है उसकी ताली खोलकर आहार देवे सो उद्भिन्न दोष बारमा जाणणा ॥ १२ ॥ तेरमा मालाहृत दोष सो जो आहार मेडीये अथवा छती परसे उतारे तब आहार उतारिके अथवा तहखानेंमें नीचा उतारिके आहार ल्यावे आहार ऐसी रीतिका साधु कूं देवे सो मालाहृत दोष तेरमा लागे ॥ १३ ॥ चवदमा आछिद्य दोष सो जो और औरके हाथमें रही चीजने छीन लेकर साधुकूं देवे सो आछिद्य दोष चवदमा ॥१४॥ पनरमा अनिसृष्ट दोष सो जो बहुत जणांकी साधारण चीज अथवा टी होय उसमें से उठायकर साधुकूं देवे सो अनिसृष्ट दोष पनरमा ॥१५॥ सोलमा अध्यवपूरक दोष सो जो कलकलतो पानीमें और पाणिपूरी करि भातप्रमुख चूलहे चढावे आधन अवर चावल डाले यतनें आहार में और पूरणी करे जो मनमें विचारे आज साधु गाममें बहुतसे आये है उसमेंसा हरकोई आवेगा इस वास्ते रसोइ पूरणी करो बहुतसी, ऐसी रीतिका आहार साधुकूं देवे सो अध्यवपूरक दोष सोलमा ॥ १६ ॥ एह सोलह दोष श्रावकसो साधुकूं लगे कछु अजानपणे, कछु भक्तिसेती, कछु द्रष्टिरागसे, कछु अभिमानसेती होवे। श्रावक टालकर तजवीन करि साधुको निर्दोषित आहार जाणे तो लेवे ॥१६॥ अथ साधु से सोलह दोष उपजे सा कहीये है। तिहां प्रथम धात्र दोष, सो जो ज्यूं धाय पराया बालककों उदर वृत्तिके अर्थे रमावे, तखतें वचन बोलावे । तेसें साह भी गृहस्थके बालक कु रमावे चुटकी बजावे, तरे तरेके प्यारुका वचन बोल कर बालक रीझावे हसावे, बहुत प्यार दिखलावे, तब उसके माता दिल जाण सायजी हमारे बालकके उपर बडा हेत करते है, तब वे सा-

लकरें निमित्तमेंती उन साधु उपरि दृष्टिराग उत्पन्नित होयके साधु कु आहार देवे, तब धात्रदोष प्रथम लागे ॥१॥ दूसरा दूती दोष, सो जो साधु विहरण गये हुते आनन्द गामितासे सामीद तरे परगामके समाचार लावद आण। हरीरत पीतरकी आण कहे, वधूप्रमुखका थोर सुखचातुरी विनयकारी हैं, माताजी तुम्हारी सुख चैनमें है, और तुम्हारे भाईभी ताजा हैं, ओर भी सब तुम्हारे कुशल है फलाणेकी सादी भई, फलाणेके तेरा भया, या फलाणी चीज तुमरे मेंजेगे वह चीज फलांणी मंगाई है इत्यादि सदशा कहि करिके गृहस्थकु राग उपजावे। इस तरे आहार लेय सो दोष इसका गृहस्थे धर्मसबंधी भवरशुद्धि कारणरूप मेंशे कयो हुवे व भी भिक्षा जसगरे न कहे, ओर जसगरे कहे। मगार तबी तो कदापि न कहे उसी रीत गोचरी जाय संदेशा कहि भिक्षा लेवे सो दूजा दूतकर्मदोष ॥ २ ॥ तीजा निमित्तदोष, सो जो गोचरी गया थके गृहस्थका निमित्त बतावे। ग्रह गोचर शुभदशा अशुभदशा पारमा आठिमा शनी लगावे। ऐसें निमित्तकी तुम्हारे पनोती है इस वास्ते यह दान दीजियो जाप कराईयो, सुख हवेगा, आगे ग्रह बहुत अच्छे आवेंगे तब बहुत सुख चेन पावोगे। तुम्हारे दिलमें सार चिंता है सो फलाणे बातकी चिंता है ऐसी मनकी मानी बात कहे। गृहस्थ खुस हुवे चमत्कार पावे तब अच्छा आहार देवे सो आहारनिमित्त दोष ॥३॥ चौथा आजीविका दोष, सो जो विहरण गये थके आगे अपनी जाति जाहिर करे, अजी साहजी तुम्ह हमकु नही पीछानो हो, हम फलाणे साहके बेटे, फलाणेके भतीज, फलाणे साहेब भाई लागे तुम्हारे मेतो भी ससारका नाता हमारे लगे है, तुम्ह पिछानते होंगे अथवा नही,हम तो सब जाणे है ऐसी रीति भाति कहिके आहार लेवे सो चोथा आजीविका दोष लागे॥४॥ पांचमो वणीमग दोष, सो जो साधु आहार अर्थे दीनपणू भाखे आज ससारमे मतलबार्थी है पर मार्थी कोई नहीं है,तो हमारी खबर कोन लेवे, तुम्ह जैसा कोई धर्मरुचि धार्मिष्ट उपगारी उदारचित्तवंत होय सो जाणे, ओर कोई न जाणे हम तो निराधार निरालंबन धृत्तिवाले है, हमारा बेली कोई नही, इण नगरमें तो एक तुम्हारा ही धर्मात्मा घर है, जो इतनी खबर तुम्ह लेते हो,तवबीज

राखणवाले हो, तुम्ह साधुकी अम्मा पिउ हो, तुम्ह हा तो इतना निर्वाह होता है। इत्यादि दीनता निर्वाह कहिके करे। ऐसे आहार बहुत देवे, तब वे गहस्थकू अनुकम्पा कष्ट अभिमान राग उपजै, तब साधूकू आहार देवे सो पाचमा वणीमग दोष लागे ॥५॥ छट्ठा तिगिच्छा दोष जो आहारके अर्थ गृहस्थके घर गया गृहस्थकी नाडी देखे, ओषध प्रमुख बतावे, रोगका निदान कहे, यह चीज खाये ते व्याधि ऊपजी है, तिस वास्ते गोली जो खावो तो यह रमकी है सो खावो, नही तर दिन च्यार पाच पाच ओषधीका क्वाथ अनटायके खुन तरेसु सम रागिके पीवो ऐसा गहस्थ सुणे तब दुखी भी होय और दिलमे आणे ए साधु सब तरेसु खबरदार है तो इनकू और कछु देवेंगे तो लेणे नही तो आहार अच्छी तरेसु दीया करे। हाममे स्त्रीयादिकू कहि रक्खे। ऐसे रागवान गृहस्थकू करिके आहार लेवा, सो तिगिच्छा दोष साधुकू षष्टम लगे ॥६॥ सातमा क्रोध पिंड दोष सो जो आहारके अर्थ गया गहस्थके घर साधुजन आगेसु देवे गृहस्थ तो महाकृपण है, साधुने जाण्या छता जोगवाईभी आहार देणकी समर्थ नहीं मुखते नाकारा रहे। तब साधु गुस्सा करिके ऐसी भी भाषा बोले, जो छती शक्ति भी साधुकू आहार देणेकी ना कहिता हो तो तुम्हारे घर नहीन रहेगी, तू अगी शोभा नष्ट जावेगी, ए नवनिधी परिग्रहकी जो जो चीज है तिसकी सत्ता नही रहेगी ऐसे आमयकू बोले, तब गृहस्थ ऐसे भयसेती जाणे, कि साधु है तपस्यामे बलसेती कहता होयगा क्या जाणीये, ऐसा होय जाय तो थोडेके वास्ते काहेकु ऐसा कीजिये, तब साधुकू आहार देणेकी समर्थाइ करे तो ऐसा क्रोध करिके साधु गृहस्थसू लेवे तो क्रोधपिंडदोष लागे ॥७॥ आठमा मानपिंड सो जो साधु गृहस्थके घर आहार है तब गहस्थकू देखके बडा मान उनका कहे रिद्धि देखिके, बडा धर्मात्मा रिद्धिवान गृहस्थ हो अथवा इस रीतिसेती कहे, हम भी कोइक दिन ऐसेही लक्ष्मीका लाहा लेते हुते खाते पीते थे, हुकम सब जगा रखते है, हजारूकी कदू गिणती भी नही रखते, गुमास्ते भला वर्तीयेज जगाकी ठीका जवाब खतपत्र आवते ... देशपर देश कोन ... जाणता तो अब साधु भये, ...

आहारके अर्थे नीकले हैं तो अन पीछली बात अर्थ क्या याद करेंगे तब भी गृहस्थ लोक जाणे, म मी बडे घरके है, एती सपदा छोडके भावसे साधु भये दीसे है, तो इनकू आहार भलीतरे विवेकसेती दीनीये, इसमे बडा नफा है, तो ऐसी बुद्धिप्रपच करि अगली गृहस्थावस्थाकी सपदा वराए कहिके आहार लेणा सो मानपिडदोप, तथा गृहस्थ साधुका मान पावे, साधुके पास आये थके मोटी परपुदा बीच मान देवे, ऊचे सिर हाथ गनाकर नतावे, इह येम जा तन जाणे लोकके बीच हमारेताइ आदर-सन्मान दीया थी यह साधु सब तजवीजके है, बडे खोलादी है ऐसा जाणीके आहार देवे अर ऐसे रीतीसेता साधु लेवे आहारादिक सो मानपिंड दोप लगे ॥८॥ नवमा मायापिंड दोपसो जो आहार अर्थ साधू गृहस्थघरे गये थके कोइ कुडकपटकर रूपपरावर्तनादि कला करिके आपाढभूत साधुकी नाई मायाप्रपचसे अथवा बाजीगर तजख्यालादिक लगाय चमत्कार ऊ पावे, लोक आश्चर्य करे। ए तो साधु करामातके धर है। सन विद्या जाणे है, ऐसा जाणीके आहारादिक बडे सन्मानसू देवे, और कहे स्वामीजी चाहो सो ओर लेवो, तो ऐसी मायाप्रपच विद्या फोरिके साधू आहार लेवे सो मायापिड दोप ॥ ९ ॥ दशमा लोभपिंड दोप, सो जो साधु आहार अर्थे गया गृहस्थके घरे तिहा कोई उदार दातार प्रबल दान दाता तन वेसा देखिके गृहस्थ सो अपनी लोलुपतासती अधिक अधिक आहार ल्यावे सा साधु, ले तिम कू लोभपिंड दोप लागे ॥१०॥ इग्यारमा दोप पूर्वपच्छा सस्तवदोप सा जो आहारके अर्थे गया साधु उहा आहार लीये, पहिलेहीज गहस्थकी स्तवना करे जो आगे भी हमने इस गृहस्थसेती अच्छा सुस्वाद च्यारु आहार वहिरे है ऐसा कोई न होयगा, इसी आवर्जना करें, यह घर सदामदका ऐसाही धर्मात्मा है। इनके मातापिता भी ऐसेही हूते, साधु कोई अभ्यागत आये खुशी प्रतिष्ठा मातबर जैसी हुवे। उनकी भक्ति की तारीफ क्या करे, सब जगा यह महिरम है, इस घरका जस प्रतिष्टा मासूर है। उनके पूर्वज ऐसी करणीके हूते तो ए भी उनके हीज पुत्र है, साहजी बडे इनके धर्ममे ~पिक वे गये, तिनका नाम अब ताइ चल्या जाता है, ऐसी ऐसी

स्तुति करे तुगा श्राहार लेंये पीछ मुख उपरि आयके स्तवना करे, तुम्ह बंट लायक जोग्य गे, माधु जनके भक्तिवान हो, तुम्ह जैसे दाता और नहीं । हमेशा तुम्हारा घर योगी हे । तुम्ह श्री जिनशासनमें ग जन्द हो यथ हा । हमारे मातापिता हो, और जनमर्के जाण हो परी चाचल हो, मरद पिछानते हो, यह भला है यह बुरा ह इत्यादिक रीति करिके आहार माधु लेवे मा पुरुवस्तु मस्तवदोष लागे ॥ ११ ॥ बारमा विद्यापिंट दोष, मो जो आहारथा साधु गोचरी जावे प्रथम अ-क्षपूणादिक आरोंय तिनकी प्रसन्नतामेती जहा जावे तहा प्रबल अच्छा आहार मिले यु करि सदा गहस्थके घरमती देवताकी प्रसन्नताम ल्यावे मा आहार क विद्यापिंट दोष लागे ॥ १२ ॥ तरमा दोप मत्र पिंट, मो जो आहारनिमित्त गहस्थ क कार्मण मोहन वशीकरण उचाटण प्रयोग करे, मुग्नवनादि कोई मन्त्रप्रयोग कर देवे, हस्तकला करिके अथवा कर तत्रविधीमती झठा टगिया मात्र अरु टहा तो माचाम-नादि फोरा इति भेद ऐमा करि गहस्थके घरसेती आहार ल्यावे मो मत्रपिंटदोप साधु क लगे ॥ १३ ॥ चवदमा चूर्णपिंडदाप मो जो आ-हारके अर्थ गहस्थके घर गये । अनक जातिके औषधचूर्ण मिलायकर ०र । तिनि रीतिसलत्यता मन कर देवे तब वे आगारी गृहस्थक कहीय मो रागी होय हमार किमी जातका अतर गुरुजी नहीं रखते हैं भल साधु हें ऐसे रागी होयकर आहार न्य । पूर्वे तिगछा दापमें बताय देवे अरु चूर्णपिंड दापम इतना विशेष आपहीन औषध चूर्णादि सिद्ध कर न्य मो चूर्णपिंट दोप लगे ॥१४॥ अब पनरमा योगपिंड दोष सो जो साधु आहार अर्थे पादलेपादिक करि बाट बडा चमत्कार दिखलायके रागक म्यानुकूलकर आहार लवे सो योग पिंटदोष इन पुर्व मत्रादि-योगपिंटदाप कहिया सो शुद्रमत्र इहा ते बड़ा चमत्कार है इति भेद ॥ १५ ॥ सोलमा मूलकर्म दाप सो जो आहारार्थी साधु गहस्थकी अपुत्रीयादिकी गर्भ होणेका औषध बतावे अथवा आप कर देवे अथवा को अनाचारणी स्त्री होय तिसने परपुरुष साथे कुकर्म कीया है अतलकी होय सो मालुम आया जाणीके अपना मन्य मिटावणेका गर्भपाँ

साधु साग टीन मारे स्वामीनी मुझ इत्यादीका उपगार करो यह प
मुयम भया ? मा उपगार कर देवो नहिं तो मुझे मरणा पटेगा,
दीनवचन कर, वर नेर यह वचन सुणिके साधुक करुणा उपजे तब गभ
मानापतन प्रयोग से सा चताय देवे याषध नवीप्रमग, तब वह सु
शायर अच्छा आहार लेकर देवे अथवा मूलकर्म जोर भी विधीस
प्रयोग करे अथवा शांतिकर्म करी ऐसी क्रिया कर लेवे सा मूलकर्मदो
एम साधुक यवश्य कर्म न करणा। ऐसा करिके आहार भी लेणा
मूलकर्म दोषस्वरूप ॥१६॥ सोल दोष उत्पादना साधुसेती होवे अ
पूर्व सोलह दोष कहा सो श्रावकसु वे। तिसकु उद्गमदोष कहीये।
सब बतीश दोष वजरा। ए दोष रचायके आहार लेवे सा एषणा श
॥३२॥ अन्यथा इति। गवेषणा दोष कहे। अब दशग्रहण दोष कह
है तिहा प्रथम शंकित दोष, सो कहु आहारमें उद्गमादिक दोषकी श
आवे ता ऐसा आहार आत्मार्थी साधु न लेवे, अरु जो लेवे तो श
शंकित दोष लगे ॥१॥ दूजा निक्षिप्त दोष सा जो योग वस्तु श
त्यागिके दोषकी सका आश्रित अथवा अचित्त उनमें हाथरगडया
अथवा अयोग्य द्रव्यसेती भाजनग्रसरग्य स्पर्श होय उनमें आहारा
देवे सा साधु लेवे तब निक्षिप्त दोष लगे ॥२॥ तीजा निक्षिप्त दोष
जा मिट्टी पाणी अमख हर काइ सचित्त चीजका परस करिके अ
परस्परसंघट्टसेती अचित्त हुवे ऐसा आहार लेवे सो तीजा निक्षिप्त द
॥३॥ चौथा पिहितदोष सो जो सचित्त वस्तु अचित्तसेती ढांकी वे, अ
अचित्त वस्तु है सचित्ते ढांकी हुवे अथवा अचीत्त वस्तु अचित्तसे ढ
होय ए च्यार भांगेमें चौथा भांगा शुद्ध है अरु तीन अशुद्ध है वे
अशुद्ध भांगी आहार लेवे तो चौथा पिहित दोष लगे ॥ ४ ॥ पा
साहरी दोष, सा जो दाताका पात्रमें अयोग्य वस्तु भरी है सो अवर पा
डालके उसही पात्रसेती आहार साधूकु देवे सो पाचमा दोष ॥५॥
दायक दोष सो जो नपुमक तथा बालक अतिवृद्ध तथा अंध तथा
गुला तथा कपवातसेती शरीर कांपता होय तथा पाउमें शृंखला
१०५ जडी वे, अथवा धानर खाडतावे पीसतावे तथा भूनतावे अ

चरखा चरखी फिरावता कपास लोढावता तथा रूई प्रमुख पींजता तथा मिलोवणो विलोवता जीमता तथा छहकायका आरंभकार्य करता तथा मात मास उपरांत गर्भ स्त्री तथा बालक धवरावती तथा बालकको रोव-तेकू छाडिके अथवा क्रिया करते जो दाता आहार देवें ता ऐसे योगका आहार साधु न लेवे, अरु लेवे तो छट्ठादायक दोष लगे ॥६॥ सातमा उन्मिश्रदोष सो योग्य आहार अयोग्य मिश्रकर देवे सो लेवे आहार साधु को उन्मिश्र दोष लगे ॥७॥ आठमा अपरिणित दोष सो जो आहारने वर्णगन्धरस परिणामान्तर हुये न हुवे पूर्णसंस्कार नही भये। कछू कचा कछू पका ऐसा आहार भया है तिसवेला साधु गृहस्थ दाताके घर जावे तब आहार देवे। घरमें किसीक रुचि देणकी रुचि है नही भाव नही, वे परिणतिवाला यह जाणे है दान दीजिये, ओरकू दीलामें खेद उपजे है य दोनूं गहस्थकू अपरिणत रहाये तो एसा आहार लेवे तो अपरिणत दोष लग ॥८॥ नवमा लिप्तपिण्ड दोष, सो जो आहार लेवे वेहतांके हाथ खरंटे है तब वे दाता दान देनेकू हाथ धोवे पीछे वहिरावे अथवा वहिराए पीछे भी हाथ धोवे तब साधु निमित्त पश्चात्कर्म आरंभ लग्या ऐसा आहार लेवे सो लिप्तपिण्डदोष ॥९॥ दशमा छर्दित दोष जो साधुकू आहार देते अन्न शाल प्रमुख तथा रस घी दधि मठा तथा स्नमती तरकारी मादीया प्रमुख जमिन गिरावता देवे सो आहार लेवे तो छर्दित दोष लगे ॥१०॥ एव ग्रहणैषण दश दोष साधु श्रावक दोनु मिलयासेती लगे। बतालीश दोषरहित आहार साधु लेवे। तदनन्तर गुरुसमीपे आयकरके गोचरी आलोवे। जैसीतरे आनेते जाने अरु आहार लेवे जा क्रियाभई। जो उत्पन्नप्रत्युत्तर भया सो सर्व यादकर गुरु आगे आलोवे सर्व कहे तब गुरु तथा रत्नाधिक तथा और साधुकू निमंत्रण करे सर्वकू कहे साधुजी तुम्ह भी आहार करसो तब साधु आहार करणेकू बैठे उहा आहार करते पाच दोष लगे है सो दोष लिखे वे जाणणा। तिहा प्रथम संयोजना दोष सो जो आहार करता साधु स्वादीयो सो द्रव्यद्रव्यान्तरसेती मिलायके खावे। तरकारीमे लुणमरी खटाई प्रमुख मिलावे, मादी चीजमें मीठो मीलावे ऐसीतरे स्वाद बनायके खावे सा संयोजना दोष। साधुकू तो जैसा

पडथा न तेमाही खावै आगे पीछे न कर । प्रत्येके न खाया जावे तो सब चीज इकठी मिलाय घालके स्वायपीय जावे । पै जिन आहारमेती गृद्धि नहि मोन कर बहुत सबटका वा वडी प्रमुख ऐमा खाने शब्द नहि उपजै । बहुत पापट प्रमुखका बरटका वावे । ऐमो भी न करै, बहुत वचन चाहु गम न हैर । एमा आहार न करै अरु जो साधु द्रव्यातर मिलायके रसगनी खाय सरडका प्रमुख करै सो सयोजना दोप प्रथम ॥ १ ॥ दूजा प्रमाणातिक्रम दोप सो जो पुरुष बतीस कवल आहार प्रमाण है अर स्त्रीर अठावीस कवल प्रमाण आहार है तिहा बतीस ३२ कवल थी अधिक खाय सो प्रमाणातिक्रमदोप ॥ २ ॥ तीजा अगारदोप, सो जो साधु आहार करते आहारदायककी अथवा आहारकी तारीफ करता खावै जो आहारदाता सा भी चतुर है । क्या उनकी चतुराई है भोजन सुरस सुस्वाद है । और हाथके भी परम उदार है । जिसकू देते है । तिनका पात्र भरपुर कर देते है । और घर जानेका ईच्छा नही रहती है । अरु चीज प्रमुख देत है सो भाव करि देते है तिसमें भी आपका आहार तो बहुत स्वादिक है । एसी तारीफ कर खावै सो अगारदोप ॥ ३ ॥ चौथा धूम्रदोप सो जो आहारदायककू वा आहारकू निदित करता खावै । फलाणा दायका महा कृपण है और कछु चातुर्यता भी नही अछी चीजकू बिगाड करिके खाते है । सवाद यहीं तग है। देखो ए चीज कैसी बनती है । यह चीज तो कैसी स्वाद बनती है । अर इनु कमोडकू कैसे करिके खाते है । चावर हैं ता इसमकू कचोद बनाव । ता यह आहार कैसी गले खावगा, या गलेमी उतरे नही । ऐसेमे पेस्वर्ण करिके खावै सो धूम्रदोप॥४॥ पाचमा अकारण दोप सो जो साधु विनयवैयावच सयमनिर्वाह प्रबल क्षुधा शुभध्यान थिरता इत्यादिक कारण विना केवल सरीरकी पुष्टि निमित्त सरस सुस्वाद आहार करै वेर वेर खावे सो अकारण दोप ॥ ५ ॥ ए पाच मडलीका दोप कहे । एवं ४७ । सेतालीस दोपरहित आहार साधु सो अतिथी कहावे । उन कू श्रावक दोप वचायके आहार-निमत्रण करे । उसमे जो साधुने आहार लीया सोई आप भी खावे । अरु ऐसा साधुका जोग न मिल्या तो शुद्ध श्रद्धावन्त जतियका धारक

सुधारक कू अतिबहुमान सू बोलावे । भगति भावपूर्वक जीमावे वे जीमे सोइ आप खावे । पक्तिविच्छेद आहार न करे । प्राये व्रतपोसहके पारणे मुख्य है । प्रवाहे कारण ओर दिन भी व्रत करेहीज है । उसके पाच अतीचार है । सो कहीय । तिहा प्रथम सचित निक्षेप अतीचार तो सचित्त चीज मट्टी जलकुंभ जलता चूल्हा अथवा नानका ढेर वा स चित्त पातफल ऐसी चीजके उपरदान देणे लायक वे सो आहार धरि राखे एतले तुच्छबुद्धि दिलमे अणदेणेकी बुद्धिसती विचारे । जिमि कारणसेन अतिथि सविभाग रूप व्रत लीया है । अवश्य साधु कू देणा पडेगा । सब चीज की निमत्रणा करणी पडेगी । जब साधु भी लेण लायक आहार देखकर लेवेंगे तो हाम ऐसी बुद्धि करू निमत्रणा करु आग्रह करू । फिर साधु तो लेवेंगे नही । इस वास्ते सचित्त चीजका ससर्ग आहार उपर धरि राखे । ऐसा आहार सर्वथा लेवेंगा नही ऐसी कटीलताई सु आहार उपर सचित्त चीज उपर राखे । पीछे साधु कू आग्रह कर बोलावे । सब चीजकी निमत्रणा करे । झूठी भावना भावे साधु सदाप आहार देखके पीछे हट जाय, लवे नहीं । तब कुटील चाणे मैंने साधु कू निमत्रणा करी झूठी भावना भी करीके आग्रहसेती चलाते साधूने मेरा व्रत भी सझाया, अगण आये अर आहारका भी खर्च न भया ऐसा फल करे । सो प्रथम अतीचार तो ऐसा कै तो कुबुद्धि कुटिल ने सा करे के अज्ञान भद्रक भावसे होय ॥ १ ॥ तथा दूसरा सचित्तपिधान अतीचार सो जो दान देणेकी चीज सचित्त फल पत्रादिक से ढाक रखे । ए भी अणदेणेकी बुद्धिसे वा अज्ञानसे होय सो दूसरा अतीचार ॥ २ ॥ तीजा अन्य व्यपदेश अतीचार सो जो अण देणेकी नियत सेती साधु आवे, जब बडा भाव दिखायके आहारकी चीज अपने हाथमे लेकर साधुकू मुख आगे धरे । तब साधु अपने आचार हाने से पूछे जो ए चीज कुण सबधी है । तब दाता कहे स्वामीजी लीजीये । हमारा नही है हमारे भाईका है सो अपनाईज है वे भी तो बहुत भाविक है धर्मरूची है । दीया सुणीके बहुत खुसी होत है । इस वास्ते आप लीजीये, कछु खतरा नही है एसा बहुमान करे मनमे जाणे है पराई

चीज तो साधु लेवेंगे नही इसवास्ते बहूत भाव दिखलावे। साधु विन लाये फिर जावेंगे। हम अपनावत भी साज्या, कछु खरच भी न भया। ऐसी गा्की मति रेक्के सो तीजा अतीचार ॥ ३ ॥ कोई दृष्टि रागी ना दाता दृष्टिरागसेती देणकी बुद्धि सो पराइ चीज कू अपनी करिके देवे सो भी इनमें आवे। श्रावक कू तो आहारार्थी साधु आगे ग्रहात्य र सा कहणा जरा भी इनमे रपट न करणी। अब चौथा मत्सरदान अतीचार सो गोचरी आया साधु गृहस्थके घर कोई निर्दोप चीजकी उनी इच्छा। अरु आपकू उस चीजकी खप है। तब वे गृहस्थ सो उस चीजका जाचना करे तब दाता वे सो दीठी चीजकी ना कहि शके नहीं तब मनमे रीस करि देवे सो मछरदान कहायो। अथवा कोई सामान्य गृहस्थ दान अछी भाति प्रबल दान देता है। उनकी तारीफ मुनिके सही न जाये तब कोइ ईर्षा धारि कहे। ए सामान्य गरीब होकर दान देता है ऐसा लोक तारीफ करे है, हमसेती वरता क्या लेके करेगा। तो ऐसा हम दान देवें। जो इनसे दीया नही जाता है आपमें धाकके पेट जायगा। परगुणकी ऐसी ईर्षा धारिके देवे सो भी मच्छरदान ॥ ४ ॥ पाचमा कालातिक्रम अतीचार। सो जो साधुकी गोचरीका समय हूया जाणिके साधुकी गवेषणा न करे। जब जाणे यह साधुने आहार लेकर अब पीछी धावककी जागेका वखत भया। साधु भी अपनी खप माफक आहार की गवेषणा करल्याया औरकी खप नही तब गृहस्थने कुटिलता पणसेती विचार्या आहार तो ले आये है अरु वह खप होयगी तो थोडी जायगी तब विचारके बोलावे। फिरते वखत स्वामीजीकू ढुंढे। ऐसेमे साथ आहार ले करिके अपने स्थानिक जाते है, तब वह श्रावक आडा फिरिके वडी विनती करे। स्वामीजी अगण पाव धारीये, मेरा मनोरथ सफल कीजीये, मुझे निस्तारिये, कछु शुद्ध आहार लीजीये, ज्यू मैं भी परमपद पाउं, तब साधु कहे, महानुभाव हमारे तो आहारकी कछु खप नही, ज्यादा हमारे कोन कामका ऐसा कहीके आगे चलते होय तब वह कुटीलदाता क्या कहे। स्वामीजी मुझे दीयाविना खाणा नही तुम्ह कछुकही वहिरोगे नहीं तो मै भी खाउंगा नही, तब साधु अतरायके

भयमेती विचार्या, जांगे पिण रुष्ट बहुत लगेंगे नही तब जायके किंचि त्मात्र आहार लेके आवे, तब उसने विचार्या मेरा व्रत भी रहा, अरु रुष्ट आहारकामी गरच न भया अथवा साधुक स्थंडिल भूमि जाता देखी पूठीलता ही आडा फिरिके कहे, स्वामीजी धर्मपधारो शुद्धमान आहार लेवो तब साधु कहे, महानुभाव अब तो हम आहारपाणी कर चुके, अब निहार भूमिकू जाते है, तब वह मर्कटभाव दिखलावे, मेरा भाग्य नही, मेरे बहुत अंतरायका उदय है, देखा बहुत बेर ने गई, साधुका गोचरीका वख्त जाता रहा हमारे घर अबेर भयी। एसा पश्चाताप करे ए भी पाचमा अतीचार, अथवा अवर्दवतकी नियत सो पहिले आप जीमिके पीछे साधु कू बोलावे, कालातिक्रम भया, तो साधू कहा कू आवे कदापि आवे तो बासी रहेतो आहार साधु कू देवा, साधु कू वेसे आहारका भी कछू हर्ष शोक नही, माया खडी रहे माडा देणा इनके तो यह भी अछा वह भी अच्छा यह विचारे हमारे बहुत खर्च न भया ए पाचमा अतीचार ॥ ५ ॥ ए अतीचारमे पहिला तीन अरु पाचमा, ए च्यार तो भयमेती हुवे, वा अज्ञानपणमेती भोग भावमे अरु चोथा द्वेषमेती होय। ए चोथा शिक्षाव्रतकी मेली । इतने समकीत मूल बारह व्रतकी विगतवार पूर्ण भई ॥ १२ ॥

अब समकीतमूल बारहव्रतधारी श्रावक कू एकसो चालीस १२४ अतीचार की खबर राखणी। ए सब अतीचार जाणपणे रखे पै आदरे नही इस वास्ते एकसोचोवीस की विगतवार लिखीये है। तिहा प्रथम सम कितके पाच अतीचार, तथा बार व्रतके प्रत्यके प्रत्यके पाच पाच अती चार ऐसे बारह पचा साठ, अरु पनरे कर्मादानके, इतने सर्व मिलिके ऐसी ८० भये अतीचार। तथा सलेषणाके पाच अतीचार इतने भये पच्चासी ॥८५॥ तथा ज्ञानाचारके अरु दर्शनाचारके अरु चारित्राचारके ए तीनुके प्रत्यके प्रत्यके आठ आठ अतीचार जाणवा, ए सर्व ॥ १०९ ॥ अरु तपाचारके बारह अतीचार ए भये एकसो इक्कीश ॥१२१॥ अरु तीन वीर्याचारके अतीचार यु सब मिलाईये तब १२४ एकसो चोवीश अतीचार हुवे। इन सबको व्रतधारी बुद्ध करिके दूर रखे अतीचार

लगाय नहीं इति ॥१२४॥ एकसा चाराश अतिचारकी विगत लिखे है तिनमें समकितके ५ तथा बारह व्रतके ॥६०॥ अरु संलेखनाके पनर एव ८० अतीचारका जो स्वरूप व्रतकी विगतमें लिखे गये है। "नारी चामालाम अतीचार रहे। उनका स्वरूप कहे है। तिहा संलेखना के पांच अतिचार कहे है तिन्ह प्रथम संलेखनाके दोय भेद है। १। एक द्रव्य संलेखणा दूजी भावसंलेखणा। तिहा द्रव्यसंलेखणा सो जो साधु श्रावक यथाशक्ति मनोरथ करे सो प्रथम संलेखणा तप करे आगमोक्त विधिसेती करे, तिहा संलेखणा तप तीन प्रकार कहे। उत्कृष्ट मध्यम अरु जघन्य। तिहा उत्कृष्ट चार वरसका, मध्यम बार मासका, जघन्य बारह पखका, एतीतूकी विगत संलेखणा त प्रथम च्यार वरस विचित्र तप करे पीछे फेर च्यार वर्ष विगयरहित विचित्र तप करे पीछे दोय वरस एकान्तर उपवास करे पारणे आंबिल करे पाछे षट्मास नाना विकृष्ट तप करे, अठमतीक्रमन करे। पारणे आंबिल करे। पाछे छह मास अतिविकृष्ट तप करे, अठममें तप क्रम करे तथा पारणे आंबिल करे। पीछे एकवर्ष निरंतर आंबिल करे एव बारह वर्ष उत्कृष्ट तप पूर्ण होवे। इसीतरे मध्यम तथा जघन्य भी जान लेना तथा वरसकी ठौर मास तथा पख जानना ए संलेखणा तप करत सरीरगत रसधातु सब सोखाय। अरु क्रमाक्रमसे अनशन करना पाछे सब सरीर करे तब उनके द्रव्यसंलेखणा कहीये। दूजी भावसंलेखणा सो अंतरंगती विषयकषायनोकषाय रागद्वेष इत्यादि दोष कू अति क्षीण करे। एतले प्रबल कारण विना विषयकषायादि उद्दीपन न हूवे विकार न पावे, इतले महात्मा करे अपनी चेतना समता मग्न रहे सो भावसंलेखना कहीये पाछे गुरुपास आवे तब वे गुरु उनकी परीक्षा करे। ऐसे जो बाह्याभ्यंतर दोनू संलेखणा भई अथवा बाह्यकीज भई। ऐसी परीक्षा करे तब गुरु रोड गीतीका वचन बोले, जिनके सुणते अचानक तुरत कषायोदय थे तब तिन साधु कू दोनू संलेखणा अनुक्रम बाह्य की भई सो साधु गुरुवचन सुणिके नम्रभाव हूयके बोले। श्री गुरुस्वामीजी की करुणासेती क्या न हूवे आपकी कृपासेती व्यवहाररीति वा भई परंतु

तत्त्वार्थकी बातका तो गुरुजी आपही जानैं ऐसी रीतिसेती मार्दव वचन सुणिकै गुरुनैं जाण्या इन साधू कूं तो दोनूं सलेखना भई तब अणसणकी आज्ञा दई जातैंसु अणसण क्रिया करावैं तथा कोई अयोग्य साधु कूं भी सलेखना तप क्रिया है। तप पूरा करिकैं गुरु पास आयकरि अणसणकी आज्ञा मागैं तब गुरु परीक्षाकी रीतैं विषम वचन कहैं तब वे केवल द्रव्यसलेखनावंत हैं उनसेती कषाय उद्दीपन भया तब न विकल्प करैं देखो सुक्ख सूखकै शरीर भया है सो दरसत नहीं फिरि ऐसी वचन परीक्षाकि सेती पूछै है। ऐसा विकलसें क्रोध उद्दीपन भाव करिकैं अपनी अंगुली एक तोडीकरि गुरुमुख आगे डाल दिनी। देखो ऐसी तो सलेखना भई है फिरि कैसी चाहत हो। तब शिष्यका वचन गुरु विनयसेती मन सुणिकैं देखिकैं सिर धुणायकैं कहनै लगे है साधो तुम्हारे तोडनेका पहिलाही दीन है। तुम्हनैं हमारे लगैं तो कछु भी न कर्या। जिस खातर दोष मिटावणैं कूं तप कीया था सो दोष तो ज्यूंका ज्यूंही है। ए दुर्बल शरीरता अज्ञान कष्टसेती अनतीवार कीया होयगा, पिण कछु अर्थ सर्या नहीं। इस शरीरकै क्षीणपडनेसेती हमतो नही बखानते। अंतरंग शीतलता प्रगट भई नही कषायादिक अग्नि तो उपशांत न भई। बिना भाव सलेखणा कोई आराधिक होय सक्ति पावैं नहीं। इस वास्तै तुम कूं अणसणकी योग्यता नहीं है। जो सक्तिकी चाहना तो कषाय नोकषाय विषय इंद्रियके तेतीस, गारव इत्यादि दोष कूं मिटावो सु मोक्ष कूं तुम्हारा मनोरथ फल, ऐसी शुद्धिता करै ऐसी परीक्षा करैं। ए सलेखनातप मुख्य करि पंडित मरण निमित्त है। इस वास्तै दोनूं सलेखणा कीयैं पाच अतीचार तज तो आराधक कहाव, समाधि सेति पंडित मरण कहीयैं, तिहां पहिलो इहलोगा-संसप्पयोगे अतीचार सो जो सलेखनादि धर्मप्रभावै फेर आय दश आर्य कुले उत्तम उत्तम मनुष्यपणकी चाह करूं सो इहलोगासंसप्पयोगे अतीचार सो प्रथम ॥ १ दूजा परलोगासंसप्पयोगे अतीचार सो जो अणसणसी परलोगैं परभवैं देवेंद्रादि पदवी पाऊं सो दूजा अतीचार॥२॥ तीजा जीवियासंसप्पयोगे अतीचार सो जो अणसण लीयैं बहुविधि

मत्कार स्तवनादि गुणी घणा लोकका आगम नदना महोत्सव देखिकर मनमें जाणैं दोय दिन अधिका जीवीये तो भला ऐसा विकल्प उठ सो तीजा अतीचार ॥३॥ चोथा मरणाशसप्रयोग जो अणसण कीधे क्षुधादिक परीसह पीड्या मनमे विचारे किवे मरण सिताबी हो तो भला, ए पीडा मही न जाये,पार उतरीये,ऐसा विकल्प ऊठे, चोथा अतीचार ॥४॥पांचमा विषयासंसप्पयोगे अतीचार सो अणसण कीवे अणसणका फल कामभोग प्राप्ति चाहै, सो कामभोगाससप्पयोग अतीचार, पांचमा ॥५॥ ए सलेखणाके पांचो अतीचार व्यवहारप्रसिद्ध है अणसण निष्ठाई कहाँ वस्तुगते तो सब व्रतमें लगे जैसे व्रत सब नियमत्याग पूजा विनय वैयावच्च प्रत्याख्यानादि करता थकां इहलोक सुखकी चाह ना रखणी, रखै तो प्रथम अतीचार लगै ॥१॥तथा परलोकें देवगत्यादिककी चाह ना रखनी,रखै तो दूजा अतीचार लगे ॥२॥ तथा ऐसा मनुष्य भव पाया है। धर्मनियमकरणी जीवन्या जिनपूजा महोत्सव करते है, शास्त्र सुणते है, अच्छा है, इस वास्ते बहुत जीये तो भला। ऐसे आयु स्थिति निकटही आय जाय ऐसा विकल्प न रखवे। रखै तो तीजा अतीचार लागै ॥३॥ धर्म करते कोई पूर्वसंचित पापकर्मका उदय हुवा, बहुत असाता पावणे लगा तब मरणकी चाहै तो जो मरीये तो दुःखते छूटीये, पिण यही न विचारै जो मरणसेती कष्ट कर्म छुट नही, मर्ये थके भी अशुभकर्म आगेका आगेका त्यार है। कृतकर्म क्षयो नास्ति एव जाणणा। उलटी मरणकी चाह रखते तो अशुभ कर्मक्षयो नास्ति, पिण पापबंध होता है। तथा अशुद्ध विकल्पे अशुद्ध बंध हूवे इस वास्ते साधु मरणकी चाह न रखवे। रखै तो चोथा अतीचार लागै ॥४॥ तथा धर्मफल तो निर्जरा है और निर्जरा साध्य धरिके जो जो धर्म करे जीवमार्गी आराधक कहावे। उस कामभोगका फल साध्य करिके धर्मकरि है तब पांचमा अतीचार लागै ॥५॥ ऐसे सब व्रतमें सलेखणाके पांचो अतीचार लगे इस वास्ते उपयोग समाधिकें पाचू तजणे सेती साधकता म मेरै। इति सलेखणाके अतीचार स्वरूप ॥ अथ ज्ञानाचारके आठ अतीचारका स्वरूप कहे है। तिहा प्रथम अकालाध्ययन अतीचार। सो जो जिनाकार सत्रसिद्धान्त पढे गुणे तिहा अतीचार लगे सो इतनी कालवेला

जाणणी । तथा सिहानमें एक घडी रात्रिकी एक घडी दिनकी ए दोय घडीइ कालवेला कहीयें, ए कालवेलामें पठणा गुणणा सुणणा कछु भी न करै। ए कालकी वेला अगत उमही कालकी क्रिया पडिक्कमणादिक मुखमेती करै पिण और नया न पढै गुणै नही । ए कालकी अगत मनोगत नपध्यान सुखै करै पै वचनोद्वार न पढै पढे तो अतीचार साधु श्रावक सेलुइ साचरणा, तथा साधुइ कालीया सिद्धात पहिली पोरसी वा चोथी पोरसी शेष दिन विना सूत्र सिद्धात पढै नही । रात्रिकी भी यही ओर दूजी तीजी पहोरमें अर्थचितवन करै । तथा अकालमें मेघवृष्टी हूवै तथा तीन चोमासकी साहा पडिवाकी अढाई दिन असज्झाइ साधी उदशी पनरसी अर पडिवाए अढाई दिन तथा आसो, चैत्र सुद पाचमीमें वदि पडिवातक असज्झाइ । तथा राजा कोरमें महान सग्राम होता हुवै । तिहा तक असिज्झाई, तथा राजा छत्रपती वडा दशाधिपती मरण पाया उसके तरतपर नया राजा न वठे तहातक उण देशमें असिज्झाई । इत्यादि अनेक सिद्धांतकी असिज्झाईका काल कहै उस कालमें श्रीसिद्धात, जो जिनप्रणीत सूत्र कछु पढया गुण्या न जाय । तथा सो हाथमें पचद्री-जीवका कलवर पडया हूवै तिहातक सिद्धात भण्या न जाय । तथा महा हिसा म्लेच्छके नवरोजके के तेहवार कालरात्रिप्रमुख महाहिसाका दिनमें भी सिद्धात पठणा नही । ए अत्र असज्झाई कहीयें इत्यादि आगममें बहुत प्रकार असिज्झाई कही है । उसमें सिद्धात पढणा सुणणा नही अर जो पढै सुणै तो कालातिचार ज्ञानका लागै ॥१॥ दूजा विनय-हीनातिचार, सो जो गुरुका तथा पुस्तकका ज्ञानके उपगरण जो पाटी पोथी ठवणी कवली सापटा सापडी वही नवकारवाली तथा अठारह जातीकी लिपिका अक्षरसहित कागजप्रमुख उपगरणइ पग लगावै । पासमेती दाव थुक लगावै, थूकमेती अक्षर मिटावै अक्षरके उपर स्ती घालै, उपर वेसै, सोवै,फाड नाखै, कोई द्रव्यके उपर अक्षर वे,, तिके पास रावे वैठे वडी नीति लघुनीति करै । अर स्नान मैथुन पजा करै बोलै । पुस्तक, जलावै, जलमें प्रवाहे वेचै इत्यादि आसातना करै और गुरुकी तेतीश आशातना विनयातीचार दूजा ॥२॥ तीजा

मातिचार सो जो गुरु तथा पुस्तकादिकका बहुमान न करें, उनकी अदब नहीं रखें, बहुमान जो जैसे दारिद्रीकूं निधानकी प्राप्तिभयेसेती तब जैसा उल्लास पावै अथवा सामान्यके घर आप राजा चलायके आवै, तब वह जैसा हर्ष पावै अचरिज हुवै तैसे गुरुपुस्तकादिककी भेट करै इन सेती अधिक उल्लास करै। तथा ज्ञानद्रव्य इन्द्रिय सुखमें वापरै। या कोई द्रव्य खाता है उसकूं छुडिके उपाय, छती शक्ति शिक्षा न देवै। उपराठ न करै, मनमें जाणे अपने क्या है जो करेगा सो पावेगा धर्म डगाडे रख और तथा ज्ञानवंतके उपर द्वेष राखै, ज्ञानवंतकै अवर्णवादबोलै ज्ञान प्र जय अंतराय करे छती शक्ति ज्ञान पढता गुणता सुणतेकी साराज्य न करे। ज्ञानके गर्भीर भावमें असदहणा करे, शास्त्रके अटपटे अक्षरके भावार्थ करै हंस कुयुक्ति लगावै। गुरुसिद्धांतकी प्रत्यनीकता करै मतिज्ञानादि पांच ज्ञानकी असदहणा करै, इत्यादि असदहणा अतिचार तीसरा ताजा अबहुमान अतीचार॥३॥ चौथा उपधानहीन अतीचार, सो जो आवक विना उपधान तथा षडावश्यकादि क्रिया करै, तथा साधुयोगकी तप क्रिया विना कीधे सिद्धात पढे पढावै सुणावै सो तप उपधानहीन अतीचार चौथा ॥ ४ ॥ पांचमा गुरुनिह्नवण अतीचार, सो जो अल्पश्रुत अल्पविख्यात साधु वा श्रावकके पास पढया हुवै। मूल उपकार सा उणका, पीछे पठणवाला अपना अच्छा क्षयोपशम उद्यमसेती शास्त्रमें बहुत व्यवहार ख्याता चतुराई भव हुवा। तव कोई प्राणी उसकी निपुणता चमत्कार ज्ञान देखि पूछे, भद्रकलोक बहुमान कर पूछे, स्वामी तुम्ह श्रुतमें सावधान सर्व कला बीच, ऐसी सकलविद्या कौन गुरुके पास पढे तिनका हम भी दर्शन करें जो इहा विद्यमान वे, तो तब वे गुरु तो जैसे शरीर ज्ञानगुणसयुक्त स्वालेखर पोसाकप्रमुख सर्व चातुरप्रमुख रही सीतर दुति उणके नामसेती लाजै, मेरा विद्यागुरु बडे पंडित अमुके उनका नाम लोपन करिके औरका नाम लीया। जो उणके नाममें हमारी बडाइ न करेगे ऐसा विचारै तो वह गुरुलोभी महापापी, मूलगुरु गुढीपावै पांचमा निन्हवण अतिचार ॥५॥ छट्ठा वृद्धसूत्र अतीचार, सो जो सूत्रका अक्षर खोटा उचरे, ह्रस्व दीर्घकी खबर न राखै, अक्षर मात्रा

हीन वा अधिकऊर्के पढै, छंदभग पढै, पदसपदामहित न कहै सो सूत्र-कृटातिचार छट्ठा ॥६॥ सातमा अर्थकृट अतिचार सो जो अपनै अपनै अज्ञान दोषसेती वा कुमति कदाग्रहके उदयसेती अशुद्ध अर्थ करै, विपरीत प्ररूपै सो सातमा अर्थकृट अतीचार, ॥७॥ आठमा उभयकृट अतीचार, सो जो सूत्र अर्थ दोनू अशुद्ध पढै प्ररूपै सो आठमा उभयकृट अतीचार ॥८॥ इति ज्ञानाचारके आठ अतीचारस्वरूप सपूर्णम् ।

अथ दर्शनाचारके आठ अतीचारके स्वरूप लिखै है ।

तिहा प्रथम शका अतीचार सो जो जिनागमके सूक्ष्म अतींद्रिय गभीर भावसुणिके अपना मदक्षयोपशमके योगसती अरु मिथ्यात्वके प्रदेशोदय सेती शाका धरै, जो एह वात कैसे ठहरैगी क्यू होयगी कछ मनमे बैठती नही है क्या जाणिये किसी तरै साच है के जट है ऐसा विकल्प ऊठै सो प्रथम अतीचार । अथ जिसके मदक्षयोपशम है । ऐसा विकल्प ऊठै पै मिथ्यातका, बहुत प्रदेशोदय नही है । समकीतका राग उचा है, सो भी गभीर भाव सुणिते मे तो एकाएक आवै नही । पिण वे समकीती यू विचारै जो वात मेरी बुद्धिमे नही आवती है सो मेरे आत्मदोषसेती मुझे आवरणका उदय बहुत है पिण ए वात साची है जो ए सब जिनभाषा है । अरु श्री जिनेश्वरजी असत्य भाखी नही है तिसहेतु असत्य भाषणके तीनू दोष जो रागद्वेष अज्ञान सो तो क्षय गये अरु इनके सहचारी हास्यभयादिक सो भी क्षय गये ता वे वीतराग परमेश्वर कौण कारण झूठा भाखै । विना उद्देश कोई कार्यप्रवृत्त है नही, अरु इस्य कोई उद्देश रहा नही है । उनमेसेती जो केवलि भाखित सो सब सत्य है, इनमे कोई सदेह है नही ऐसी निश्चल बुद्धि हूवे उनके समकीतकी निर्मलता वढती चले, अरु जिनकू ऐसी नही उसके अतीचारके सभवसेती मलीन होय जाय इति प्रथम अतीचार ॥१॥ दूसरा आकाक्षा अतीचार सो जो दानशील तपादिक धर्मकरणी करिके पुण्यरूप फलकी चाह रखै । अति आतुरता करै अथवा आकाक्षा सो पर मताभिलाप, अन्यदर्शनका धर्मकी उत्तीभाव देखि उस धर्मकी चाह राखै ए भी धर्म-श्रद्धा है करणे लायक है । देखो देखो इनमे ...

र । प्रमती मगे श्रद्धा भी मलीन रहै है ऐसा जाणै तो भी उनकू द्रव्ताकू कारण जो सत्गुरु शास्त्रसेवन श्रवण करती महापुरुष चरित्र स्मरण दर्शन उत्सवादिक गमन कर्मग्रंथादिक वा अध्यातमशास्त्र पठन उद्यम न कर । अथवा काट अधर्मरुचि प्राणीसेती परचो करै । अथवा समरचा नीर धर्मगती गिरता रहै जो फलाणा आगे बहुत धर्ममार्गमें ह हता अब ता दिन दिन शिथिलताकू परिणाम निजर आवा आनै ऐसी आपमें शक्ति भी है । बहुविधि युक्ति दिखाइकै उनकू मार्गमाहा स्थिर न करै, गिरतैं न थानै ऐसी आक्तहै तो उमकू उपगारबुद्धि करिकै शुद्धफल दुर्गतिपातादि विपाकदर्शन इत्यादि स्थिरीकरण न करै । मनम जाणै, अपने ताट स्या विगडी चेतना तो उसकी हमारे ताट स्या कम्मा सा पावेगा, श्र उदासी करिके छती शक्ति धर्मसेती डिग्या हुव तिसकू स्थिर धममार्गमें फिरि न करै उसकू अस्थिरीकरण उद्या अतीचार लगै ॥ ६ ॥ सातमा अवात्सल्य अतीचार सो जो साधमा प्राणी जिसकी एक श्रद्धा है यह शास्त्रश्रवण देवदर्शन सामा यिक पासहकरणा इत्यादिक धर्मकरणी एकठी करता न जिसकै साथ बडा संका मरच जा एक गुरुके उपदेशित प्रमुख उनकू साधर्मी कहीये, उनकी छती शक्ति भक्ति न करै । उनकू काट कष्ट सकट आय पडया है । अरु आपमें कष्ट मिटावणेकी शक्ति है ता भी उद्धार न करै, दुःख न मिटावै सो साधर्मी पर बहुत हित न धरै उन कू देखिकै सो भी हर्षवान न हुवै वा सघमध्ये गुणवन्त परपूर्ण सामा यश प्रतिष्ठा सुणिकै प्रीत ऊपजे । साधर्मीका समुदाय मिलै उहा कपाय करिकै विग्रह मान्यामाहीं उपार्जना करावै साधर्मीसेती शत्रुता रीति भवै उसपर अशुभ परिणाम राखै अथवा सर्वजीव सत्तासे सरीखा है इसकी जाति समानगुणपर्यायी वस्तुगति एकही स्वरूप है । इस वास्तै समान साधर्मी भये । य शास्त्रकै उपगारसेती जाण्या तो भी उनकी रक्षा न करै सो अवात्सल्य दोष है, अथवा स्वनिश्चयमें अतरगति अपने ज्ञान दर्शनादि गुणपर्याय है सो निश्चय साधर्मी है सो गुरुकृपा सतो जाणै है । तो भी उस क ज्ञान ध्यान सकर समतारमण सेती पोषे

नगी। अथवा जैसे वार तिनिहार अपने पाप कुडुन कू आदरसे भक्ति सेवालायक विधि उपचार करि पोषे है । तैसे कोई वार्षिक पर्वादि धर्मगत पर्व आये हुते माहमीवच्छलादि भक्ति छती शक्ति करै नहीं सो भी अवात्सल्य दोषरूप अतीचार । अथवा देवद्रव्य ज्ञानद्रव्य गुरुद्रव्य साधारण द्रव्य वगैरे, वा कोई देवद्रव्य भक्षण करता हूवे । उस कू भी छती शक्तिए शिक्षा न देवे । मनमें विचारे आपण कू क्या है । जो खावेगा सो दुर्गतिका देखणवाला होयगा । वा संघमें क्या अपने कू हीन छे और कोइ तो बोलता नहीं । अरु हम इसले कयु किसी भाई कुडुबीका बुरा मनावे । छती शक्ते देहरादिक धर्मस्थानकका द्रव्यकी खबर न राखे, अथवा खंडित विच्छिन्न मैली अपवित्र धोतीसे पूजा करे या पूजा करते और कू इसी रीते इस नेपे देखे कछु न कहे, अथवा पूजा करते मुख कोष बांधे नहीं, आसातना ३३ बचायके पुजा न करे वा पुजन करते बिंब हाथमें गिरावे, बिंबको कलशप्रमुख कलश तिम कू धका प्रमुख लगावे । देहरेकी दश असातना न साचवे है । सामायिक पोसहमें थापनाचार्य पडिलेहण करते हाथमेंती भूमिमें गिरावे भक्ति बहुमान न करै । ए सर्व सातमा अवात्सल्य अतीचार लगै ॥ ७ ॥ आठमा अप्रभावना अतीचार सो जो छती शक्ते धर्मकी उन्नतीना कारण जो है महा हर्ष सेती सत्तर प्रकारकी पुजा एकसो अठोतरी इकवीस प्रकारकी छोटी शक्ति व्यवहारे अष्टप्रकारकी पुजा प्रभावना संघभक्ति रथयात्रा तीर्थयात्रा संघ सहित जाणवा । बिंब महोच्छव प्रतिष्ठा कराणा तीर्थोद्धार करण, पाँचवा उपदेश प्ररूपक नवा प्रसाद करावणा और गुरु आचार्य भट्टारक प्रमुख आये सपदायुक्त अवारित दान देवे छती शक्ति कमी न करे सोनु के रतनू के न्यु छना करे । नगर प्रवेशे उदार चित्तसे जो अपनी सामर्थ्यसे व तो चाहटाप्रमुखे सोभा रचावे प्रतोलीप्रमुख विविध विभूषा बनावे, दान देवे, उदारतासेती ए सर्व शासनकी उन्नतीकी रीति भांति है जे कारणे ऐसे महोच्छव महोत्सव बहुमान दानकी उदारता इतने पीछे लिखे सो सर्व कोई । धर्मकी अनुमोदना करिके पुण्य उपाज । शुभ

अपने भी एमें कारणें परिणाम निर्मल हूवे, कोई लें ऐसा जाने, मरी उमरमें नाने ऐमें परिणाम समर जाये । शासनकी प्रभावना करत जीवनू उपगारी हूवे ऐमा जाणें हैं अरु छती शक्ति है ता भी न करें है या निंधे प्रभावना अतरगतिमें जिहा जिहा पुष्टनिमित्त ना परगु ान शास्त्रश्रवण मानुमरन निणसेती आत्माकें गुणकी वृद्धि न बन्न निजरा हूव आत्मामें ज्ञान प्रकाशें ऐमा सब जाणें है पै न करें मो अप्रभावना दोष अतीचार आठमा ॥ ८ ॥

इति दर्शनाचार अतीचार स्वरूप ॥२॥

अब चारित्राचारके आठ अतिचारस्वरूप लिखें है । तिहा प्रथम अनुपयुक्तगमन अतीचार, सो जो मार्ग चालता मन वचनकाया एकत्र उपयोगरूप प्रणिधानयुक्तगमन हूवे तिहा साधुकू झमरप्रमाण भूमि दृष्टिपडिलेहण करतो जाय एतलें ईर्यासमिति युगति गमन थे, तिहा साधुकू सदाकाल अर श्रावकनू सामायिक पोसह कीये हूवे सो अनुपयोग चपलतायुक्त प्रवर्ते सो प्रथम अतीचार चारित्र दोष लागें ॥१॥ दूसरा अनुपयुक्त भाषी अतीचार, सो जो साधू सदा, श्रावक सामायिक पोसहमें दाय भाषा बोलें तिहा भाषाभेद च्यार है, तिहा प्रथम सत्य भाषा जो जैसा हूवे तैसाइ कहे, पै कसरेश न कहे सो सत्यभाषा । दूजी असत्यभाषा जो कूडको कूड कहे सो असत्यभाषा ॥ २ ॥ तीजी मिश्रभाषा जो कूड झूठी कहू साची जैसे आज नगरमें दशका जन्मभया सो कहे सो मिश्रभाषा ॥३॥ चोथी अनुभयभाषा सो साची भी नहिं झूठी भी नही, जो लोकव्यवहार बोलणा, जो गाम आया रात्रि पडी दिमीका नाम कहणा, नगरपाल लिछमीधर देवदत्त अमर इत्यादि व्यवहारभाषा चोथी ॥४॥ तिहा साधु सदाकाल अर श्रावक सामायिक पोसहमें प्रथम अर चोथी ए दोनू भाषा बोलें, सो प्रणिधानयुक्त उपयोगी जयणायुक्त बोलें । इहा विना उपयोग अशुद्ध बोले सो दूजा अतीचार ॥ २ ॥ तीजा अनुपयुक्त एषणा अतीचार, सो जो पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त बयालीदोष बचाय भिक्षा लेवें, पाच दोष बचाय करें आहार करें सो चारित्राचार है उससेती विपरीतपणे आलेवें सो तीजा अतीचार इहा एषणा शुद्धिमें ओर भी वस्त्र पात्र

मिज्या सथारक वसती प्रमुख जो चारित्रकूं उपगारी सर चीज निर्दोष लें तो आचार, सदोष लेणा सो नहीं अतीचार लागै। ए भी आचार साधुकूं सर्वदा, गृहस्थकूं सामायिक पोसह लीधे अपनी दशा माफक पालें. उनमें अनुपयुक्त प्रवर्त्ते सो तीजा ॥३॥ चोथा अनुपयुक्त आदान मोचन अतीचार, सो जो साधु सदाकाल श्रावक सामाईक पोसहमें जो जो चीज लेणी फेर छोडणी सो चीज पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त उपयोगी हूता, द्रष्टि पडिलेहणपूर्वक लेवें इसीतरै छोडें सो आचार है, अरु जो अनुपयुक्त अविधिसेवी आदान मोचन करें सो चोथा अतीचार कहीयें ॥४॥ पाचमा अनुपयुक्त परिष्ठापन अतीचार सो जो साधु सर्वदा अर श्रावक सामायिक पोसहमें लघु नीति वडी नीति मल श्लेष्म उचार पासवण खेलनक सिघाण पारिठावणीयादि परिठवणें लायक वस्तु सो निरजीव भूमिके स्थानकमें द्रष्टि पडिलेहणपूर्वक पुजन पुमार्जना करिके परठवें सो आचार है। उन सेती विपरीति प्रणिधानरहित अनुपयोगी हूतो परठवें सो पाचमा अतीचार है। इहा दोय पेहली समिति सामायिकमें तो अवश्य साचवणी है, नहि तो सदाकाल जैनधर्मकू ए दोनूंरा उपयोग रखणा ए जैनधर्मरा मूलमार्ग है ॥५॥ छठा अनुपयुक्त मनप्रवर्त्तना अतीचार सो साधु सर्वकाले अरु श्रावक सामायिकादि धर्मकरणी अवसर सर्व कुविकल्प छोडिके सूत्रार्थ चितनप्रमुख आलंबनयुक्त उपयोगीथको मनकू थिर रखें सो मनगुप्ति आचार,इन सेती विपरीत आर्तध्यान सेती अविकल्पमें मन दोडावे सो अतीचार छठा ॥६॥ सातमा अनुपयुक्त वचनातिचार सो जो साधु सर्वकाले, अर श्रावक सामायिक पोसहमें प्रायें मौनत रहे। अर बोले तो भी उपयोगी पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त, अवश्य कारणयोगे निरवद्ययुक्त मस्त अविरुद्ध हितकारी शुद्ध भाखें। सुनत असगुर असा वचन रहे सो वचनगुप्ति आचार, इनसेती विपरीत निष्कारण जैसे तैसे बोले सो अतीचार सातमा ॥७॥ आठमा अनुपयुक्त निष्कारण यागचपलता अतीचार सो जो साधु सर्वदा, श्रावक पोसह सामायिकमें इन्द्रियकूं गुप्ति करि राखें। अर अवश्य कारणयोगे उपयोगी प्रणिधानयुक्त आज्ञाप्रमुख जत्नासेती हस्तपादादिक आकुंचन प्रसारणा करिना उठबैठ। सो व

आचार, अरु जो निष्कारण अनुपयुक्त अविधिपूर्वक जो हाथ पार
रात्रि योगन्यसता ... सो अतीचार आठमा जाणना ॥८॥ ए उ
पर्य रक्षे, पै आदरणा नहीं । इहा गुप्तिधर्म सो उत्सर्ग है अरु सो
इर्यादिक पाचु सो अपवादधर्म, ए आठों धर्मकी माता कहावे । सो
धमरूणी है सो ए आठयुक्त सो आचार, अरु उस विना अतीचा

इति चारित्राचारके अष्ट अतीचार स्वरूप कह्या ॥३॥

अथ तपाचारके अतीचार लिखे है ।

तिहा तपका मूललक्षण ए है जो श्री जिनेश्वरजीने बार प्र
तपप्ररूपणा कीधी सो तप परम निर्जराका कारण है, इच्छा जो नि
करिके मनमें गिलानपणो नही, मन हारे नही । अगिलाणे कार
रहित विपालुष्टान गरलानुष्टान रहित अन्योन्या अनुष्टान रहित प
इहलोके आजीविका हेतु मातु पूजा हेते, परलोके देवादि पदहेते इत्य
आसयरहित, क्रोधमानादिकषायादि रहित, उत्साहसहित समताम
चित्तकी प्रसन्नता सहै पण केवल कर्मक्षय निमित्ते करै उनकू शुद्ध
कहीये, वे तपके बारह भेद सो लिखे है । तिहा प्रथम तप अणसण
जो जो उपवासादिक विविध प्रकारके जो है सो करिकै इसीतरे वन
खाउगा ऐसा मनमें विकल्प करै । इहा ससारमें आहार मज्ञादि दो
बडा कलक है, सब आरभका मूल है, 'छह कायका हूवे जब ओटा
तब एक रोटा' ऐसा अनादि रोप जिनवचन सुणीके मैं जाण्या मैं
के छोडणेको तु लाचार है । तब मोक्षार्थी जीव अपनी शक्ति योग्य
मित काल कवलाहार त्रिविधयोगे त्याग रूप पचखाण करै । ए
धारणा परिमाणकाल तोडी छह कायकू अभयदान हूवा, अरु रसेंद्रि
दिक मार्या गये । सकल लक्ष्मी प्रमुख आत्मीक सपदा का बीज
ऐसा सकल मनकामना पूरण समर्थ तप करिके आगले पछिले दि
चिंता अनुमोदना करै सो तपफल व्यर्थ करै, अथवा मनग्लान न
उपवास बडा कठिन भया कन कियाथा, ऐसा पश्चाताप करै । ए
तपमें अतीचार है । इति अणसण तप अतीचार स्वरूप ॥ १ ॥

मीक्रू अठाईस कवलप्रमाण आहार निरोगी शुद्ध काया [illegible] कमनेस आहार जो हूवै सो कोइ रोग औषधादिक [illegible] हूय जाय तो लाचारी है ओर प्रमाण ३२ का है। [illegible] मुरगीका इडा वे तैता ग्रासका कवल है। अपने मुखमें [illegible] सुखमेती इतणा ग्रास लैणा। उनकू भी कवल प्रमाण [illegible] आहार का बत्तीशमा भाग हूय सो भी कवल कहीयै। [illegible] आहार जो करै सो पूर्ण आहारी कहावै वे पूर्ण [illegible] करिकै क्षुधा थकै सतोष धरिकै दोय कवल वा च्यार [illegible] रावै उत्कृ उणोदरी कहीयै, तिहा उणोदरी [illegible] यमे वडे कवल गिणतीकै ग्यारह खायै, वा [illegible] बहुत चीकनी उसकै कवल गिणतीमै ओछे [illegible] खावै तुरति तृप्ति होवै। अथवा ज्यादा खा [illegible] कै विचारै आहारप्रमाण तो बत्तीश कवलका है, [illegible] कवल खायै तो मेरैभी उणोदरी तप भया। [illegible] मैं मादक तृप्ती न खाई गई तिमका नही [illegible] अज्ञान दोष सेती समाने न रावै, सो [illegible] कयो ॥२॥ तीजो वृत्तिसक्षेपतप अतीचार [illegible] सक्षेप तप सो विविध प्रकारकै अभिग्रह [illegible] नियम धरै, वा आहारकी चीज होय [illegible] वृत्तिसक्षेपतप कहीयै, वे तप करिकै साधु [illegible] अपना अपना अभिग्रहकी भी वार्ता गृहस्थकू [illegible], नव [illegible] अहो साधुने कैसे कैसे अभिग्रह लीधै है [illegible] वे अपनी बुद्धि सेती अवसर भये थकै [illegible] परिमाणादि नियम धरतो धरमें सकल [illegible] वो तुम्ह तो [illegible] शिथिल हो, हरि चीज लायकै भोजन [illegible] तो वृत्तिसक्षेप सो द्रव्य अधिक हूय जाय, [illegible] हूवै हमकू जूदी जूदी चीज देणी नही, [illegible] चीज ग्रही जाय द्रव्य गण्या जाय इसवास्ते हलफल [illegible] जूदी देज्यो ऐसी शिक्षा [illegible] वे [illegible]

निपुणता सती लूण मिरच जीरा हींग संयुक्त व्यंजनादिक और मीठी चीज प्रमुख आमलु मिलायाँ सब चीज सुस्वाद वे सो पिरसी, सो खावे मनमें जाणे सब द्रव्यपरिमाण शुद्ध है अरू मैं शुद्ध राखूं हूं, पिण ऐसी मनमें ... प्रथमस्य ... मा मलिन भया ऐसा कुनिरूप सो वृत्ति संक्षेप अतीचार ॥३॥ चौथा रसत्याग तप अतीचार सो जो रस छह विगय मा ... अरु रस मधुर बहुत विकार है, ऐसा समझकर त्याग कीया पाछे ... कारणबिना गुरु आज्ञाबिना निवियाता कर खावै, ... अन्य द्रव्यांतर संयोग मिलाय बहुत तरै अभिसंस्कार करिके ... स्वाद आवै यमाही गुण कर, ऐसी चीज करि खावै एतले ... रसगृद्धि मिटावणेकू ए तप कीया सो तो नही भया सो अतीचार चौथा ॥ ४ ॥ पांचमा काय क्लेश तप अतीचार सो जो कायक्लेश तप साधु मुनी अरु लोच करावै, ग्रीष्ममें आतापना लेह, शीत सहै । ... उत्तर असहके परीसह सहे, निरुद्धासनसे थिर दृढ ध्यान करे निरवासनमें स्वाध्याय करै ए तप साधुको ता करणीय है अरु श्रावक ... सामायिक पोसह वा जाप नवकारवाली सती पंचपरमेष्टीनीस करे काया-क्लेश सहै तिहा छती शक्ति वस्त्रादि लपेट आसनसें करिके मन शरीर आकुलि करिके क्रिया करै वा गद्दि आसन बैठिके जापादिक कर सो काय क्लेश तप अतीचार ॥ ५ ॥ छट्ठा सलीनता तप अतीचार सो जो साधुकू सलीनता तप ... अपने अंगोपांग संवरी राखै, विना कारण हलावै नही अरु श्रावकभी सामायिक पोसह मे वा पूजापादि अवसरे अपना अंग संवरी विनय गुणयुक्त राखै । एतले पाठप्रमाण अनएम ग्रहण गले हाथे देनो आगोपाग मोटसादि न करै एक शुद्ध उपयोगी आंगोपांग संवरी जयणापूर्वक विनयगुणयुक्त प्रवर्तन करै सो सलीनता तप कहीये । तिहा ऐसा तप करिके युनाक्त दूषण लगावै सो सलीनता तप अतीचार कहीये । ए अतीचार छट्ठा । इति बाह्यतप षट्विधिके षट् अतीचार कह अरु अभ्यंतरतप छह प्रकारके जस छहही अतीचार सो लिखे है, तिहा प्रथम प्रायश्चित्ततप अतीचार सो जो साधु वा श्रावक अपने व्रतमें दूषण लगा जाणे तब ज्ञानी गुरुपास आलोयण लेवै, तिहा आलोयण दोय ... है, एक स्थलपरिपयी, स्थलपरार्टीन कोई नियम एक व्रतादिक

अतीचार जाणें तुरत गुरुकु पूछे उनका प्रायश्चित्त लेवे। दूजी बहू विषयी बहूत कालीन उमरगत दूषणकी उनमैं जो एकादि नियमके दूषणकी तो जो हाल स्याणा हूवे उहा पूछ लेवे, अर जब उमरकी बडी बडी आलोयण लेवेकु चाहे तब शुद्ध गुरु ज्ञानवंत क्रियावंत दोनू गुणयुक्त हूवे उनके पास आलोयण लेवे कदापि दोनू गुणयुक्त न मिले तो बहू श्रुत ज्ञानवन्त शुद्ध भाषी पासत्था प्रमुख वे उसके पास लेवे, र उत्कष्ट क्रियावंत है पै सिद्धांतके रहस्य न जाणे तो उसके पास लेवे नही, क-दा ज्ञानवंत पासत्था भी न मिले तो भी दो गुणयुक्त वा एकगुणयुक्त ज-हा वे तहा शुद्ध प्ररूपककी खोजी करे ओर बार बरश जावे, यु खोज कर-नैं अपनै नजिक क्षेत्र सेती सातसें जोजन तक गुरुकुं खोजके, कालसती बार बार वरसतक हूंढे। ऐसें खोजते खोजते कदापि आउखा पूर्ण हुवा तब मूवा तोभी आराधक कहीये। तथा खोजतमैं अरु जहा गुणवंत मिले उस गुरुके पास आलोयण लेवे साधु पासत्था भी वे, अरु नानवान ने ता उसकी बार वरसतक न मिल्या, तब कदाइ खबर पाइ जो एक साधु बहूत श्रुत अर क्रियावंत हूता सो वह साधु काई पापकर्मके उदय मैं पतित भये तब इहा सेती दूरदेशांतर जायके रहे, वेष छोडिके गृहस्थ भया है उसका नाम पश्चाकडो श्रावक कहीये सो फलाणे उस गावमैं है ऐसा सुणीके प्रायश्चित्ती उहा जाय, उस पश्चाकडेकु प्रतिबोध देवे। भो महानुभाव तुम्ह तो मोटी पदवी रत्नत्रयीकी पाय करिके छोड दीनी सो भला नही, तुम्ह भी क्या करो, उदय महाबलवान है, उनके जोर सेती तुम्हारे परिणाम सिथल पमाड दीनी सो होनारथ हुया ही चाहे, तिस सेती अबतो चेतो, फेर पराक्रम फोरो, अब शुभ कर्मके उदयकी असाता पीछे हटणेका समय भया दीसे है, तिसते हमारा भी तुम्ह सेती आण संयोग मिलापका भया है, तिस वास्ते तुम्हकु तो बडा ज्ञान आधार है, देखते मैं क्यू भूलिमैं पड हो इस वास्ते फिरि खबरदार हो। चारित्ररत्न अंगीकार करो आत्माकू तारो, आगैं भी कोई पतित होयकै फिरि जाग्रत भये, सब कर्म खपायके मुक्ति सुखकू भवमान भये इस वास्ते चारित्र लेनो ढील मत करो, ऐसा सदुपदेश सुणिकै उसके परि-

पाम रहमें। ता चारित्र लिरायक प्रायश्चित लेवें उसके पासमें। यू करते न भागे कभी तव कह। मा साहेब गुरु सेती यह गनपाखर के समम में उगार गये। तह चारित्र निश्चय ऐसे ही झूठा लीया कोन गुण, ना उसरे माफक निवहै नहीं ना उलटा महापापी अघोरी वे गा ता ना भवर ह टाम लग चुराई है। तब ऐसी हकीकत कही उन भाव्य गामी, तब पीछे पश्चात्करके जिनमंदिरमें ले जाने उसरे गाशांबिर लगाय पीछे वदना करी आलोयण लेवे, पं अज्ञानी पाम ना। यू गुरुकी मोची नरिके भी आलोयणा लेवे सो जैसे बालक अपनी मातके आगे अपने दीलकी बात कहे, तब कछु राखे नहीं लाने ना, तैम आपकभी गुरुके आगे ऐसी रीति हुवे तिमरीत नि कपटी होय करि तीन गाग मन वचन कायरी कह देवे, फक्र जाणती बातमें छिपा व ना उसरु आलोयणा कहीये, अरु कछु छिपायके कहा तो तद्भवकी हूया नव उसरे शुद्धी हुव नही, ऐसी विधिपूर्वक साधु फने गुरुसमीपे सवे पाप प्रगट कर दीया गुरुने सब पूछ लीया, पीछे गुरु आगमके जाता है सो विचारे। पापकर्म च्यार च्यार तरे लगे है। आकुट्टि १ दर्प २ कल्प ३ प्रमाद ४। एम चतुर्विध पापमें कौन प्रायश्चित लाय कहे, ऐसी ठीक करिके यथायोग्य प्रायश्चित्त तप गुरु देवे, सो शिष्य प्रसन्न हो करि लेवे। जो गुरुजीने मेरे उपर बडी मेहिर करी। सकटमेंस उद्धार किया हमारे बडा सुखीया कीया, शुद्ध उपाय बताया। ए गुरुका उपगार इन निर्मर, ऐसीतरे हर्षित चित्तसेती गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप लेवे। पीठ गुरु उपदिष्ट कालके भीतर जो तप दिया है सो तप लेगा शुद्ध पूरा कर पहुचावे, सो प्रायश्चित्त तपाचार कहीये। अर जो गुरुदत्त प्रणालीका आदिके अपनी मति कल्पनापूर्वक करे। अथवा प्रतिज्ञात कालमती अधिके काल विनाकारण लगावे, अथवा कमवेश करे। अथ वा प्रतिनात रानवेठि सभी करे। पचम अणहूटना करे, अथवा शून्य चित्तमेंती करे, या फिरि तेसाही आश्रवसेवना करे सो प्रायश्चित्त तप अतीचार कहीये ॥१॥ दूसरा विनय तप अतीचार सो जो साधु थाव- र अपनी अपनी दशा माफक आगममें आचार्य उवज्झाये इत्यादि

गुणवतका विनय, जो वंदन नमन अभ्युत्थानादि उचित भक्ति क्रियारूप सो आगममेंली माफक करे सो विनय तपाचार कहींये, और जो आगमोक्तिमें कमवेश या विपरीत करे अथवा अणहूंटता वा दमसे करे सो विनय तप अतीचार कहींये ॥ २ ॥ तीजा वेयावच्च तप अतीचार, सो साधु श्रावक कुलगण चैत्य संघ इत्यादि जिनकू जिनकू जैसा जैसा वेयावच्चकरणा आगममें कहा है उनका वेयावच्च करे, तिहां वेयावच्च सो रोगादिक विघ्न उपजे उनका जो प्रतिकार विविध औषध अंगमर्दन पथ्यभक्तादि योगमें तत्पर भक्तिपूर्वक करे सो वेयावच्च तप कहींये। आचार्यादिकका सयमेती को रा वेयावच्चकी वखत कोई कार्य उद्देशकर टल जावें, वा वेयावच्चमें खोटाइ करे, अरु जो भक्तिहीन अणहूंटता करे वा दमसे करे वा ना करणा ओर से करावे सो वेयावच्च तप अतीचार कहींयें ॥ ३ ॥ चोथा सिज्झायतप अतीचार कहे। सो जो साधुश्रावक अपनी अपनी योग्यता माफक श्रुतज्ञानका अभ्यास करे सो सिज्झाय कहावें। यह सिज्झाय पांच प्रकारकी है। वाचना १ पृच्छना २ परावर्त्तना ३ अनुप्रेक्षा ४ धर्मकथा ५ तिहां प्रथम वांचना, सो जो श्रुतका पढणा वा पढावणा वाचना सिज्झाय प्रथम ॥ १ ॥ दूजी पृछना सिज्झाय, सो जो पढतें संदेह उपजे उनका शिष्यकी पूछना वा गुरनें शिष्य कू कहना सा पृच्छना सिज्झाय दुजी ॥ २ ॥ तीजी परावर्त्तना सिज्झाय, सो जो पूर्वपठित श्रुतका गुणना वा गुरने शिष्य की परावर्त्तना गुणनी प्रेरणा करणी सो परावर्त्तना सिज्झाय कहींये ॥ ३ ॥ चोथी अनुप्रेक्षा सिज्झाय, सा जो पठित श्रुतके अर्थका चिंतवणा वा परस्पर साधु श्रावक मिलिके चर्चा करणी वा गुरु स्याद्वादसेली पूर्वक युक्तिकर शिष्यको निसंदेह करे सो अनुप्रेक्षा सिज्झाय चोथी ॥ ४ ॥ पांचमी धर्मकथा सिज्झाय, सो जो राचिवन्त जीव कूं भावकरुणा पूर्वक धर्मोपदेश कहे धर्म पमावे सो धर्मकथा सिज्झाय कहींयें ॥ ५ ॥ इणे पांचू प्रकारकी सिज्झाय शिष्य या गुरु अपनी दशा माफक यथागम करे सो सिज्झाय तप कहींयें। अर शिष्य विनय सहित हर्षित हुवो गुरु आशय अटकल करतो अनुकूलपणे आसनस्थ प्रशान्त इत्यादि विधिपूर्वक वायणा लेवें

भी प्रमन्न चित्त सेती उसकी योग्यता माफक प्रमाद तजी कै अभिलापणै नायणा देवै सो वाचना सिज्झाय दोनू कू ॥१॥ तथा पृच्छना सिज्झाय शिष्य विनयादिगुणयुक्त आसनस्थ गुरु देखी आसय अनुकूल होय कै पूछै, गुरु भी भावदया धर्मके धर्मरागसेती बहु बुद्धिका खरच करिकै स्याद्वा दशैली अनुसरता ऐसा उत्तर देवै जो शिष्यके चित्तका संदेह तुरत मिट जावे सो सिज्झाय तप दोनू कू ॥२॥ तथा परावर्तना, जो शिष्य तीव्र उपयोगी हुता पूर्वपठित गुणै गुरु भी तीव्र उपयोगी थका सुणै। भूलचूक रहि देवै सो दोनू कू परावर्तना सिज्झायतप कहीयै ॥ ३ ॥ तथा अर्थ की चर्चा शिष्य महाध्यायी और भी निपुणता साधू मिलिकै विविध युक्त जैनशैली पूर्वक करै। तिहा कदाची चर्चा करते युक्तिपूर्वक निर्णय न हूवै अरु कलही होवै तब गुरु भी आगमानुकूल उपयोगी होयकर विशद रीत चर्चाका निर्णय कर देवै सो दोनु कू पूर्वोक्त अनुप्रेक्षा सिज्झाय कहीयै ॥ ४ ॥ तथा धर्मोपदेश सिज्झाय तो दोनु कू पूर्वोक्त विधिपूर्वक उपकार बुद्धिसेती देवै तिहा जो आपकू उपदेश देणे की योग्यता हूवै तो आगम शली पूर्वक उपदेश देवे अर आगम शैलीके नयनिक्षेप प्रमाण सप्तभंगी प्रमुखमें तथाविधि क्षयोपशम न हूवै तब जो बहुश्रुत उपदेश देवै सो हर्षित विस्मय स्मेरमुख हुतो सुणै सो धर्मकथा सिज्झाय तप कहीयै ॥ ५ ॥ ए पाचू सिज्झाय उक्त विधिसेती विपरीत करै दम्भसेती करै वा सिरजोग निर्वाह न्याये तप करै वा अभिमान धरि करै गारवी असूया सेती करै वा सिताब गडबड कर पहूचावै वा अपनी रुच माफक करै, यश अर्थी हूयकै करै सो जो सिज्झायतप अतीचार कहीयै ॥ ६ ॥ तथा पाचमा ध्यानतप अतीचार सो धर्मध्यानके च्यारो पद ध्यावणा है। वे धर्मध्यान ध्यावते जब परिपूर्ण अप्रमत्तता उत्कृष्ट ठाणै पहूचै तब आठमा गुण ठाणा पावै तिहा शुक्लध्यानका प्रथम पाद ध्यावै यू करते आगै बारमा गुण ठाणेकू हूवै तब दूसरा शुक्लध्यनका पायो ध्यावै वे ध्यावते बारमा गुण ठाणा पूरा होय रहै तब च्यारू घनघाती क्षय हुय जावै, तब केवलज्ञान पावै तेरमा गुणठाणा लाभै, पीछै आयुस्थिति माफक तेरमें गुणठाणे पहूचै तिहा सकल कर्म क्षय करिकै मुक्तिसुख पामै ए साधुकी ध्यानकी पद्धति, श्रावककू तो धर्मध्यान ध्यावणेकी योग्यता नही

है। ज बारहौ मूलघाती च्यार कषाय उन्मूलन गुरु है इस वास्तै ये अनित्य अशरणादि बार भावना एकान्त शुभ आत्म स्वरूप ध्यावै। भावना करतें थकां उत्तम जीवकौं उपयोग की निमग्नतारूप लीनता होवै तिन-समें धर्मध्यानकी समाप्ति हुवै, सो ज्यू सूर्यास्त पहिला अरुणोदय आताप कछू नहीं पिण सूर्योदयका सा सार घनघटादि सर्वका अनुभव हुवा चाहै त्यु सुखानन्द भावनाजन्य शुद्धोपयोगमें धर्मध्यानकी समाप्ति स्वरूप धर्मध्यानसरीखा अनुभव होवै, मुनिमानसकी आस्वाद मात्र पावै। पिण ध्यानपदकी पूर्णता पावै नहीं ए जो ध्यान ध्यानयोगमें ध्यानतप कहीयै अर जो ध्यानमें आरै विकल्पयोग चपलतादिक करै सो ध्यानतप अतीचार कहीयै ॥५॥ छट्ठा त्यागतप अतीचार। तिस त्यागतप का दोय भेद है। एक द्रव्यत्याग दूसरा भावत्याग। तिहां सो साधु वा श्रावक अपना अपनी दशा माफक आहार उपधि तथा नव विधि परिग्रहरूप इन्द्रियसुखका तथा अवस्था विशेषे देहका भी त्याग करै शरीरादिकैं सो द्रव्यसेती त्याग कहीयै। अरु जो विषय तृष्णा अरु कषाय क्रोधमानादि उनका जो त्याग करै सो भावत्याग कहा। ये दोन्यूं वेद जिनागममें त्यागतप कहावै है अर जो छती शक्ति त्याग न करै अविवेक करै वा उत्तर प्रतीचार न करै वा पाचमें असमर्थता करै वा निष्फल करै सो त्यागतप अतीचार कहीयै ॥६॥ इति तपातीचार।

अब वीर्याचारके तीन अतीचार है सो लिखै है। तिहां वीर्याचार सो जीवके मन वचन काया ए तीनू योगका सामर्थ्य शक्तिविशेष सो वीर्य कहावै। तिस साधु तथा श्रावक अपना गुणठाणा माफक अपनी अपनी दशा माफक जैसा वीर्याल्लास हूवै तैसा तैसा फल पावै, ते माटै गुणठाणा योगठाण संयमस्थानके भेद पडै सो वीर्यकी प्रबलता मन्दतासेती न्यूना पडणा होता है। तिहां प्रथम काययोगसेती सब करणीमें अपने अंगका बलवीर्य फोरणेमें खामी नहीं करै तथा मनोयोगसेती उच्छाह भाव उमंग प्यार बहुत धरतो करै, अरु वचनयोगसेती धर्म प्रशंसा बहुमानसेती करै। उन्नति उपमा दे देकर बहुत जीवकू करै। अपने [illegible] धर्म प्राप्ति को सराहै, जो धन्य हमारे

श्री जिनवाणी के मार्गसे धर्म पशुलि मिलै अन हमकु भव दु पका भव नहीं इत्यादि त्रिदरण याग शक्ति धर्म करणीमें वीर्योल्लास प्रगट गा यावालागरा आराधक थोड़े कालमें अक्षय लीला पावे, इस भाग्यवान उल्लास नायाल्लाम बहुत है, सो बड़ी करणी मेती उत्तम कार्य काम धर्म करणी में जो छती शक्ति कायबोगे आलस करे हाया बल न पावे या कोई भक्तिविना भयादि कारणे करे या आस्तिना करे इत्यादगी करे, वा लालची अनुष्ठानादि वाछा मन करे या कायायोग वर्यितपातीचार। तथा वचन योगे उत्साह-जाय जिनराय स्तवनादि करे नहि। मद मद माषा सती गद गद्गद भरणाकी तीरे करे तथा ओर कोई धर्म कार्य करता हुंने उनर अत्यन्ता करा इत्यादि जा एह धर्मकाम है ये बड़ा मुश्कल है देखी कर रोनाया। तुमसें पूरा पड़ेगा नहीं इत्यादि कहिके समर्थ का भी उत्सा हभग कर या धर्मकार्य अनेक करे, खडवचन कहें, जो ए धर्मक्रीया करी, य बड़ी लम्बी पाठ, बहुत कठिन काम है, करेगा सो जानेगा, हमकु वीती है या हमारा मन जाणे है कोई सहाई भी न भया, कोगहीने उठाया नहीं, अन क्या करीयें, हम किमकु कहिके अधिकारी भये तम मन हमकु करणा पड्या ओर क्या कहियें, ए धर्मकाम करते म ए जगकी मिथिल होय गई है, सो अवताइ ठिकाणे नहीं आई नहीं। ए सो वचन कहिके बहुत का चित्त भग करे। इत्यादिक दीनता वचन कहा हा या वचनयोग वीर्याचारतप अतीचार। तथा मनायोगें मीठातो करे या विना उत्साह करे, ए काम की वेठि कर उतरेगा ए काम हाथ न लेत तो भला हाता, नाहक ए काम उठाया वा ए काम कोई आगे तो में छोट टेउ कीमीतरे छुटे तो भला, या काममें महिनत बडी हो यगी, द्रव्य बहुत लगेगा॥ क्या करीयें, विचार्या विना ध्यान फसे। अन फर एमी बातमें पड़ेगे नहीं, वा ए तप क्रियादिक कठिन भई अन फेर उनतर आदरणा इत्यादिक विकल्प करे सो मनोयोग वीर्यतपातिचार कहींयें। इति वीर्याचारके तीन अतीचार स्वरूप। ए सर्व साधु श्रावक धर्मके सब मीला एकसा चावीश ॥१२४॥ अतीचार विवरण कह्या है।

इति श्री सम्यक्त्वमूल द्वादशवारव्रतविवरण समाप्तम् ।
ऐसी विगत माफक दोष मिटायके व्रत पाले सो परम कल्याणमाला वरे ।
इतिश्री पंडित उद्योतसागर गणि विरचितायां बार व्रत टीप सपूर्णा ।

॥ दोहा ॥

शत अठारे ऊपरे, वीते वरष छत्रीश
मगशिर शुदि पंचमि गुरु, पूरण भइ जगीश ॥ १ ॥
सुरसरिताके तट वसे, पाडलिपुर शुभस्थान,
जिहां सुदर्शन साधुवर, पाया केवलज्ञान ॥ २ ॥
ब्रह्मचारि शिर सेहरा, थूलिभद्र गुणधाम
जिन कोश्या प्रतिबूझवी, जिणपुर राख्यु नाम ॥ ३ ॥
तिण पुर मांह शिरोमणि, सोमचन्द अभिधान,
दाता भोक्ता शुभमति, चातुरजन परधान ॥ ४ ॥
तसु सुत भद्रक व्रतरुचि, धर्म द्रव्यनिधान,
हेमचन्द नाम निपुण हाटक सम गुणवान ॥ ५ ॥
धर्मकथा सुणिने सद, व्रतरुचि तब कहे साह,
लिख दीजें व्रतकी विगत विस्तरसें हम चाह ॥ ६ ॥
समकित यु व्रत बारकी, विगत पुनी अतिचार,
वृद्धपरपर शास्त्र बहु, लिखि कीनी विस्तार ॥ ७ ॥
आगमजलधि अपार है, मुझ मति नौका तुच्छ,
को निरह भाड़ा नहीं, पकरे भही पुछ ॥ ८ ॥
आगे बहुश्रुतन लिखे, विगति वात विशेष,
वाल हित भाषा लिखु, उनमें कौन विशेष ॥ ९ ॥
ता भी तसु आसय अगम जो मिन पाय अशुद्ध,
लिखिउ मिच्छा दुक्कड, साखी गुरुजन बुद्ध ॥ १० ॥
अल्पमती अज्ञान हूं, जाणु न बहुत रहस्य,
कृपा करी मोपरि कृती, करजो शुद्ध अवश्य ॥ ११ ॥

विगत न उन नागरी, लिखो यथामति योग,
न भवि निरि अभ्यास करि, करजो तसु परिभोग ॥१२॥
दा त्रस अनन्ता, जो पुग्गल परियट्ट,
साधी पतना पगे जनम मरण मघट्ट ॥ १३ ॥
परमगिपु परता ह, तसु जय करण उपाय
नित्यन मात्र भव लह्यो, तौभी न चलो काय ॥ १४ ॥
अर ना एह तुम बहुरि न आवे हत्थ,
॥ नो ननमें चतुर ! निसुणो श्रुत परमत्थ ॥ १५ ॥
निन गनि सिरामणि, नागरवंदित पाय;
॥ पुण्यभागर सूरिंद्र ने, तपगच्छपति सुखदाय ॥ १६ ॥
तसु पाणा सिर धारता, वारता विषय कषाय,
श्रुतधारी उपगारी वह, श्री ज्ञान सागर उवझाय ॥ १७ ॥
तासु शिष्य पूरव तणा तीरथ भटण काज,
किय प्रयाण शुभ दिन घडी शुद्ध शकुनें सु साज ॥ १८ ॥
तीरथ फरसत आविया, पटणा नयर सुठाय
परमानंद भया वदता, शठ मुनीसर पाय ॥ १९ ॥
दिन केताइक तिहा रहि, लिख्यो सुव्रत विस्तार,
यशोरकीर्णमणियुत परि, वह श्रुतके उपगार ॥ २० ॥
इह विधि जो व्रत धारशे, वारशे विषयकषाय ।
निरुप ज्ञान उद्योतमय, आनन्दघन सुखदाय ॥ २१ ॥

